चन्द्रभान शर्मा

२ मई १९७३ संवत् २०३० शक १८९५

वैशाख कृष्णा ३० अमा बुधवासरे अश्विनी ३ चरणे

दिनमान ३२।।४३ इष्ट ३२।१३ मेषार्के १८४३ वृषलग्न

भारद्वाज गोत्रे श्री पं. छुट्टन लाल तत्पुत्र श्री पं. ब्रह्मानन्द जी

गृहे छुट्टो जात.।

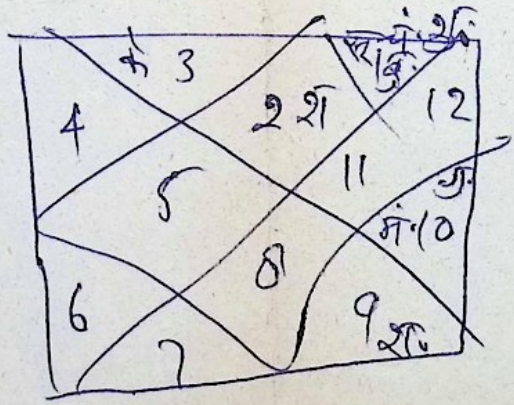

लुकसार
सरनपुर
कादरी

6.45 सायं (6.26)

डा० श्रीमती जानुआ देवी

इन सितम्बर सन् १९७८

दिन - मङ्गलवार प्रातः ९ बजे

संवत् २०३५ शाके १९०१

20-8-1978 संवत् २०३५

लड़की

२० नवम्बर है

समय प्रातः २ बजे

लड़का

संगम पवन बोपदेव

पर मकुवरे है

दादी गायत्री देवी

पिता :- राम प्रकाश शर्मा

माता :- सरोज शर्मा

गोत्र :- भारद्वाज

निवासी :- जगन्नाथ

July
जुलाई

26 Monday
सोमवार

1982

Vikrami 10 Sawan 2039 Saka 4 Sawan 1904
Samvat 6 Sawan Sudi 2039 Hijri 4 Shawal 1402
श्रावण सुदी ६ प्र० १० सं० २०३९

सत्य ही ईश्वर है—गांधी जी

5 अपरना का जन्म दिन है।
पौष कृष्ण पक्ष तृतीया गुरुवार आज जैसे
ही प्रातः के धुंधले / ता० ६ दिसम्बर 1968
का जन्म है

जनार्दन का जन्म तिथि
कृष्ण पक्ष भादो दोज तीज तिथि
दोनों एक थी। सुबह पूर्व जे का जन्म
है दिन इतवार। जन्म का नाम
जिन्हा बताये इस का नाम रखना है।

10 अगस्त 1979

30
17·39·30
13·32·30
12·30
1·02·30

5·25

12·30
5·
12·30
13·32

संवत् २०२८ शक १८९३ ज्येष्ठ शु. १३ रवि
दिनांक २४।।१४ इष्ट ३०।।३९।।३०
६-६-१९७१

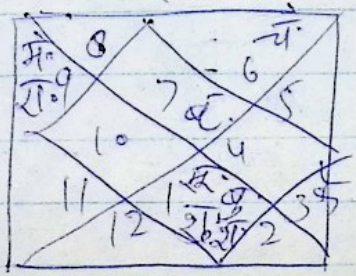

पिण्ड (अंतिम)
५·२५ सायं

12·10·
3·24
8·26
17·5
8·35
1·2
8·30
3·30

8·35
6·50
1·45

सं. २०३० शक १८९५ ज्येष्ठ शु. ४ चंद्र
दिनांक २४।।१० इष्ट ०।।३५
४-६-१९७३

3·26
6·50
10·16
2·30
18
2·48

पिण्ड
कार्तिक कृष्ण अमावस्या
८·३६ प्रातः

3·26
6·50
10·16

सीट

4363287

कालिकाप्रसाद

कालेडारी की जड़
इन्द्रायण की जड़
बेटकटारे ॥
चौकिया सुदाग 50 ग्राम
चूरा घास 50 ग्राम
बथुआ के बीज 50 ग्राम
साईजन की छाल
पुराना गुड़

12.41.40 पोस्टमार्क 1.1.93 [illegible]

श्रीः

ज्योतिषकल्पद्रुम

पवाँरकुलकमलमार्त्तण्ड श्रीमन्महाराज
शंभुसिंहजी सुठालियाधीशकृत

मुद्रक व प्रकाशक—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष—" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-प्रेस,

कल्याण—बम्बई.

संवत् २०१५, सन् १९५८

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार मुद्रणयन्त्रालयाध्यक्षाधीन है ।

पवाँरकुलकमलमार्त्तण्ड श्रीमन्महाराज शंभुसिंहजी सुठालियाधीश

प्रस्तावना

मैंने संवत् १९५८ में "ज्ञानप्रदीप" नामक ग्रन्थ सुबोधिनी भाषाटीका सहित तैयार करके 'श्रीवेङ्कटेश्वर' स्टीम् प्रेस बंबईमें छपवाया था मुझको ऐसा निश्चय नहीं था कि सज्जन गुणीवृन्द उस तुच्छ ग्रन्थकी ऐसी गुणज्ञता करेंगे कि थोड़े ही कालमें सम्पूर्ण भारतवर्षमें उस ग्रन्थका प्रचार हो गया. सज्जनोंकी यह गुणग्राहिता देख मेरे उत्साहकी अत्यन्त वृद्धि हुई है। अतएव अबकी बार मैं "ज्योतिषकल्पद्रुम" नामक ग्रन्थ स्वयं रचकर प्रकाशित करता हूँ जिसके प्रथम भागमें मैंने "जिनेन्द्रमाला" का भाषानुवाद प्रकाशित किया है। यह ग्रन्थ (जिनेन्द्रमाला) आजतक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ है और मूल ग्रन्थ तो अभीतक कहीं देखनेमें ही नहीं आया केवल अँग्रेजी अनुवाद इस ग्रन्थका एन् चिदम्बरम् अय्यर बी. ए. ने सम्पादित करके के. आर. प्रेस २८९ तम्बुचेट्टी स्ट्रीट मद्रासमें छपवाया था, उसी अंग्रेजी भाषाका अनुवाद मैंने सरल हिन्दीभाषामें करके इस ग्रन्थमें प्रकाशित किया है। ज्योतिषशास्त्रके तीन भाग हैं-संहिता, तंत्र और होरा। संहितामें प्राकृतिक ज्योतिषका वर्णन है. जैसे-सुभिक्ष, दुर्भिक्ष, वृष्टि, अतिवृष्टि, अनावृष्टि अग्निभय, राजकीय उपद्रव इत्यादि जो प्राकृतिक हैं; तंत्रमें गणित ज्योतिषका वर्णन है अर्थात् सूर्य्य चन्द्र स्पष्ट करना ग्रहण बनाना इत्यादि बातें जिनका संबन्ध गणितसे हैं और होरामें फलित ज्योतिषका वर्णन अर्थात हरएक प्राणीके जन्मकालके ग्रहोंकी स्थितिपरसे उसके समग्र जीवनका वृत्तान्त समझनेकी रीति लिखी है। प्रश्नशास्त्र होराहीमें सम्मिलित है प्रश्नशास्त्रके बहुतसे ग्रन्थ हैं परन्तु 'ज्ञानप्रदीप' और 'जिनेन्द्रमाला' ये दो ग्रन्थ इस विषयमें

मुख्य हैं, इन ग्रन्थोंका तात्पर्य्य एक ही है और इनकी शैली 'षट्पञ्चाशिका' 'भुवनदीपक आदि ग्रन्थोंसे पृथक् है क्योंकि उन ग्रन्थोंमें केवल प्रकाशक नवग्रहोंका ही विचार है और जिनेन्द्रमाला व ज्ञानप्रदीपमें अप्रकाश ग्रहोंका भी विचार किया गया है ज्योतिषकी स्थितिको केन्द्र मानकर उसके आस पास इन अप्रकाशक ग्रहोंका परिक्रमा देना प्रकाशित किया है " जिनेन्द्रमाला " ग्रन्थमें २४ अध्याय हैं, प्रथम अध्यायमें संज्ञाप्रकरण लिखा गया है और अध्याय २ से ४ तक पृच्छकका विचार मालूम करना बताया है और फिर शेष अध्यायोंमें प्रश्नका उत्तर कहनेकी रीति लिखी है, जैसे–चोरी, रोग, उत्पत्ति, मृत्यु, भोजन, स्वप्न, विवाह, शकुन, शल्य और नद्यागम यात्रा और वृष्टि इत्यादि अनेक उत्तमोत्तम प्रकरण लिखे गये हैं, मनुष्यका ऐसा कोई कार्य्य नहीं हो सकता कि जो इन प्रकरणोंसे अलग हो जिस प्रश्नका वर्णन इन प्रकरणोंमें नहीं आया है उसका उत्तर सामान्य शुभाशुभके प्रकरणमें मिलेगा।

अन्तके अध्यायमें चेष्टा लिखी गई है प्रसिद्ध ज्योतिषी वराहमिहिरने बृहत्संहितामें चेष्टाके विषयमें यह श्लोक लिखा है–

दैवज्ञेन शुभाशुभं दिगुदितस्थानाहतानीक्षता वाच्यं प्रष्टृनिजापरांगघटनां चालोक्य कालं धिया। सर्वज्ञो हि चराचरात्मकतयाऽसौ सर्वदर्शी विभुश्चेष्टाव्याहृतिभिः शुभाशुभफलं संदर्शयत्यर्थिनाम् ॥ १ ॥

अर्थ--ज्योतिषीको चाहिये कि प्रश्नकर्त्ता तथा अन्य पुरुषके अङ्गलक्षण स्थान दिशा हत पदार्थ (उठाई हुई चीज) इत्यादिको

देखकर शुभाशुभ फल कहे क्योंकि सर्वज्ञ चर अचरात्मक सर्वदर्शी सर्वव्यापी परमात्मा शुभाशुभ फलको चेष्टा और शब्दोंद्वारा अर्थोंको सूचित करता है। अंग्रेजी स्कूलका छोटासा विद्यार्थीभी यह बात जानता है कि रोवर्टब्रूसने छः वक्त शत्रुसेनापर चढ़ाई की परन्तु उसका जय एक बार भी न हुआ निदान रोवर्टब्रूस एकांतमें उदास होकर बैठगया उसवक्त उसने क्या देखा कि एक मकड़ी मक्खीको पकड़नेके लिये कई हमला कर चुकी है परन्तु गिर गिर पडती है अन्तमें मकडीने अपने पराजयोंपर हतोत्साह न होकर फिर एक झपट ऐसी मारी कि मक्खीको पकड़कर ऊपर लेगई। बादशाहने यह वृत्तान्त देख अपने चित्तमें विचारा कि मकड़ी कईबार पराजित हुई परन्तु उद्योग करनेसे अंतमें उसकी जीत हुई, इसी तरह मुझको भी उद्योग करना चाहिये निदान बादशाहने फिर चढ़ाई की और इस चढ़ाईसे बादशाहकी जीत हुई मतलब यह है कि, यहां मकडीकी चेष्टासे भावी फल विदित हुआ।

इंग्लिस्तानके बादशाह पहले चार्ल्सको राज्याभिषेकके समयकी पोशाकके लिये बैंगनी मखमलकी आवश्यकता हुई परन्तु उस समय वह मखमल न मिली निदान सबकी यह सलाह हुई कि बादशाहको श्वेत वस्त्र धारण कराकर राज्याभिषेक कराना जो कि उसदेशमें वध्य पशु श्वेत वस्त्रसे ढांककर देवताको चढाया जाता था अतएव यह चेष्टा श्वेत वस्त्रोंकी अशुभ सूचक हुई और उसका परिणाम यह निकला कि बादशाह गादीबैठनेके थोडे ही दिन बाद अपने मन्त्रीवर्गोंके हाथसे मारा गया।

तुर्किस्तानमें अभीतक यह चाल है कि वे लोग विक्षिप्त पुरुषके वचनोंकी बड़ी प्रतिष्ठा करते हैं और उनके मुखसे जो वचन निकलते हैं उनसे अपना शुभाशुभ निरीक्षण करलेते हैं।

एन् चिदम्बरम् अय्यरने अंग्रेजी जिनेन्द्रमालाकी भूमिकामें अपनी स्वानुभवसिद्ध मदरासके ज्योतिषी की एक वार्ता लिखी है वह यह है कि एक प्रसिद्ध ज्योतिषी मदरासमें आकर ठहरा एक दिन प्रातःकाल उक्त ज्योतिषीकी स्त्री दो केले तरकारीके वास्ते लाई ज्योतिषीने उनमेंसे एक केलेको काटा और पाकगृहमें भेजदिया. इतनेमें एक पुरुष ज्योतिषीके पास आया और कहने लगा कि आप कृपाकर मेरे मनकी चिन्ता बतावें. ज्योतिषीने उस समयकी चेष्टा और चर्य्याको विचारकर कहा कि तुम्हारे दो पुत्र हैं जिनमें से एक खोगया है। तदुपरांत ज्योतिषीने पाकगृहमें केलेका वृत्तान्त पूंछा तो मालूम हुआ कि उस केलेको लवण डालकर पकालिया है फिर ज्योतिषी वापिस पृच्छकके पास आया और कहने लगा कि तुम्हारे खोये हुए पुत्रको चोरोंने जेवर निकालकर मारडाला है और खारे समुद्रके पास वह गाडागया है निदान खोज करनेसे मालूम हुआ कि ज्योतिषीकी भविष्य वाणी सब सत्य निकली संस्कृतके प्राचीन पुस्तकोंमें लिखा है कि रावणके नाना सुमालीने अपनी पुत्री कैकशीको पुत्र माँगनेके लिये विश्रवस ऋषिके पास भेजी वहांपर स्त्री जाकर बहुत देरतक खडी रही कि संध्या हो गई तब ऋषिकी समाधि खुली तो क्या देखा कि: कैकशी अपने पावोंके नखोंसे पृथ्वी खोदरही है इस चेष्टाको विचार कर ऋषिने यह उत्तर दिया कि तेरे एक रावण नामका राक्षस पुत्र होगा जिसके १० मस्तक होंगे. फिर दूसरीबार कैकशी उक्त ऋषिके पास पुत्रकी याचनाके लिये गई और वहां जाकर सोगई जब ऋषिकी समाधि खुली तो उस चेष्टाको विचारकर ऋषिने कहा कि अबके तेरे पुत्र छः महीनेकी नींद सोनेवाला कुंभकर्ण होगा फिर तीसरी बार बार कैकशी ऋषिके पास पुत्रका वरदान मांगने गई और प्रश्न करते वक्त सावधान चित्तसे रही तो ऋषिने विभीषणके होनेका वरदान दिया, इसीतरह महाभारतमें लिखा है कि पाण्डु, धृतराष्ट्र और विदुर इन्होंकी माताके गर्भ

रहते समय चेष्टासे ही इन्होंके पिताने प्रत्येक पुत्रके भावी लक्षण कहदियेथे परन्तु चेष्टासे फलित कहना सहज बात नहीं है. एक समय इन्द्रने बृहस्पति और शुक्रको मृत्युलोकमें भेजा वहां इन दोनोंने ज्योतिषीका भेष धारण किया और किसी पुरुषके द्वारपर जा बैठे वहां इन्होंने क्या देखा कि एक स्त्री पानी भरनेके लिये मयडोल और रस्सीके बाहर निकली और कुवेंपर जाकर वापिस हाथमें रस्सीका टुकडा लिये हुए घरको आई और इन ज्योतिषियोंसे पूछा कि, मेरा पुत्र बनारस गया है वापिस कब लौटेगा? ज्योतिषियोंने उस स्त्रीसे टूटी हुई रस्सीका ब्योरा पूछा तो स्त्रीने जबाव दिया कि पानी भरतेमें रस्सी टूट गई है जिससे डोल जा पडा यह सुनकर बृहस्पतिने उत्तर दिया कि तुम्हारा पुत्र गंगामें डूब गया है यह सुनकर स्त्री विलाप करने लगी, तब शुक्रने स्त्रीका समाधान किया और कहा कि तुम्हारा पुत्र दो घण्टे बाद वापिस लौटकर आता है और ऐसा ही हुआ कि पुत्र बनारससे आगया. शुक्रने इस चेष्टाका अर्थ बृहस्पतिको इसतरह समझाया कि जलके रहनेका स्थान कुँवा है वहांसे जल डोलमें प्राप्त होकर कूपसे जुदा हुआ था परन्तु रस्सीके टूटनेसे डोल कूवेमें जा पडा और पानी अपने स्थानमें जा मिला इससे यह अर्थ सिद्ध हुआ कि पुत्र जो अपने घरसे निकलकर बाहर गया है वह थोडे ही कालमें अपने घर आजावेगा जैसे कि डोलका जल पीछा अपने रहनेके स्थानमें जा पहुँचा। अंग्रेजीमें एक कहावत है वह बहुत सत्य है–" Coming events cast their shadows before " अर्थात् होनेवाली घटनाका प्रतिबिंब पूर्वसे विदित होता है।

इस ग्रंथके दूसरे भागमें मैंने " स्वानुभूत योगायोग " लिखे हैं और बहुतसे ज्योतिषके योग नवीन रचना किये हैं जो अनुभवलब्ध होनेसे बहुत सत्य हैं और किसी ज्योतिषके ग्रंथमें न निकलेंगे

और ग्रन्थके अंतमें प्रश्नोत्तररूपसे " सिद्धान्तप्रकरण " लिखा है। जो महाशय इस तुच्छ ग्रंथको एकबार भी आद्योपान्त पढलेंगे उनका मैं कृतज्ञ होऊँगा और उन्होंके इस कार्यसे अपने सम्पूर्ण परिश्रमोंको सुफल समझूंगा. किं बहुना बुद्धिमत्सु ।

सज्जनोंका कृपाभिलाषी—
ता०९जून सन् १९०४ई० } महाराजा शम्भुसिंह सुठालियाधीश,
स्थान—सुठालिया, (मध्यभारत)

श्रीगणेशाय नमः

ज्योतिषकल्पद्रुम-विषयानुक्रमणिका

विषय.	पृष्ठ.
प्रथमभाग ।	
जिनेन्द्रमाला-उपोद्घात	१
संज्ञातन्त्र	२
आरूढचक्र	१४
साठघटीमें २४चक्र होनेका कारण	१५
ग्रहोंके चक्र	१६
धातुकाण्ड	२०
मूलप्रकरणम्	२४
जीवप्रकरणम्	२६
नष्टमुष्टि तथा चिन्ताप्रकरणम्	३०
शुभाशुभप्रकरणम्	३६
रोगप्रकरणम्	४०
मृत्युप्रकरणम्	४४
भोजनप्रकरणम्	४६
स्वप्नप्रकरणम्	४८
शकुनप्रकरणम्	५०
विवाहप्रकरणम्	५२
दम्पतिप्रीतिप्रकरणम्	५४
सन्तानोत्पत्तिप्रकरणम्	५६
क्षुरिकाप्रकरणम्	६४
शल्यप्रकरणम्	६५
सूर्य्योदयात् इष्ट घ० २५ पर शल्य ज्ञानार्थ नक्षत्र चक्रम्	६८
कूपखातनिर्णयः	७१
शत्रुआगमनम्	७५
यात्राप्रकरणम्	८०
नद्यागमः अर्थात् नदीका चढना	८३
वृष्टिप्रकरणम्	,,
अर्घप्रकरणम्	८४
नौकाप्रकरणम्	८५
चेष्टाप्रकरणम्	८६
जातिज्ञानप्रकार	८७
इति प्रथमभाग समाप्त ।	
द्वितीयभाग ।	
स्वानुभूतज्योतिष प्रारम्भ	९७
उपासनाविषय	१००
स्थूलमतसे आयुष्मान्	,,
अङ्गविचारकोष्ठक	१०१
शरीर देखकर ग्रह बतानेकी रीति	१०३
राशिलक्षण	१०५
भावविचार	१०६
ग्रहोंकी शुभाशुभ अवधिज्ञान	१०७
मूकप्रश्न तथा मानसचिन्ता वाहन पुष्पादिप्रकार	,,
पुष्पचिन्ता	,,
द्वादशराशिओंके तत्त्वज्ञान	१०९

विषय.	पृष्ठ.
सूत्र	१०९
व्यभिचारयोगः	१११
निस्सन्तानयोगः	११२
अन्धयोगः	११३
गोचरफलम्	,,
मतभेदः	,,
अन्धयोगः	११४
पतनयोगः	,,
चोरप्रकरणम्	११५
सभाचोर बतलानेकी तरकीब	११७
संक्षिप्त ताजकफलम्	,,
जन्मपत्रकी दक्षिणाके जाननेका प्रकार	१२०
दूसरा प्रकार	,,
जलघटिस्थापनविधिः	१२२
छायासे इष्ट जाननेका प्रकार	,,
इष्टकालपरसे पादछाया जाननेका प्रकार	१२४
निषेककुण्डलीनिर्माणप्रकार	१२५
कुण्डलीचक्राणि	१२६
हजरत ईसामसीह इंग्लिशधर्म-संस्थापककी कुण्डली	,,
कंसराजाकी कुंडली	१२७
सप्तम एडवर्डकी कुंडली	,,
वर्त्तमान चीनकी महारानीकी कुंडली	१२८
दूसरे शाहनशाह रूसकी कुं०	१२८
वर्त्तमान शाहनशाह आस्ट्रीयाकी कुण्डली	,,
वर्त्तमानफ्रान्स नरेशकी कुंडली	,,
दूसरे ओस्कर बहादुर वर्त्तमान नोरवेकी कुंडली	१२९
दूसरेविलियम वर्त्तमान जर्मनी की कुंडली	,,
वर्त्तमान शाहईस्पेनकी कुंडली	,,
वर्त्तमान शाहईरानकी कुंडली	,,
तीसरे वर्त्तमानशाह इटेलीकीकुं०	१३०
वर्त्तमान सुलतान रूमकी कुं०	,,
वर्त्तमान शाहनशाहजापानकीकुं०	,,
श्रीमन्त वर्त्तमानश्यामनरेशकीकुं०	,,
वर्त्तमान बेलिजियम नरेशकी कुं०	१३१
वर्त्तमान पोर्तुगाल नरेशकी कुं०	,,
दूसरे वर्त्तमान मिशरनरेशकी कुं०	,,
वर्त्तमान शाहनशाह यूनानकीकुं०	,,
वर्त्तमान नैपालनरेशकी कुण्डली	१३२
एलेकजेन्डर वर्त्तमान शाहसर-लियाकी कुंडली	,,
निजाम हैदराबाद दक्षिण नरे-शकी कुंडली	,,
वर्त्तमान गवालियरनरेशकी कुं०	,,
वर्त्तमान जैपुरनरेशकी कुंडली	१३३
श्रीशिवाजी राव हुल्कर बहादुर इन्दौरकी कुण्डली	,,

विषय.	पृष्ठ.
वर्त्तमान जोधपुरनरेशकी कुंडली	१३३
वर्त्तमान कोटानरेशकी कुण्डली	,,
वर्त्तमान ईडरनरेशकी कुंडली	१३४
वर्त्तमान टोंकनरेशकी कुंडली	,,
वर्त्तमान राजगढ नरेशको कु०	,,
बम्बई "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष सेठ खेमराजजीकी कुण्डली।	१३५
श्रीशिवानन्दजी साहब बहादुर वैकुण्ठवासी सुठालियानरेशकी कुण्डली	,,
श्रीमहाराजासाहब श्रीमाधोसिंहजी साहब बहादुर वैकुंठवासी सुठालियानरेशकी कुंडली	१३६
वर्त्तमान सुठालियाधीशको कुं०	,,
श्रीमती श्रीमहारानी विक्टोरियाकी कुण्डली	१३७
मतान्तर जन्मकुण्डली	१३८
आलेकजेण्डर भूतपूर्व शाहनशाह जाररूसकी कुण्डली	,,
हिज हाइनेस श्रीमती नव्वाब शाहजहां बेगमसाहबा भूपाल की कुंडली	१३९
भूतपूर्व राजगढनरेशकी कुण्डली	,,
भूतपूर्व जेसलमेरनरेशकी कुं०	१४०
वर्तमान राज्यच्युत राघोगढ नरेशंकी कुण्डली	१४०
कविराजा–मुरारदानजी मेम्बर कौन्सिल जोधपुरकी कुं०	१४१
पं सुखदेवप्रसादजी सेक्रेटरी मुसाहिबआला जोधपुरकी कुण्डली	,,
वर्त्तमान वली अहदराज जोधपुरकी कुण्डली	,,
श्रीबाबू हरिश्चन्द्रजी काशी स्वर्गवासीकी कुंडली	,,
सुप्रसिद्ध पण्डित भीमसेन शर्मा इटावा निवासीकी कुण्डली	१४२
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्प्रेसके मालिक सेठ खेमराजजीके ज्येष्ठपुत्र श्रीरङ्गनाथजीकी कुंडली	,,
उक्तसेठजीके कनिष्ठ (छोटा भ्राता होनेके कारण मध्यम) पुत्र श्रीनिवासजीकी कुण्डली	१४३
स्वानुभूत अमुक जन्म कुंडली२	,,
इति कुंडलीचक्र प्रकरणम्	
मौजूद पंचाङ्गसे आगेके पञ्चाङ्ग बनानेकी विधि	१४४
उदाहरण	,,
यन्त्र बनानेकी विधि	१४५
उदाहरण	१४६

विषय	पृष्ठ,
यजमानके प्रति किसी ज्योतिषीका आशीर्वाद	१४६
उदाहरण	,,
संक्षिप्त सम्वत्फलम्	१४७
संक्षिप्तसिद्धान्तप्रकरणम्	,,
उदाहरण	१४८
दूसरा उदाहरण	१४९
तीसरा उदाहरण	,,
शिष्यगुरुप्रश्नोत्तर	१५०
शनिचारफलम्	१५६
मेषस्थशनिफलम्	,,
वृषराशिस्थशनिफलम्	१५७
मिथुनराशिस्थशनिफलम्	,,
कर्कराशिस्थशनिफलम्	,,
सिंहस्थशनिफलम्	,,
कन्यास्थशनिफलम्	,,
तुलास्थशनिफलम्	१५८
वृश्चिकस्थशनिफलम्	,,
धनस्थशनिफलम्	,,
मकरस्थशनिफलम्	,,
कुम्भस्थशनिफलम्	,,
मीनस्थशनिफलम्	१५९
दुर्भिक्षयोगाः	१५९
वृष्टियोगाः	१६५
परिशिष्टप्रकरणम्	१६९
जन्मकुंडलीमें देखनेके योग	१७०

इति द्वितीयभाग ।

तृतीयभाग ।

सिद्धान्तप्रकरणम् ।

विषय	पृष्ठ,
ग्रहोंका नक्शा	१९०
अक्षांश जाननेकी रीति	१९१
देशांशजाननेकी रीति	१९२
परिधि जाननेका प्रकार	,,
विषुवत्रेखाका वर्णन	१९५
विमण्डल वृत्तका वर्णन	,,
उन्मण्डलका वर्णन	,,
याम्योत्तरवृत्तका वर्णन	,,
क्रांतिवृत्तका वर्णन	,,
भूपृष्ठकी स्वाभाविक रचना	१९८
शङ्का	२००
समाधान	२०१
प्रश्नोत्तर	२०३
ग्रन्थसमाप्ति	२०४
सुठालियाराज्यकी सिविललिस्ट	२०५

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता

॥ श्रीः ॥

ज्योतिषकल्पद्रुम

मङ्गलाचरण

श्रीशंभुसिंहनृपतिर्माधवसूनुः पवांरकुलजन्मा ॥ नत्वा शिवदानानां मालवदेशः सुठालियाधीशः ॥१॥ नत्वा गणेशं वाणीं च श्रीगुरुं स्वेष्टदेवताम् ॥ ज्योतिः कल्पद्रुमं कुर्वे ज्योतिस्तत्त्वप्रकाशकम् ॥२॥ ज्योतिः-पयोनिधिमगाधमपारपारं यस्मिन्निमज्जति महानिति मन्दरोऽपि । अल्पोऽल्पबुद्धिगुरुपादसमाश्रयोऽहं गोपादतुल्यमतरं हि तमश्रमेण ॥ ३ ॥ ज्योतिःशास्त्रं सुदुर्बोधं सुतरां देवभाषया ॥ ज्ञात्वैवं सर्वसुज्ञेयं भाषया विवृणोम्यहम् ॥ ४ ॥

आरंभे श्रीशब्दो मङ्गलार्थः ॥ मालवः देशो यस्येति विग्रहः ॥ १ ॥

यहां श्लोकमें जो श्रीशब्द मेरे नामके पूर्व आया है। यह आत्मस्तुतिका प्रकाश नहीं है, प्रत्युत प्राचीन शास्त्रानुसार हर एक ग्रन्थके आरम्भमें मंगलकी श्रीआदि शब्द आना चाहिये इसलिये यहां यह श्रीशब्द मङ्गलार्थ लिखा गया है।

अर्थ—मैं शम्भुसिंह नृप माधवसिंहका पुत्र तथा शिव दानसिंहका पौत्र मालवदेशीय सुठालियाका अधिपति ॥ १ ॥

गणेश सरस्वती श्रीगुरु और इष्टदेवताको नमस्कार करके ज्योतिषतत्त्वको बतलानेवाले इस ज्योतिःकल्पद्रुम नामक ग्रन्थको प्रकाशित करता हूं ॥ २ ॥

यह ज्योतिषशास्त्र समुद्रके तुल्य ऐसा अगाध और अपार है कि जिसमें बड़ा अभिमानी मन्दराचल पर्वतभी डूबता है; परन्तु मैं अल्पबुद्धि श्रीगुरुके चरणोंके आश्रयसे गोपादके तुल्य विना ही परिश्रम इसके पारंगत हो गया ॥ ३ ॥

प्रथम तो ज्योतिषशास्त्र स्वयं भी समझनेमें कठिन है, फिर संस्कृत भाषामें होनेसे और भी कठिन हो गया है। इस लिये सब लोगोंकी समझमें सहज ही आजानेके वास्ते नागरी भाषामें इस ग्रन्थको प्रकाशित करता हूं ॥ ४ ॥

श्रीगणेशाय नमः

ज्योतिषकल्पद्रुम

अर्थात्

जिनेन्द्रमाला

उपोद्घात

(१) श्रीअनुकम्पाशील परमेश्वरको नमस्कार है जिनका महत्त्व त्रैलोक्य तथा जन्ममरणरहित देवर्षियोंके कथन कल्पनासे परे है और जो सम्पूर्ण चराचरपर अनुग्रह तथा वात्सल्य रखनेवाला है ।

(२) मैं इस अलौलिक विद्याको सुप्रसिद्ध दैवज्ञों तथा त्रिकालज्ञोंकी पूर्ण कृपा सहायतापर निर्भर छोड़कर इस ग्रन्थको लिखना प्रारंभ करता हूं ।

(३) इस ग्रन्थका नाम जिनेन्द्रमाला मैंने रक्खा है और भूत भविष्य वर्तमान तथा मनुष्यके जीवनके शुभाशुभ फल निरीक्षणार्थ कई क्रिया विधि उसमें लिखी हैं ।

(४ से ६) आरूढ़ छत्र उदय लग्न त्रिकोण केन्द्र दृष्टिक्षेत्र बलाबल दिशा नरनारी सम विषम जाति रंग चरण आकृति श्रृंग परिमाण अवस्था स्वाद समीप दूर तिल लांछन गमन शीघ्रगति मन्दगति चर स्थिर द्विस्वभाव प्रकाश दिन रात्री पार्श्व आश्रय स्थान ग्रह राशियोंके काल इन सबको विचार करके भविष्य कहता है वह दैवज्ञ कहाजाता है ।

टिप्पणी—सम्पूर्ण दिशामंडलके ज्योतिषियोंने बारे भाग किये हैं जिन्होंके नाम राशियां हैं वृष सिंह वृश्चिक कुंभ ये पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तरकी राशियां

हैं, मीन मेष ईशान कोणमें हैं,मिथुन कर्क आग्नेयमें,कन्या तुला नैर्ऋत्यमें और धन मकर वायव्यमें हैं पहिले अध्यायका८१वां श्लोक देखो ज्योतिषीसे जिस दिशाको पृच्छक बैठाहो उस दिशामें जो लग्न है उसका नाम आरूढ़ है, यह लग्न बडी सावधानीके साथ याद रखना चाहिये क्योंकि इस ग्रंथमें इसी लग्नके आधारपर सम्पूर्ण भविष्य कथन किया है इन बारे राशियोंपर ग्रहोंकी स्थिति गति जाननेके लिये पहिले अध्यायका ८६ वां श्लोक देखो छत्रलग्न जाननेके लिये पहिले अध्यायका दूसरा श्लोक देखो उदय लग्न उसका नाम है, जिसका दिशामंडलमें उदय हुआ हो दृष्टि ग्रहोंकी तथा राशियोंकी दोनोंकी कही जा सकती है ग्रहोंके स्थान पांच हैं स्वक्षेत्र, मित्रक्षेत्र, शत्रुक्षेत्र, उच्चक्षेत्र, नीचक्षेत्र, प्रथम अध्यायका २४–१६–१७–२०–२१–२३–श्लोक देखो ।

(७ से ९) इस ग्रन्थमें मैं इन विषयोंके प्रश्नका भविष्य कथन करूंगा धातु मूल, जीव, नष्ट, मुष्टि, शुभाशुभचिंतना, रोग, मृत्यु, भोजन, स्वप्न, शकुन, विवाह, प्रीति, सन्तानोत्पत्ति, आयुधशल्य, झिरन, सेनाआगमन, नद्यागम, यात्रा, वृष्टि, महर्घ, समर्घ, नौकागम, चेष्टा ।

इती श्रीपवांरवंशावतंसश्रीमहाराज शंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रन्थे उपोद्घातकाण्डं समाप्तम् ।

अध्याय पहिला १.

अथ संज्ञातन्त्रं प्रारभ्यते

(जब सूर्य वृष मिथुन कर्क सिंहपर रहें तो सूर्य्यकी मेषवीथी होतीहै और वृश्चिक धन मकर कुंभसे मिथुनवीथी तथा मेष कन्या तुला मीनसे वृषवीथी जानना ।

टिप्पणी–क्रान्तिमंडलके मध्यवर्ति स्थानको मेष वृष मिथुन राशियोंमें विभक्त किया है मेषके प्रथमाग्र भागको कर्कायनका प्रतिरूप कल्पित किया है और मिथुनके अंतिम भागको मकर क्रान्तिका प्रतिरूप नियत किया है है जब सूर्य दक्षिणायन होते हैं तब कर्क क्रान्तिका परित्याग करते हैं ये

१४ जौलाई मुताबिक कर्क संक्रांति प्रथम तिथिको होता है न कि सायन गणितसे जो २१ जूनको होता है इस हिसाबसे कर्क सिंह संक्रान्तिमें सूर्यको अनुप्रस्थ मेष राशिका कहना चाहिये इसी तरह कन्या तुलामें वृषके और वृश्चिक धनमें मिथुनके सूर्य कहना चाहिये यहांतक उत्तरायणका हिसाब कहा; अब दक्षिणायनका सुनिये कि, मकर कुंभ संक्रान्तिमें सूर्यका मिथुन मार्ग और मीन मेषमें वृषमार्ग तथा वृष मिथुन संक्रान्तिमें सूर्यका मेषमार्ग समझना चाहिये। फल कहनेके पहिले ज्योतिषी कुंडलीको खैंचे और इन चार बातोंको विचार करे प्रथम स्थिति उस समयके ग्रहोंकी जो दिङ्मण्डलके चारों ओर नियत क्रमसे फिरते हैं (अध्याय १ श्लोक ८३ देखो) दूसरे आरूढ अर्थात् पृच्छकदिशा वर्ती लग्नको देखे तीसरे छत्रलग्नको और चौथे उदयलग्नको देखे।

(१) अथ छत्रलग्नम् । आरूढसे सूर्यवीथी तक गिने जितनी गिनती आवै उतनी ही संख्या तात्कालिक उदय लग्नसे गिने जिस राशि-पर गणना पूरी होय उसीको छत्रलग्न कहना चाहिये, यह लग्न आरूढ लग्नको ढांकता है इसीसे इसका नाम छत्रलग्न है।

टिप्पणी-उदाहरण जैसे, किसीने सन् १८८६ ता० ९ अगस्त सोमवार इष्ट घ० ७।३० पर प्रश्न किया उस दिन कर्कके २.६ अंश गये थे अब मानलो कि, पृच्छक ज्योतिषीसे दक्षिण दिशाको बैठा तो इस हिसाबसे आरूढलग्न सिंह स्पष्ट रूपसे हुआ और तात्कालिक कन्यालग्नका चतुर्थभाग व्यतीत हुआ यहां सूर्यवीथी मेष हुआ अब आरूढ लग्न सिंहसे सूर्यवीथीतक नौ राशी हैं अतः उदय लग्न कन्यासे नवीं राशि वृष हुई तो यह आरूढलग्न सिंहका आच्छादक हुआ इसलिये वृषराशि सिंहकी छत्र हुई।

(३) आरूढसे सूर्यवीथीतक गिनना जितनी संख्या आवे उसकी अर्द्ध संख्या उदयलग्नसे गिनलेना जहां गणना पूरी होय वही राशि छत्र है।

टिप्पणी–इस नियमके अनुसार उदयलग्न कन्यासे पाँचवी राशि मकर हुई यह भी छत्र कही जासकती है ।

(४ से ५) श्लोक उदयलग्न मेषका वृष छत्र है वृषका मिथुन छत्र है कर्कसिंहका मेष छत्र है कन्या तुलाका छत्र वृष है वृश्चिक धन मकर कुंभका मिथुन छत्र है और मीनका वृष छत्र है ।

टिप्पणी–इस श्लोकमें उदय लग्नका छत्र वर्णन किया है परंतु सूर्यवीथीसे पृथक् कोई छत्र नहीं होसकता अलबत्ता आरूढ और सूर्यवीथी जहां एकही राशिमें हो तो उस समय इस श्लोकके अनुसार आरूढका छत्रलग्न निकालना चाहिये ।

(६) मिथुन सिंह कन्या तुला वृश्चिक कुंभ ये शीर्षोदय हैं. मेष कर्क धन मकर ये पृष्ठोदय हैं और मीन शीर्षपृष्ठोदय हैं ।

(७) बुध गुरु शुक्र राहु ये शीर्षोदय हैं, सूर्य मंगल शनि ये पृष्ठोदय हैं और चंद्रमा केतु शीर्षपृष्ठोदय है ।

(८) शिरोदय राशियां और ग्रह दिनको जागते रहते हैं और पृष्ठोदय राशि तथा ग्रह रात्रिमें जागते रहते हैं और शीर्षपृष्ठोदय राशि व ग्रह दिन रात्रि दोनोंमें जागते रहते हैं ।

(९) द्विपद राशियां मनुष्यवत् सरल देखती हैं और चतुष्पद राशियां पशुवत् तिरछी देखती है तथा पक्षी राशियां ऊपरको देखती हैं और बहुपद राशियां नीचे सरीसृपके अनुसार देखती हैं ।

टिप्पणी–इन द्विपद चतुष्पद राशियोंका वर्णन १ अध्यायके ४८ वें श्लोकमें है ।

(१०) चन्द्रमा गुरु सरल देखते हैं मंगल तिरछा देखता है सूर्य ऊपर देखता है बुध शुक्र नीचे देखते हैं शनि राहु वक्र देखते हैं ।

(११) राशियां और ग्रह प्रथम स्थानको और सप्तमस्थानको पूर्ण देखते हैं चौथे दशवेंको त्रिपाद दृष्टि नवम पंचमको द्विपाद दृष्टि तृतीय एकादशको एकपाद दृष्टि तथा अष्टम घरको अर्द्धपाद दृष्टिसे देखते हैं।

(१२–१३) सूर्यका मित्र गुरु है चन्द्रके मित्र बुध गुरु हैं मंगलके बुध शुक्र, बुधके चन्द्र मंगल गुरु शुक्र शनि हैं गुरुके सूर्य चन्द्र बुध शुक्र हैं शुक्रके मंगल बुध गुरु शनि और शनिके बुध गुरु शुक्र मित्र हैं।

(१४–१५) सूर्यकी मित्र धन मीन राशि हैं चन्द्रकी मिथुन कन्या धन मीन, मंगलकी वृष मिथुन कन्या तुला, बुधकी मेष वृष कर्क तुला वृश्चिक धन मकर कुंभ, गुरुकी वृष मिथुन सिंह कन्या तुला कुंभ, शुक्रकी मेष मिथुन वृश्चिक धन मकर कुंभ और शनिकी वृष मिथुन कन्या धन मीन राशियां मित्र हैं।

(१६) सिंहका स्वामी सूर्य, कर्कका चन्द्र, मिथुन कन्याका बुध, धन मीनका गुरु, वृष तुलाका शुक्र, मकर कुंभका शनि स्वामी है।

(१७) मेष राशि सूर्यका उच्चस्थान है, वृष चन्द्रका, मिथुन परिवेषका, कर्क गुरुका, सिंह धूमका, कन्या बुधका, तुला शनिका, वृश्चिक राहुका, धनु इन्द्रधनुषका, मकर मंगलका, कुंभ सूक्ष्मका, मीन शुक्रका उच्च स्थान है।

(१८) सूर्य मेषके १० अंशतक उच्चका रहता है, चन्द्र ३ अंश गुरु ५ अंश, बुध १५ अंश, शनि २० अंश, मंगल २८ अंश, शुक्र २० अंशतक पूर्वोक्त राशियोंमें उच्चके ये सम्पूर्ण ग्रह रहते हैं।

(१९--२०) सूर्यके शत्रु चन्द्र मंगल बुध, शुक्र शनि हैं चन्द्रके सूर्य मंगल शुक्र शनि, मंगलके सूर्य चन्द्र गुरु शनि, बुधका सूर्य, गुरुका

मंगल शनि, शुक्रका सूर्य चन्द्र, शनिके सूर्य चन्द्र मंगल शत्रुग्रहोंकी राशियां भी बहुतसे ग्रहोंकी शत्रु हैं।

(२१-२२) सूर्यकी नीच राशि तुला है, चन्द्रकी वृश्चिक, मंगलकी कर्क, बुधकी मीन, गुरुकी मकर, शुक्रकी कन्या, शनिकी मेष, इन्द्र धनुष की मिथुन, धूमकी कुंभ, परिवेषकी धनु और सूक्ष्मकी सिंह नीच राशि है।

(२३) मिथुन कन्या तुला धनु मकर मीन ये राशियां राहुकी मित्र हैं, कुंभ उसका स्वक्षेत्र है, वृश्चिक उसकी उच्चराशि और वृष उसकी नीच-राशि है, मेष कर्क सिंह ये राशियां राहुकी शत्रु हैं।

(२४) तत्काल लग्न और नवम पंचम घरमें त्रिकोण स्थान कहे जाते हैं।

(२५-२६) लग्न चतुर्थ सप्तम दशम स्थानकी केन्द्रसंज्ञा है, प्रथम स्थानका उदय केन्द्र चतुर्थका जलकेन्द्र सप्तमका अस्तकेन्द्र दशमका वियत्केन्द्र नाम है।

(२७) शिरोदय राशियां और ग्रह दिनको बली रहते हैं, पृष्ठोदय राशियां और ग्रह रात्रिको बली रहते हैं और शिरपृष्ठोदयराशियां तथा ग्रह दिन रात दोनोंमें बली रहते हैं।

(२८) सूर्य चन्द्र बुध शुक्र सातवें घर पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं मंगल चतुर्थाष्टम शनि तृतीय दशम गुरु नवम पंचम और राहु तीसरे ग्यारहवें घरको पूर्णदृष्टिसे देखते हैं।

(२९-३०) उच्चराशिस्थ ग्रहमें अपने प्राकृतिक बलसे दशगुणा बल होता है स्वक्षेत्री ग्रहमें द्विगुण बल मित्रक्षेत्री ग्रहमें प्राकृतिक बल और शत्रुक्षेत्रीमें अर्द्धबल तथा नीचराशिस्थ ग्रहमें चतुर्थांश बल रहता है।

टिप्पणी—भाष्यकार लिखते हैं कि चर राशियोंमें प्राकृतिक बल यथास्थित रहता है स्थिर राशियोंमें द्विगुण और द्विस्वभाव राशियोंमें त्रिगुण बल होता है।

(३१) द्विपद राशियां लग्नमें बलवान् हैं चतुष्पद दशम गृहमें बहुपद सप्तम गृहमें और पक्षी राशि चतुर्थ गृहमें बलवान् होती हैं।

टिप्पणी–इन राशियोंकी संज्ञा जाननेके लिये पहले अध्यायका ४८ श्लोक देखो।

(३२ बुध गुरु लग्नमें बलवान् होतेहैं चन्द्र शुक्र चतुर्थ घरमें, शनि राहु सप्तम घरमें और सूर्य मङ्गल दशम घरमें बलवान् होते हैं।

टिप्पणी–भाष्यकार शुक्रको लग्नमें और शनिको दशम घरमें भी बलवान् होना लिखते हैं॥

(३३) यदि उदयलग्नमें किसी ग्रहको केन्द्रबल न प्राप्त हुआ हो तो आरूढ कुंडलीमें देखना यदि उसमें भी न हो तो छत्रकुण्डलीसे केन्द्र बल लेना यदि उसमें भी न हो तो गुरुस्थित राशिको लग्न मानकर केन्द्र बल देखना यदि इसमें भी न हो तो बुधाक्रांत राशिका लग्न मानना यदि उसमें भी न हो तो उदयलग्नका स्वामी जिस राशिपर बैठा है उसको लग्न मानकर ग्रहोंका केन्द्रबल देखना।

टिप्पणी–प्रश्नोंके उत्तर देनेमें सबमें बलवान् राशियां और यह फल देते हैं ऐसा याद रखना।

(३४–३५) बुध मंगल शनि गुरु शुक्र चन्द्र सूर्य्य राहु इनमें प्रत्येक ग्रह उत्तरोत्तर बलवान् हैं जैसे बुधसे मंगल बली और बुध व मङ्गलसे शनि बली है इसतरह सब समझना।

(३६) मेषकी पूर्व दिशा है, सिंह धनकी आग्नेय कोण, वृषकी दक्षिण दिशा, कन्या मकरकी नैर्ऋत्यकोण, मिथुनकी पश्चिम दिशा, तुला कुम्भकी वायव्य कोण, कर्ककी उत्तरदिशा, वृश्चिक व मीनकी ईशान कोण है।

(३७) सूर्य शुक्र मंगल राहु शनि चन्द्र बुध गुरु क्रमानुसार पूर्व आग्नेय दक्षिण नैर्ऋत्य पश्चिम वायव्य उत्तर ईशानके स्वामी हैं।

(३८) मेष मिथुन सिंह तुला धन कुंभ ये राशियां पुरुष है और शेष स्त्री हैं।

(३९) सूर्य मङ्गल गुरु ये ग्रह पुरुष हैं चंद्र शुक्र राहु स्त्रियां हैं बुध शनि केतु नपुंसक ग्रह हैं।

(४०) मेष सिंह एकाकी पुरुष राशियां हैं, मिथुन तुला धन कुंभ युग्म पुरुष राशियां हैं, वृष कर्क कन्या वृश्चिक एकाकी स्त्री राशियां हैं, मकर मीन युग्म स्त्री राशियां हैं।

(४१) सूर्य मङ्गल एकाकी हैं, गुरु युग्म ग्रह हैं, चन्द्र एकाकी, शुक्र राहु युग्म, बुध शनि केतु ये तीनों युग्म ग्रह हैं।

(४२) धन मीन ब्राह्मण हैं मेष सिंह क्षत्रिय हैं कर्क वृश्चिक वैश्य हैं मिथुन तुला कुम्भ शूद्र हैं वृष कन्या मकर म्लेच्छ हैं।

(४३-४४) चन्द्र गुरु ब्राह्मण हैं सूर्य मङ्गल क्षत्रिय बुध वैश्य है शुक्र शूद्र है शनि राहु म्लेच्छ हैं।

(४५) मेष सिंह धन लाल हैं वृष कर्क तुला श्वेत हैं वृश्चिक कुंभ मीन हरी हैं मिथुन कन्या मकर काली हैं।

(४६) गुरुका रंग स्वर्ण सरीखा है सूर्य मङ्गल केतु लाल हैं चन्द्र शुक्र श्वेत हैं बुध हरा है और शनि राहु काले हैं।

(४७) गुरुका रंग स्वर्णका सूर्यका अग्निसरीखा मङ्गलका लाल रुधिरतुल्य, चन्द्रमाका कांचसरीखा, शुक्रका दूध सरीखा, बुधका हरा शनि राहु काले हैं॥

(४८) मिथुन कन्या तुला कुम्भ द्विपद राशियां हैं मेष वृष सिंह धनु चतुष्पद हैं मकर मीन पक्षी राशियां हैं कर्क वृश्चिक बहुपद राशियां हैं।

(४९) बुध गुरु शुक्र द्विपद ग्रह हैं सूर्य मङ्गल शनि चतुष्पद हैं चन्द्र राहु बहुपद हैं।

(५०) राशियोंके स्वरूपका वर्णन—मिथुन स्त्रीपुरुषका जोड़ा स्त्रीके हाथमें वीणा और पुरुषके हाथमें गदा, कन्या

नावपर बैठी हुई हाथमें दीपक और शस्य है, तुला मनुष्य स्वरूप तराजू हाथमें लिये हुए, धन मनुष्य स्वरूप धनुष हाथमें लिये हुए नीचेका भाग घोड़ेका, मकरका आकार मगर सरीखा मुख मृगका, कुंभका आकार मनुष्यका हाथमें घड़ा लिये हुए, मीनमें दो मछलियां हैं एकके मुखमें दूसरीकी पूँछ लगकर गोल बनीहुई है शेष राशियोंका स्वरूप नाम तुल्य जानना जैसे वृष बैलरूप, कर्क केंकड़ा, सिंह शेर, वृश्चिक बिच्छू।

(५१) सूर्य चतुष्कोण है, चंद्रमा लघुवृत्त, मंगल डमरू सरीखा, बुध त्रिकोण, गुरु दीर्घवृत्त अर्थात् अंडाकृति, शुक्र अष्टकोण, शनि शूर्पाकार, राहु दीर्घ रेखा तुल्य।

(५२) सूर्य बुध झुके हुए सींगके हैं, चन्द्रमाका सींग चपटा है, मंगल ओछे सींगका है, गुरु शुक्रके लंबे सींग हैं, शनि टूटे सींगका है, राहुका सींग खंडित है।

(५३) मेषकी ७ किरणें हैं वृषकी ८, मिथुनकी ५, कर्ककी ३, सिंहकी ७, कन्याकी ११, तुलाकी २, वृश्चिककी ४, धनकी ६, मकरकी ८, कुंभकी ८, मीनकी २७ किरणें हैं।

(५४) सूर्यकी किरणें ५ है चन्द्रकी २१ मङ्गलकी ७ बुधकी ९ बृहस्पतिकी १० शुक्रकी १६ शनिकी ४ राहुकी ४ किरणे हैं।

(५५) चन्द्र मङ्गल शनि ओछे कदके हैं बुध गुरु राहु लम्बे कदके हैं सूर्य शुक्र मध्य कदके हैं।

(५६) सूर्यके ८ योजन चन्द्रके १ योजन मङ्गलके ७ योजन गुरुके९ योजन बुधके ८ योजन शुक्रके १६ योजन शनिके २० योजन और राहुके २० योजन है, जो योजन ग्रहोंके वही योजन इनकी राशियोंके जानना।

(५७) सूर्यकी उमर ५० वर्षकी है चन्द्रकी ७० की मङ्गलकी १६ वर्षकी बुधकी २० वर्षकी गुरुकी ३० वर्षकी शुक्रकी ७७ शनिकी १०० राहुकी १०० वर्षकी उमर है।

(५८) सूर्यका स्वाद कडुवा, चंद्रका कषाय अर्थात् तोरा जिसके खानेसे छाती ऐंठे, मंगलका तीक्ष्ण अर्थात् चरपरा, बुधका खारा, गुरुका मीठा, शुक्रका अम्ल अर्थात् खट्टा, शनिका कडुआ स्वाद और राहुका भी यही स्वाद कहना।

(५९) सूर्यका तिल लांछन नितम्बपर, अर्थात् कूलोंपर होता है, चन्द्रमाका मस्तकमें, मङ्गलका पीठपर, बुधका भुजाके नीचे और कांखमें, गुरुका भुजापर, शुक्रका चेहरेपर, शनिका जंघापर और राहुका तिल व लांछन पांवमें होता है।

(६०) सूर्य मंगल बुध गुरु इनके तिल लांछन दक्षिण भागमें होते हैं और चन्द्र शुक्र शनि राहु इनके तिल व लांछन वामभागमें होते हैं।

(६१) ग्रहोंके लांछन स्वरूप कहते हैं-सूर्यका लांछन तिल ज्योतिके पुष्प सरीखा, चन्द्रका अर्क (आंकड़ा) के फूलसरीखा, मंगलका तुवरकी दालके तुल्य, बुधका अगस्त्याके पत्र सरीखा, गुरुका एरण्डके पत्रसरीखा, शुक्रका इमलीके पत्राकार, शनिका धतूराके पत्र समान, राहुका तलपोटके पत्रसरीखा लांछन होता है!

(६२) मेष, कर्क, तुला, कुम्भ इन प्रत्येकके ८ प्रकाश हैं, वृष, मिथुन, मकर इनके छै छै प्रकाश हैं, सिंहके सात, कन्या धनुके ११, वृश्चिकके ४ और मीनके २७ प्रकाश हैं।

(६३) सूर्यका प्रकाश ५ है चन्द्रका २१ मंगलका १४ बुधका ९ गुरुका १० शुक्रका ११ शनि राहुका ४ प्रकाश है किसीके मतसे रविके ७ और शुक्रके १६ प्रकाश होते हैं।

(६४) वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ स्थिर राशियां हैं, मेष, कर्क, तुला, मकर चर राशियां हैं, मिथुन, कन्या, धनु, मीन द्विस्वभाव राशियां हैं॥

(६५) सूर्य शुक्र स्थिर ग्रह हैं, चन्द्र, मंगल राहु चर ग्रह हैं, बुध, गुरु, शनि द्विस्वभाव ग्रह हैं।

(६६) कर्क, वृश्चिक मन्दगति हैं, मकर मीन उड़नेवाले हैं, और शेष राशियां चलनेवाली हैं, अर्थात् पादचारी हैं, चन्द्र राहु मन्दगति हैं, बुध उड़नेवाला, शनि पंगु अर्थात् लँगड़ानेवाला, सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र, पादचारी हैं यहां मन्दगतिसे आशय पेट घीसके धीरे चलनेका है ॥

(६७) मेष, धनु, जंगल हैं, वृष चांवलका खेत है, मिथुन कन्या गांव है कर्क जलमार्ग अर्थात् बरहा, मोरी इत्यादि, सिंह पहाड़ है, तुला, मकर, मीन, नदियां हैं. वृश्चिक कूप है, कुम्भ जलपात्र है, इनका काम चौर्य पदार्थके ढूंढनेमें पड़ता है।

(६८) किसीके मतसे मेष जंगल है, वृष चांवलका खेत है, मिथुन गांव है, कर्क नहर है, सिंह पहाड़ है, कन्या जल है, तुला गांव है, वृश्चिक कूप है, धनु बाग है, मकर शुष्कनदी अथवा निमकका पात्र, कुंभ झील, मीन समुद्र है।

(६९) किसीके मतसे, मेष जंगल है, वृष चांवलका खेत है, मिथुन बाग है, कर्क नहर है, सिंह पहाड़ है, कन्या जल है, तुला नदीका किनारा अथवा तालाव, वृश्चिक कूप है, धनु, मकर, कुंभ, मीन इन प्रत्येकसे कूप, तालाव, नाली याने खाई समझना।

(७०) किसीके मतसे-मेष वन है, वृष चांवलोंका खेत, मिथुन गांव, कर्क जल, सिंह पहाड़, कन्या तुला नदी, वृश्चिक कूप वा गड्ढा, धनु बाग, मकर खाई, कुंभ समुद्र, मीनसे झिरना या समुद्र।

(७१) मतान्तर-मेष, सिंह, वृश्चिक, धनु बन हैं. वृष, कर्क, मकर, मीन जल हैं, मिथुन कन्या तुला कुंभ गांव हैं।

(७२) सूर्य, मङ्गल, शनि ये बन हैं, इन्द्र शुक्र जल है, बुध गुरु गांव है, राहु झीलवाली ऊँडीपृथ्वी है।

टिप्पणी–मित्र क्षेत्री ग्रहसे चोरी गया घरमें मिलेगा ऐसा कहना, स्वक्षेत्री-ग्रहसे चौर्य पदार्थ गांवमें मिलेगा, उच्चराशिस्थसे ग्राम समीप, शत्रु या नीच क्षेत्रीसे गांवमें दूर चोरीगये पदार्थकी स्थिति है ऐसा कहना । किसीके मतसे आरूढ लग्नका स्वामी उपरोक्त स्थानका सूचक है और किसीका यह मत है कि सूर्याक्रान्त राशिके स्वामीसे चौर्यकी स्थिति निर्णय करना ।

(७३) मतान्तर–सूर्य गुरु देवालय तथा उच्चस्थान हैं, चन्द्र शुक्र जल है, मंगल पृथ्वी है, बुध शयनस्थान, शनि अग्निकुण्ड या हवन होनेकी जगह है, राहु वृक्षोंकी कोचर है ।

टिप्पणी–रवि भोजन करनेका पाटा तथा भोजनपात्र है अर्थात् रोटी पकाने खानेके बरतन, चंद्र सिरकेका बरतन, मंगल लघुपात्र, बुध दीवाल, गुरु धान्य नापनेका पात्र, शुक्र जलपात्र, शनि रणभूमि, राहु सर्पकी बामी या चींटीका बमीला ॥

(७४) पृष्ठोदय राशि तथा ग्रह इन्होंका समय रात्रि है शीर्षोदय ग्रह राशियोंका समय दिन है शिरपृष्ठोदय राशियोंका समय सायं-काल है ।

(७५) किसीके मतसे स्थिरराशि तथा स्थिर ग्रहोंका समय दिन है चर राशि तथा चर ग्रहोंका समय रात्रि है और द्विस्वभाव राशि तथा ग्रहोंका समय सायंकाल है ।

(७६) प्रश्नलग्नसे दिन रात्रि वारका निश्चय करना सूर्योदयसे ३० घटीतक दिनकी संज्ञा है और बाद ३० घटीतक रात्रिकी संज्ञा है इस तरह सम्पूर्ण दिन रात्रिकी ६० घटीकी संज्ञा है सूर्योदयात् इष्ट जो ३० घटीके भीतर हो उसके पौने चार खंड करना जिससे खंडमें इष्ट आवे उससे फल कहना समसे दिन विषमसे रात्रि, ३० घटीके बादका जो इष्ट होय तो सम्पूर्ण सूर्योदयात् इष्टमेंसे ३० घटादेना जो शेष रहे उसकी पूर्वोक्त क्रिया करना, अब वार जाननेके लिये ६० घटीके भीतर जितना सूर्योदयात् इष्ट हो उस सम्पूर्णके पौने चार खण्ड करना जितने खण्ड

हों उतनेही वार प्रश्न करनेके दिनसे गिन लेना, जो वार आवे वही उत्तर है ।

टिप्पणी–जैसे किसीने मंगलवारको सूर्योदयात् घटी २० पर प्रश्न किया. अब दिन रात्रि जानेके लिये घटी २० में पौनेचारका भाग दिया तो यह इष्ट छठे खंडमें हुआ अतएव छः ये संज्ञा सम होनेसे उत्तर दिन आया, अब वार जाननेके लिये उसी घटी २० के इष्टमें पौने चारका भाग दिया तो छठा खण्ड हुआ अतएव प्रश्न अतएव प्रश्नवार मंगलसे छठावार रविवार है यही प्रश्नका उत्तर है ।

(७७) शनि और राहु इन प्रत्येक ग्रहोंका काल एक वर्ष है, सूर्यके छे महीने, बुधके दो महीने, गुरुका एक महीना, शुक्रके १५ दिन, मंगलका १ दिन, चन्द्रकी २ घटी ।

(७८) किसीके मतसे यह है कि जो ग्रह नीच व शत्रुराशिका हो उसकी जितने किरणे हैं उतनेही वर्ष जानना, जो ग्रह मित्रक्षेत्र है उसकी किरणोंके उतने ही महीने जानना और स्वक्षेत्री ग्रहकी जितने किरणे हैं उतने ही दिन जानना, जो ग्रह उच्चका है उसकी किरणोंके तुल्य घटी कहना । मतलब यह है कि नीच ग्रह जो कार्य्य वर्षोंमें करेगा उसी कार्य्यको उच्चस्थ ग्रह घटियोंमें कर देगा ।

(७९) कार्यकी अवधि जाननेमें दिन जाननेका प्रकार--चंद्र नक्षत्रसे तात्कालिक उदय लग्नके नक्षत्रतक गिनना जितनी संख्या आवे उतने ही दिनोंमें प्रश्नका फल मिलेगा ।

(८०) भविष्यकी अवधि कहनेमें ज्योतिषीको चाहिये कि वृषभोदय लग्नसे अवधि मुकर्रर करे अथवा जो ग्रह उस लग्नमें बैठा हो वह जो ग्रहोंमें अत्यन्त बलवान् हो इसको विचारे ।

टिप्पणी–सूर्योदयात् इष्टमें २॥ का भाग देना जितने खण्ड आवें उतनेही वृषभ लग्नसे गिनलेना जो संख्या आवे वही वृषभोदय लग्न है मतलब यह है कि यहां सूर्योदय वृषभ लग्नमें माना है चाहे कोई भी ऋतु या काल

हो सदा सूर्योदय वृषभ लग्नमें होता है और प्रत्येक लग्न २॥ घड़ीकी कल्पना की है जैसे प्रातःकाल सूर्योदयसे २॥ घड़ीतक वृषभ लग्न रही फिर २॥ घड़ीतक मिथुन रही इसी तेरह प्रश्न कालमें जो लग्न आवे वही वृषभोदय लग्न है और किसीका यह मत है कि, सूर्योदय लग्न तथा उसपर स्थित ग्रहसे कालित करना अर्थात् स्पष्ट सूर्यके तुल्य सूर्योदयके समय लग्न मानकर २॥ घडीका प्रत्येक लग्न मानके हिसाबसे इष्टकालतक गिनलेना जो आवे वही सूर्योदय लग्न है परन्तु सर्व सम्मति होनेसे वृषभोदयलग्न तथा उसपर स्थित ग्रह और सब ग्रहोंमें जो अत्यन्त बलवान् है इन्हीं तीनोंकी जो अवधि है उसीके तुल्य भविष्यफलकी अवधि कहना।

(८१) अथ आरूढचक्रम्--एक गोलवृत्त खींचो उसके मध्यमें दो रेखा सीधी खींचो और दो रेखा आड़ी खींचो ऐसा करनेसे चार कोठे बाहरी बनते हैं इन कोठोंमें परिधितक एक एक रेखा और खींचो ऐसा करनेसे सम्पूर्ण १२ कोठे बन जावेंगे, वृषलग्नको बिलकुल पूर्व दिशामें रक्खो और क्रमानुसार द्वादश राशियां इस कोठेमें स्थापित करदो उदाहरणके पूर्वोक्त चक्र नीचे लिखते हैं।

आरूढचक्रम्

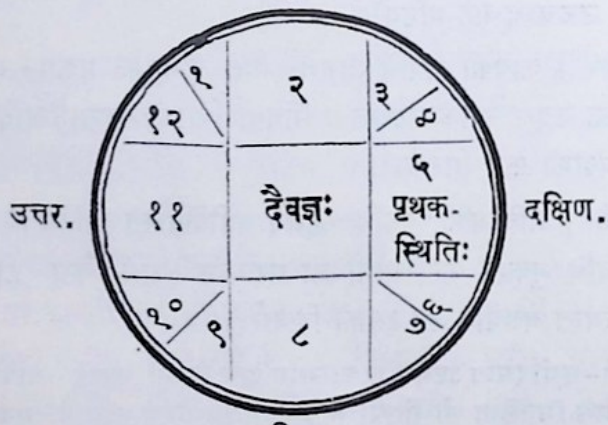

टिप्पणी–यह अ रूढचक्रका क्रम मूल ग्रन्थमें कहा है आजकल जो प्रचलित जैमिनीका चक्र पञ्चाङ्गोंमें तथा जन्मपत्रियोंमें लिखाजाता है उससे भी काम निकल सकता है परंतु उसमें एक दूसरेकी संमुखस्थ राशियां नहीं मालूम होती प्रत्युत जो चक्र ऊपर लिखा है इसमें प्रत्येक राशिकी संमुखस्थ लग्न स्पष्टतासे विदित हो सकती है यही इस चक्रमें विशेषलाभ है।

(८२) परस्पर सम्मुखस्थ राशियां ये हैं मेष तुला, वृष वृश्चिक, मिथुन धन, कर्क मकर, सिंह कुंभ, कन्या मीन, ये परस्पर आमने सामने की राशियां हैं।

(८३) आरूढ ग्रह आठ हैं--सूर्य, मंगल, गुरु, बुध, शुक्र शनि, चन्द्र, राहु ये चक्रमें इस क्रमसे हैं कि दो ग्रह पार्श्वस्थ और तीसरा ग्रह डेढ राशिके अन्तरसे जैसे सूर्य मेषपर मंगल वृषपर और गुरु कर्क राशिके मध्यस्थ फिर बुध सिंहपर शुक्र तुलाराशिके मध्यस्थ इस तरह सब समझना प्रत्येक दिन सूर्योदयके समय रविको मेषराशिके शून्य अंशपर स्थापित करना सम्पूर्णग्रह इसमें वामभागसे दक्षिणभागको चलते हैं।

टिप्पणी–सम्पूर्ण ग्रह ६० घटीमें १२ ही राशिको भोग जाते हैं एक ग्रह एक राशिको ५ घटीमें भोग लेता है अतएव सम्पूर्ण दिन रात्रिके पृथक् पृथक् चौवीस चक्र हुए और दो ग्रहोंसे तीसरे ग्रहका जो डेढ राशिका अन्तर है वह बदस्तूर जारी रहेगा। अब उदाहरणके वास्ते नीचे ४ चक्र लिखते हैं १ प्रातःकालका २ मध्याह्न कालका ३ सायंकालका ४ मध्यरात्रिका ६० घटीमें २४ चक्र होनेका कारण यह है कि तीसरा ग्रह जो डेढ राशिके अन्तरपर रहता है वह शेष आधी राशिको ढाई घटीमें भोगकर आगेकी राशिपर चला जाता है इस तरहसे प्रत्येक घंटे (२॥ घंटे) में चक्रकी सूरत बदलनेसे २४ घंटेकेसे २४ चक्र हुए॥ इन आठ आरूढ़ ग्रहोंका नाम याम है और इस संपूर्ण ग्रन्थमें इन्हीं ग्रहोंका

	सूर्य	मंगल	
राहु	६–७प्रातःकाल		गुरु
चन्द्र			बुध
	शनि	शुक्र	

	चन्द्र	राहु	
शनि	१२-१ मध्याह्न काल		
शुक्र			सूर्य
	बुध	गुरु	

	शुक्र	शनि	
बुध	६--सायंकाल		चन्द्र
गुरु			राहु
	मंगल	सूर्य	

	गुरु	बुध	
मंगल	१२--मध्यरात्री		शुक्र
सूर्य			शनि
	राहु	चन्द्र	

उपयोग किया है संस्कृतमें याम तीन घंटेका नाम है जो दो पार्श्वस्थ ग्रहोंके अन्तरका काल है ॥

(८४) अप्रकाशक ग्रह १२ हैं जिनके नाम ये हैं--सूर्य, धूम, राहु, चन्द्र, शनि, सूक्ष्म, शुक्र, इन्द्रधनुष, बुध, गुरु, मंगल और परिवेष ये ग्रह दिशामंडलमें दक्षिणसे वाम भागको फिरते हैं और प्रत्येक ग्रह एक-एक राशिपर रहते हैं अन्तर एकसे दूसरेका ३० अंशका रहता है और सम्पूर्ण दिनरात्रिमें ये ग्रह १२ ही राशिको भोग लेते हैं और प्रत्येक दिन सूर्योदयके समय रवि वृष लग्नके अन्तिम अंशपर रहता है ।

टिप्पणी—इन चक्रोंकी सूरत दो घंटे बाद बदल जाती है क्योंकि एक एक ग्रह एक राशिको दो घंटेमें भोग लेता है उदाहरणके वास्ते चार चक्र नीचे लिखे जाते हैं पहला प्रातःकालका, दूसरा मध्याह्नकालका तीसरा सायंकालका चौथा मध्यरात्रिका इन ग्रहोंका काम नौकागमके प्रश्नमें पडेगा अध्याय २३ का श्लोक ३ देखो ।

राहु	धूम	सूर्य	परिवेष
चन्द्र / शनि	६--८प्रातःकाल		परिवेष / मंगल
सूक्ष्म	शुक्र	इंद्रधनु	बुध

परिवेष	मंगल	गुरु	बुध
सूर्य / धूम	१२--२मध्याह्न काल		इंद्रधनु / शुक्र
राहु	चन्द्र	शनि	सूक्ष्म

बुध	इंद्रधनु.	शुक्र	सूक्ष्म
गुरु / मंगल	६-८ सायंकाल		शनि / चन्द्र
परिवेष	सूर्य	धूम	राहु

सूक्ष्म	शनि	चन्द्र	राहु
शुक्र / इंद्रधनु.	१२-२मध्यरात्री		धूम / सूर्य
बुध	गुरु	मंगल	परिवेष

(८५) अथ साप्ताहिकग्रहाः—जैसे कि आरूढ ग्रह ८ हैं इस तरह यह भी आठ हैं और दक्षिणसे वाम चलते हैं १२ राशियोंको १२ घंटेमें भोग लेते हैं प्रत्येक दो ग्रह पार्श्वस्थ राशियोंपर रहते हैं और तीसरा ग्रह डेढ राशिके अन्तरसे रहता है और जिस ग्रहका वार होता है वही ग्रह सूर्योदयके समय मेष राशिके प्रथम अंशपर स्थित किया जाता है ॥

टिप्पणी–हरएक ग्रह एक राशिको एक घण्टेमें भोग लेता है इनको चक्रमें इस तरह स्थित करना कि, सूर्यके वामभागमें मंगल रहे फिर डेढ़ राशिके अन्तरसे गुरु स्थित करना उसके बाद बुध फिर राशिबीचमें छोड़कर दूसरी राशिके मध्यमें शुक्र स्थापित करना उसके आगेकी राशिमें शनि स्थापित करना उसके आगेकी राशि छोड़कर चन्द्र स्थापित करना उसके आगेकी राशिमें राहु लिखना ऐसे १२ घण्टेके २४ चक्र बनेंगे क्योंकि प्रत्येक तीसरा ग्रह जो राशिके मध्यमें रहता है वह आधे घण्टेमें शेष उत्तरार्द्धका भोगकर आगेकी राशिपर चलाजावेगा इससे प्रत्येक आध आध घण्टेमें नवीन चक्र बनता रहेगा। अब उदाहरणके वास्ते सातों वारोंके ७ चक्र सूर्योदय समयके लिखते हैं जो चक्रदिनके चौवीस हैं वोही रात्रिके भी समझना।

रवि		राहु	चन्द्र
मंगल	रविवार प्रातः-काल		
			शनि
गुरु	बुध		शुक्र

चन्द्र		शनि	शुक्र
राहु	चन्द्रवार प्रातःकाल		
			बुध
रवि	मंगल		गुरु

मंगल		रवि	राहु
गुरु	मंगलवार प्रातःकाल		राहु
बुध	शुक्र		शनि

बुध		गुरु	मंगल
शुक्र	बुधवार प्रातःकाल		
			रवि
शनि	चन्द्र		राहु

गुरु		मंगल	सूर्य
बुध	गुरुवार प्रातःकाल		सूर्य
चन्द्र			
शुक्र	शनि		चन्द्र

शुक्र		बुध	गुरु
शनि	शुक्रवार प्रातःकाल		
			मंगल
चन्द्र	राहु		सूर्य

शनि		शुक्र	बुध
चन्द्र	शनिवार प्रातःकाल		
			गुरु
राहु	रवि		मंगल

(८६) परस्पर सम्मुखस्थ ग्रह ये हैं—सूर्य, शुक्र मंगल, शनि–बुध, राहु–गुरु, चन्द्र, धूम, इन्द्रधनु। सूक्ष्मपरिवेष

टिप्पणी–उपरोक्त चक्रमें देखनेसे मालूम होगा कि यह ग्रह आमने सामने रहते हैं ॥

इति श्रीपवांरवंशावतंसश्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रन्थे संज्ञातंत्रनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अध्याय दूसरा २.

धातुकांडम्

(१) मेष, कर्क, तुला, मकर, ये धातुराशियाँ हैं. वृष; सिंह, वृश्चिक, कुंभ ये मूलराशियां हैं. मिथुन, कन्या, धन, मीन ये जीवराशियां हैं. मतलब यह है कि सम्पूर्ण चरराशियां धातु हैं और स्थिरराशियां मूल हैं तथा द्विस्वभाव राशियां जीव हैं ॥

(२) चन्द्र, मंगल, शनि, राहु ये धातुग्रह हैं. सूर्य, शुक्र, मूल ग्रह हैं और बुध, गुरु, जीवग्रह हैं ।

(३) सूर्य और चन्द्रमा स्वक्षेत्रमें धातुग्रह हैं और अन्यक्षेत्रमें मूल हैं शनि स्वक्षेत्रमें मूलग्रह है अन्य क्षेत्रमें धातु है बुध स्वक्षेत्रमें धातुग्रह है अन्य क्षेत्रमें जीव है यह इन्ही सूर्य, चंद्र, शनि, बुधके वास्ते विशेष नियम हैं अन्य ग्रहोंके लिये नहीं ।

(४) यदि आरूढ लग्न धातुराशि हों और उसकी छत्रलग्न भी धातुराशि हो और उस आरूढको धातुग्रह देखें तो धातुसम्बन्धी प्रश्न कहना इसी तरह मूल और जीव प्रश्न भी समझ लेना ।

टिप्पणी—यदि आरूढलग्न मूलराशि हो और उसका छत्रभी मूल हो और आरूढ़ मूलग्रहसे दृष्ट हो तो मूलसम्बन्धी प्रश्न कहना। यदि आरूढ़ लग्न जीवराशि हो और उसका छत्र भी जीवराशि हो तथा जीवग्रहसे दृष्ट हो तो जीवसम्बन्धी प्रश्न कहना ॥

(५) धातु और मूलके संयोगसे जीव कहना जीव धातुके संयोगसे मूल कहना और मूल जीवके मिलनेसे धातु कहना और जहां धातु मूल जीव तीनोंका संयोग हो तो उस जगह उनका बल देखकर प्रश्नका निर्णय करना ।

टिप्पणी—संयोगका मतलब यह है कि जैसे आरूढ़लग्न धातु है और उसका छत्र मूलराशि है तथा आरूढको मूलग्रह देखते हैं तो यहां धातु और मूलके मिलनेसे प्रश्न जीवसम्बन्धी हुआ इस तरह जब आरूढ़ लग्न मूल है और वह धातुग्रह करके दृष्ट है तथा उसका छत्र भी धातु है तो प्रश्न जीवसम्बन्धी है ऐसा कहना. आरूढ़ जीवराशि है और धातुग्रहसे दृष्ट है और उसका छत्र धातुराशि है तो प्रश्न मूलसम्बन्धी कहना, आरूढलग्न धातुराशि है और जीवग्रहसे दृष्ट है तथा उसका छत्र भी जीवराशि है तो प्रश्न मूलसम्बन्धी कहना. आरूढलग्न मूल है और जीव ग्रहसे दृष्ट है तथा उसका छत्र भी जीवराशि हो तो प्रश्न धातु सम्बन्धी कहना. आरूढलग्न जीव है और मूल-ग्रहसे दृष्ट है और उसका छत्र भी मूलराशि है तो प्रश्न धातुसम्बन्धी कहना. आशय यह है कि आरूढ लग्न और उसका द्रष्टा ग्रह तथा छत्र लग्न इन तीनों से प्रश्नका धातु मूलादि विचार करना यदि ये तीनों पृथक् पृथक् हों तो इनसे जो निर्बली हो उसको छोड़ देना और शेष जो दो बचें इनसे अधोलि-खित विचार करना ॥ आरूढ लग्न धातु राशि हो और बली मूलग्रह उसे देखे तो प्रश्न मूल जीवसम्बन्धी कहना और यदि वह आरूढ बली जीवग्रहसे दृष्ट हो तो प्रश्न जीवमूल सम्बन्धी कहना। पुनः आरूढ़ लग्न मूलराशि हो और बली जीवग्रहसे दृष्ट हो तो जीव धातु सम्बन्धी प्रश्न कहना और यदि उसे बली धातुग्रह देखें तो धातु जीव सम्बन्धी प्रश्न कहना. आरूढ़ लग्न जीवराशि हो और बली धातुग्रहसे दृष्ट हो तो धातु मूल कहना, और मूलग्रहसे दृष्ट हो तो मूलधातु कहना. भाष्यकारके मतानुसार यह है कि यदि उदयलग्न धातु हो और धातु ग्रहसे दृष्ट हो तथा वह धातुग्रह धातुराशिमें ही स्थित हो तो प्रश्न धातुसम्बन्धी कहना यदि वह द्रष्टा ग्रह मूलराशिमें स्थित है तो मूल-सम्बन्धी और जीवराशिमें हो तो जीवसम्बन्धी प्रश्न कहना उदय लग्न मूल हो और मूल ग्रहसे दृष्ट हो तथा वह द्रष्टा ग्रहे मूलराशिमें स्थित हों तो मूल सम्बन्धी प्रश्न कहना और इससे पृथग् किसी राशिमें स्थित हो तो प्रश्न जीवसम्बन्धी कहना उदय लग्न जीव हो और जीव ग्रहसे दृष्ट हो तथा ग्रह जीवराशिमें स्थित हो तो जीवसम्बन्धी प्रश्न कहना, और इससे पृथक् किसी अन्य राशिमें स्थित हो तो मलसम्बन्धी प्रश्न कहना, यदि ज्योतिषीने किसी-

प्रश्नका फल धातुनिर्णीत किया हो और तात्कालिक उदयलग्न चन्द्रसे युत व दृष्ट हो तो धातु न कहकर उपरोक्त निर्णीत फलको मूल कहना और मूलके स्थानमें जीव कहना तथा जीवके स्थानमें धातु कहना ॥

धातु–इससे इतने पदार्थोंका ग्रहण है मृत्तिका पाषाण, सुवर्ण, इत्यादि ॥

मूल–इन पदार्थोंका नाम है घास, वृक्ष, लता इत्यादि ॥

जीव–इन पदार्थोंकी गणना है कृमि, पक्षी और सम्पूर्ण जीवधारी ॥

मूल धातु–यह पदार्थ है सड़े हुए अस्थ्यादि शेष अर्थात् मृतक शरीर छाल, जड़ घासके फल-लता वृक्ष इत्यादि ॥

जीव धातु–अस्थ्यादि शेष, चमड़ा, नख, मांस,कीड़े, पक्षी जीवधारीके ॥

धातु जीव–इसमें वह पदार्थ शामिल है जो मूलधातु और जीव धातु पदार्थोंसे घास, लता, वृक्षके आकारमें बनाये गये हों ॥

जीव मूल–जो पदार्थ मूलमें शामिल हैं वही इसमें जैसे वृक्ष, लता, घास इत्यादि ॥

धातु जीव–पक्षी कृमि और जीवधारियोंकी आकृति जो मूलधातु और जीव-धातुसे बनी हुई हो ॥

मूल जीव–पशु पक्षी जीवधारीकी आकृति जो मूलधातुसे बनी हो ॥

(६) सूर्य पीतल है, चंद्र काँसी है, मंगल तांबा है, बुधका धातु जस्त और तांबेसे मिश्रित है, गुरुवा सुवर्ण है, शुक्रकी चांदी है, शनिका तथा राहुका लोह है ।

टिप्पणी–अब यह निर्णीत हो जावे कि प्रश्न धातुसम्बन्धी है तो उपरोक्त निरूपण धातुका करना किसी किसीके मतसे सुवर्ण, चांदी, तांबा, लोहा और शीशा इनके मिश्रणको सूर्यका धातु कहा है और चन्द्रमाका धातु शीशा कहा है ॥

(७) सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि इन्होंके शस्त्र एक तरफ धारवाले हैं चन्द्र, बुध और गुरु इन्होंके शस्त्र दोनों तरफ धारवाले हैं जो ग्रह स्वक्षेत्री हों तो शस्त्रकी सूरत ग्रह तुल्य कहना और अन्य क्षेत्री हों तो क्षेत्र तुल्य शस्त्रकी सूरत कहना ॥

टिप्पणी-राहुके शस्त्रकी सूरत जिस राशिपर वह बैठा हो उसी तुल्य कहना।

(८) सूर्यका पाषाण चन्द्रमाकी सारी मिट्टी मङ्गलका कृत्रिम मूँगा बुधकी बिखरी हुई मिट्टी गुरुकी सुनहरी रेत शुक्रका बिल्लौरी कांच तथा कृत्रिम मोती शनिकी लोहसरी खीरेत, राहुका संखिया ॥

टिप्पणी-किसीका मत यह है कि गुरुकी इट शनिका पाषाण और चिकनी मिट्टी, राहुका पाषाण |

(९) जवाहरात सूर्यका सूर्यकांतयाने आतिशी कांच, चन्द्रकी चन्द्र कांत, बुधका पन्ना शुक्रकी वैडूर्यमणि अर्थात् लशुनिया और शनिकी नीलमणि है ॥

(१०) सूर्यका लाल अर्थात् माणिक्य है चन्द्रका मोती मंगलका मूंगा गुरुका पद्मराग, शुक्रका वैडूर्य शनिकी नीलमणि राहुका हीरा केतुका गोमेदक है ॥

(११) यदि प्रश्नलग्नमें द्विपद राशि हो और उसपर द्विपद ग्रह बैठा हो तो भूषण संबंधी प्रश्न न कहना और रंग भूषणोंका ग्रह सरीखा कहना ॥

(१२) सूर्य मंगलका और गुरु कण्ठ भूषण हैं चन्द्र बुध कर्ण भूषण हैं शुक्र शिरोभूषण हैं शनि और राहु हाथपांवके भूषण हैं ॥

(१३) बृहस्पति सोनेके पारे हैं चन्द्रमाका कांति जड़ित भूषण है शनिका नीलमणि जटित भूषण है तथा ऊन नख हड्डी और लोहा इनसे

जटित भूषण हैं इसी तरह अन्य ग्रहोंके जड़ाऊ भूषण कहना हो तो उन ग्रहोंके जो जवाहरात हैं उनसे जटित कहना ॥

(१४) प्रश्नके समय गुरु और राहु किसी राशिमें बैठे हों तो भूषण कनकसूत्र याने सुनहरी कलाबत्तू कहना और इस किस्मके गोटा वगैरह पदार्थ कहना । बृहस्पति शुक्र किसी राशिपर बैठे हों तो मोती और बिल्लौरसे जड़ा हुआ जेवर कहना यदि बृहस्पति और चन्द्रमा किसी राशिपर बैठे हों तो ताबीज कहना ॥

टिप्पणी–इन बैठे हुए ग्रहोंमें यदि बृहस्पति भी शामिल हों तो नित्यके पहरनेका भूषण कहना यदि बृहस्पति शामिल न हों तो नैमित्तिक कहना यदि मंगल हो तो उधार लिया हुआ भूषण कहना यदि मंगल न हो तो घरका जेवर कहना । इति धातुकांडः ।

इति श्रीपवाँरवंशावतंस श्रीमहाराजशम्भुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रन्थे धातुकांडं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अध्याय तीसरा ३.

अथ मूलप्रकरणम्

(१--२) सूर्य वृक्ष है, चन्द्रमा लता याने बेलड़ी है, मंगल क्षुद्र धान्य है, बुध और शुक्र बृहद्धान्य है, गुरु सांटा है, शनि राहु कंटक वृक्ष हैं, बुध कंटकहीन वृक्ष है, शुक्र सांटा है ॥

(३-४) सिंह धन वृक्ष है, वृष कर्क तुला लता और बृहद्धान्य है, मेष वृश्चिक क्षुद्र धान्य हैं, जैसे प्रियंगु अर्थात् कांगणी इत्यादि, मीन सांटा है, और इसी वर्गके वृक्ष, मिथुन कन्या कंटकहीन वृक्ष हैं, कर्क कुंभ कंटक वृक्ष हैं सूर्य मंगल शनि राहु ये कांटेदार तथा जहरीले वृक्ष हैं, और चन्द्र बुध गुरु शुक्र इनके कंटकहीन तथा विष रहित वृक्ष हैं ॥

(५-६) सूर्य पहाड़का वृक्ष है, चन्द्रमा केला है, गुरु नारियल है, शनि राहु ताड़के वृक्ष हैं बुध शुक्र केला हैं, मंगल पोदा है।

टिप्पणी—चन्द्रमा पुष्पवृक्ष है, बुध लता है, गुरुचम्पक वृक्ष है, शुक्र पुष्प वृक्ष तथा लता और मूल है, शनि अदरख हलदी इत्यादि।

(७) सूर्य छाल है, चन्द्रमा कन्द है, मंगल फूल है, बुध पत्र है, गुरु पका फल है, शुक्र कच्चा फल है, शनि मूल है, राहु लता है।

(८) मेष वृश्चिक फूल हैं, वृष तुला कच्चे फल हैं, मिथुन कन्या पत्र हैं, धन मीन पके फल हैं, मकर कुंभ जड़ हैं, सिंह छाल हैं, कर्क कन्द है।

(९) शनि राहु टेढे कांटेके हैं, सूर्यका कांटा बड़ा और सरल है, मंगलका कांटा छोटा है, मकर कुंभेके टेढे कांटे हैं, सिंहका बड़ा सीधा है, मेष वृश्चिकके कांटे छोटे हैं।

(१०) सूर्य चंद्र शनिके निष्फल वृक्ष हैं और शेष ग्रहके सफल वृक्ष हैं, इनमेंसे गुरु और शुक्रके फल अन्तरस्थ हैं, और मंगल बुध राहु-के फल बहिस्थ हैं, और फलोंके रंग ग्रहानुसार कहना।

(११) चंद्रमाका श्वेत धान्य है, मंगलका प्रियंगु तथा कांगनी है शुक्रकी श्वेततिल्ली, बुध गुरु शनिके उड़द, ग्रहोंके रङ्ग तुल्य कहना, चारों शुभग्रह तथा शनि इन्होंके धान्य दृढसंधिवाले कठोर कहना और शेष तीन पापग्रहोंके धान्य बीजगुप्त याने फलीवाले कहना।

(१२) सूर्यका धान्य निष्पाव है, चंद्रमाकी श्वेत तिल्ली है, मंगल-का चना है, बुधका मूंग, गुरुकी लाल तूअर, शुक्रकी सफेद तूअर, शनिके काले तिल और राहुके काले उड़द हैं।

(१३) सूर्य बुध ऊंची जमीन है, चंद्र शुक्र जल है, मंगल गुरु पथरीली जमीन है और शनि मरुस्थल है; राहु सर्पोंकी बामी तथा चींटीके बामीसे युक्त भूमि है ।

टिप्पणी—किसीके मतसे मंगल ऊंची भूमि है, बुध जलमय है और किसीके मतसे बुध सर्पोंकी बामीयुक्त भूमि है ।

(१४) वर्ण, स्वाद, रत्नोंके कुल, शस्त्र तथा इनकी सजातीय धातु वृक्ष, लता इत्यादि मूल पदार्थ और छाल, जड़ इत्यादि जो जिन ग्रहोंके हैं वेही उन ग्रहोंकी राशियोंके भी हैं ॥ ३ ॥

इति श्रीपवाँरवंशावतंसश्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेंद्रमालाग्रंथे मूलकाण्डनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अध्याय चौथा ४.

अथ जीवप्रकरणम्

(१-२) पांचों ग्रहोंका सूर्य पिता है और चंद्र माता है, गुरु पृथ्वी है, शुक्र जल है, मंगल अग्नि है, बुध, हवा है और शनि आकाश है । शनिमें स्पर्श गुण है, बुधमें स्पर्श और स्वाद है, मंगल स्पर्श स्वाद और रूप अर्थात् दृष्टि है, शुक्रमें स्पर्श स्वादरूप और गंध है और गुरुमें स्पर्श स्वादरूप गंध और शब्द अर्थात् श्रवण शक्ति है ।

(३) बुधका शंख है और कौड़ी तथा सींप और ऐसे पदार्थ जिनमें स्पर्श और स्वाद हो, मंगलकी चींटी, खटकीड़ा जूं, लीख मक्खी शुक्रकी बरड़ भवरा है और वे पदार्थ जिनमें स्पर्श स्वाद दृष्टि और गंधके गुण हों ।

(४) बृहस्पतिका देव, मनुष्य, पशु, पक्षी हैं, जिनके पंचज्ञानेन्द्री हैं, शनिका मूल हैं जिनमें एक गुण स्पर्श है ।

(५) जीवधारियोंके चार विभाग हैं--१ वे जो पांवसे चलते हैं २ वे जो उड़ते हैं ३ वे जो रिंगते हैं ४ वे जो जलमें रहते हैं ।

(६) यदि प्रश्नकालमें मीन मकर लग्नमें चंद्र दृष्ट हों तो मोरकी चिंता कहना और भौम अथवा शनिसे दृष्ट हो तो मुरगा मुरगी कहना काक कहना । यदि यह ग्रह मीन मकर लग्नपर बैठे हों तो भी यही फल है, बुधसे तोता तथा शुक्रसे युत व दृष्ट हो तो श्वेत हंस ।

(७) यदि मकर मीन सूर्यसे युत वा दृष्ट हो तो गरुड़पक्षी कहना बृहस्पतिसे श्वेत बगुला और राहुसे काक तथा भारद्वाज कहना, अगर पक्षी सम्बन्धी प्रश्न हो तो उन ग्रहोंके रंगतुल्य पक्षी बतला देना ।

(८) प्रश्न मेषपर सूर्य हो तो प्रश्न व्याघ्र सम्बन्धी कहना, यदि चन्द्रस्थित हो तो बैल कहना, मंगलसे मेंढा, भेड़, बुधसे खरगोश, बृहस्पतिसे घोड़ा, शुक्रसे गाय, शनिसे गवय अर्थात् रोज, और राहुसे भैंसा कहना ।

(९) प्रश्नलग्न वृषपर यदि सूर्य बैठे हों तो रोज सम्बन्धी प्रश्न कहना, चन्द्र और शुक्रसे गाय मंगलसे हिरन, बुधसे बन्दर, गुरुसे घोड़ा, शनिसे भैंस और राहुसे भैंस कहना ।

(१०) प्रश्नलग्न सिंह हो और सूर्य अथवा चन्द्रमा उसपर स्थित हो तो प्रश्न सिंहसंबंधी कहना, मंगलसे व्याघ्र, बुधसे बन्दर, गुरुसे घोड़ा, शुक्रसे कुत्ता, शनिसे भैंस और राहुसे भैंसा कहना ।

(११) प्रश्न कालमें धन लग्न हो और सूर्य अथवा शनि उसपर स्थित हों तो प्रश्न हाथी सम्बन्धी कहना, चन्द्र मंगल अथवा शुक्र हों तो घोड़ा, बुध या गुरु हो तो बन्दर और राहु हो तो भैंसा कहना ।

(१२) प्रश्नलग्न कर्क हो और मंगल स्थित हो तो गधा कहना, यदि मंगल मकरस्थ हो तो भैंसा और मीनस्थ हो तो बैल कहना, यदि मिथुन कन्या तुला कुंभपर भौम हो तो नकुल शृंगाल और कुत्ता कहना और शनि शुक्रसे भी यही फल कहना ।

(१३) प्रश्नलग्न तुला हो और उसपर चन्द्र स्थित हो तो प्रश्न गायका कहना, शुक्र हो तो बछड़ा, और जितने ग्रह चन्द्रमा अथवा शुक्रको देखें उतनी ही संख्या पशुओंकी कहना, रंग, सींग, अवस्था द्रष्टा-ग्रहसे पशुके कहना !

(१४) प्रश्न कालमें जब ग्रह बलसे यह निश्चित हो गया हो कि, चिंतित पशु स्त्रीजाति है तो उसकी व्यवस्था इस तरहसे कहना कि, बुधसे वह स्त्रीकारक ग्रह दृष्ट हो तो अवस्था पशु बालककी कहना, यदि वह सूर्य अथवा गुरुसे दृष्ट हो तो पशु गर्भवती कहना, यदि चन्द्र और शुक्रसे दृष्ट हो तो दूध देनेवाला पशु कहना, यदि शनि और राहुसे दृष्ट हो तो वंध्या पशु कहना और मंगलसे दृष्ट हो तो दूध न देनेवाला पशु कहना ।

(१५) प्रश्न कालमें मेष लग्न हो और सूर्य उसपर स्थित हो तो भूप चिन्ता कहना, यदि सूर्य स्वक्षेत्रस्थ हो तो सेनापतिकी चिंता कहनी और मित्रराशिस्थ तथा शत्रु व नीच राशिस्थ हो तो उत्तरोत्तर कम कम दरजेका राज्याश्रित मनुष्य कहना । यदि लग्नमें उच्चराशिस्थ मंगल हो तो कसेरा कहना । स्वक्षेत्री हो तो कुम्हार, मित्रक्षेत्री हो तो तेली या चित्रकार वगैरह कहना ।

(१६) यदि प्रश्नलग्नमें गुरु कर्कस्थ हो तो ब्राह्मण कहना, स्वक्षेत्रस्थ हो तो मंत्री कहना, मित्रराशिस्थ हो तो जैनी कहना, यदि बुध प्रश्न लग्नमें

उच्चस्थ हो तो नाट्याचार्य्य कहना, यदि बुध स्वक्षेत्री हो तो पुजारी कहना, मित्रक्षेत्री हो तो व्यापारी कहना, यदि शुक्र प्रश्नलग्नमें उच्चराशिस्थ हो तो किसान कहना, स्वक्षेत्री हो तो गाड़री और मित्रक्षेत्री हो तो बनिया कहना।

(१७) प्रश्नलग्नमें शनि उच्चस्थ हो तो नीचजातिका पुरुष कहना, स्वक्षेत्री हो तो चांडाल कहना, मित्रक्षेत्री हो तो चमार कहना, यदि प्रश्नलग्नमें चन्द्रमा उच्चराशिस्थ हो तो वैद्य कहना, स्वक्षेत्री हो तो नट कहना, मित्रक्षेत्री हो तो ज्योतिषी कहना, यदि राहु प्रश्नलग्नमें उच्चका हो तो कालबेलिया कहना, स्वक्षेत्री हो तो गवैया कहना; मित्रक्षेत्री हो तो चोरीपेशा जाति कहना।

(१८) सूर्य मङ्गल बुध गुरु यदि शत्रु या नीच राशिस्थ हो तो नीच जातिका पुरुष कहना, यदि चन्द्रमा शत्रु या नीच राशिस्थ हो तो चूनाजलानेवाला कहना, शुक्र शत्रु या नीच राशिस्थ प्रश्नलग्नमें हो तो धोबी कहना, यदि शनि शत्रु या नीचराशिस्थ हो तो भाजी बेचनेवाला कहना और राहु शत्रु या नीचराशिस्थ हो तो मछली पकड़नेवाला कहना।

(१९) यदि प्रश्न द्विपद जंतु सम्बन्धी हो और चंद्रमा स्वक्षेत्री उसपर स्थित हो तो ज्योतिषी कहना, यदि बुध स्वक्षेत्री हो तो नाट्याचार्य याने नृत्यमास्टर कहना, यदि गुरु स्वक्षेत्री हो तो कवि तथा गायक कहना, और शुक्र स्वक्षेत्री हो तो जुलाहा कहना, यदि चतुष्पद जीव स्वक्षेत्री हो तो जुलाहा कहना, यदि चतुष्पद जीवसम्बन्धी प्रश्नहो और सूर्य लग्नमें स्वक्षेत्री स्थित हो तो सिंह या व्याघ्र कहना, भौम स्वक्षेत्री हो तो मेंढा भेड कहना, शनि राहु स्वक्षेत्री हो तो हस्ती कहना।

(२०) यदि प्रश्नलग्नमें बृहस्पति कुम्भराशिस्थ हो और चन्द्रमा पञ्चम सप्तम या नवें घरमें बैठा हो तो राजाकी चिन्ता कहना, यदि

उन्हीं पञ्चम सप्तम नवम घरमें कोई शुभग्रह हो तो हस्ती कहना, इसी योगमें यदि बृहस्पति कुम्भके न होकर धन मीनके हों तो बन्दर कहना ॥ ४ ॥

इति श्रीपवाँरवंशावतंसश्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रन्थे जीवप्रकरणनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अध्याय पाँचवा ५.

अथ नष्टमुष्टि तथा चिन्ताप्रकरणम्

(१) पृच्छककी चिन्ता आरूढलग्नके द्रष्टाग्रहोंसे विचारना जब किसी जीते हुए देहधारीके द्विपद चतुष्पद बहुपद जलचर पक्षी इत्यादि जाननेकी चिन्ता हो तो यह सब द्रष्टाग्रहसे कहना ।

(२) पृच्छककी चिन्ता आरूढलग्नके बलसे तथा द्रष्टाग्रहके बलसे कहना, और नष्टद्रव्य उदयलग्न तथा उसके द्रष्टाग्रहसे कहना और छिपा हुआ द्रव्य अर्थात् मुष्टि इत्यादिके प्रश्नकी चिंता छत्रलग्न और उसके द्रष्टा ग्रहसे कहना, प्रगट हो कि यदि द्रष्टा ग्रह बली हो तो फल देंगे अन्यथा नहीं ।

(३) जिन ग्रहोंको केन्द्रबल प्राप्त हो उन ग्रहोंको देखना, यदि ये ग्रह मित्रराशिस्थ हों तो इनसे मुष्टिगत पदार्थका विचार करना, यदि स्वक्षेत्री हों तो नष्ट पदार्थका विचार करना और उच्चस्थ हों तो पृच्छ-ककी मूकचिंताका विचार करना ॥

टिप्पणी—केन्द्रस्थग्रहोंके बलज्ञानार्थ १ अध्यायका ३२ वां श्लोक देखो इसके ग्रहोंके केन्द्रबल कहे गये हैं ॥

(४) उदयारूढ छत्रलग्नोंसे तथा इनपर स्थित ग्रहोंसे जो धातुमूल जीवके लक्षण पहँचाने हैं उन्हीं लक्षणोंसे नष्टमुष्टि चिंताकी लक्षणाकृति कहना ।

(५) ऐसा भी है कि चिंता याने मूकविचार दशम घरसे, और स्वप्न चतुर्थसे, मुष्टि छत्र लग्नसे, भूत वृत्तान्त सप्तम घरसे और भविष्य वृत्तांत उदय लग्नसे, नष्ट याने चोरीगया पदार्थ आरूढ लग्नसे कहना ।

(६) उदय लग्नसे पृच्छकका विचार कहना द्वितीय घरसे उसके कुटुम्बका, तृतीयसे भाइयोंका, चौथेसे माताका, पंचमसे पिताका, छठेसे शत्रुका, सप्तमसे पत्नीका. अष्टमसे आयुका, नवमसे पितामहादिका, दशमसे रोजगार धंधेका, ग्यारहवेंसे लाभका और बारहवें घरसे पृच्छकके हानिव्ययका विचार करना ।

(७) यदि आरूढ लग्न द्विपदराशि हो और उसपर सूर्य चंद्र बुध गुरु अथवा शुक्र बैठे हों तो प्रश्न मनुष्य संबंधी कहना, यदि यह ग्रह शनि या राहुसे युत हों तो चोर संबंधी अथवा चोरी गया हुआ पुरुष संबंधी प्रश्न कहना ।

(८) यदि प्रश्न कालमें सूर्य उदय लग्नस्थ हो तो प्रश्न राजासे भीति संबंधी कहना, यदि चंद्र बुध गुरु या शुक्र हो तो संपत्ति संबंधी प्रश्न कहना, मंगलसे लड़ाई, शनिसे नष्ट हृत पदार्थ और राहुसे रोग या विष संबंधी प्रश्न कहना ।

(९) यदि उदय लग्नमें अशुभ ग्रह हो तो मृत्यु संबंधी प्रश्न कहना, यदि वे अशुभ ग्रह आरूढ लग्नमें हो तो रोग सम्बन्धी प्रश्न कहना, आरूढ़ या उदयलग्नसे दूसरे घर यदि वे अशुभ ग्रह हों तो नष्ट हृत द्रव्य संबंधी प्रश्न कहना ॥

(१०) यदि पापग्रह अष्टम घरमें हों तो प्रश्न नष्ट हृत द्रव्य सम्बन्धी कहना, यदि वे छठे घरमें हों तो प्रश्न इसके विरुद्ध कहना, यदि बारहवें घरमें हों तो प्रश्न रोगसंम्बधी कहना, यदि शुभग्रह अष्टम घरमें हों तो स्वास्थ्यसंम्बन्धी प्रश्न कहना ।

(११) यदि आरूढ लग्न तीसरे छठे नवें बारहवें घरमें हों तो भूतसंम्बन्धी प्रश्न कहना । और प्रथम चौथे सातवें दशवें घर हों तो भविष्य सम्बन्धी, दूसरे पांचवे आठवें ग्यारवें घर हों तो वर्त्तमान सम्बन्धी प्रश्न कहना यह सब उदयलग्न कुंडलीमें देखना ।

(१२) तुला उदयलग्न हों और मेष आरूढ हों तो चोरी गया । धन मिलेगा परन्तु मेष उदय और तुला आरूढ हों तो नहीं मिलेगा । इसी तरह वृश्चिक धन ये उदयलग्न हो और इनके क्रमानुसार वृष मिथुन आरूढ हो तो धन मिलेगा और इससे विलोम हो तो नहीं मिलेगा ।

(१३) मकर उदयलग्न हो और कर्क आरूढ हो तो मिलेगा तथा इससे विलोम हो तो नहीं मिलेगा, सिंह कन्या उदयलग्न हों और कुम्भ मीन क्रमानुसार आरूढ हों तो चोरी गया धन मिलेगा और इससे विलोम हो तो न मिले ।

(१४) उदयलग्न शिरोदय हो और आरूढ पृष्ठोदय हो तो चोरी-गया धन मिलेगा, विलोमसे नहीं मिलेगा, शुभग्रह आरूड व उदय-लग्नमें हो तो तत्काल हृत द्रव्य मिलेगा ।

(१५) उदयलग्नसे तीसरे घर पापग्रह हो तथा आरूढ व छत्रमें हों और पापग्रहोंसे दृष्ट हों तो हृत द्रव्य मिलेगा परन्तु वे पाप ग्रह शुभग्रहसे दृष्ट हों तो नहीं मिलेगा ।

(१६) मेष कन्या मकर राशि सप्तम घरमें हो तो नहीं मिलेगा और वृष, तुला, धन, कुंभ सप्तम घरमें हो तो मिलेगा इनसे पृथक् अन्य राशियां हों तो विलंबके बाद मिलेगा, बृहस्पति सप्तम घरमें हो तो हृत द्रव्य मिलेगा यदि और कोई ग्रह सप्तम घरमें हो तो नहीं मिलेगा ।

(१७) यदि पृष्ठोदय राशिको चन्द्र देखे या बैठा हो तो हृत द्रव्य मिलेगा परन्तु वह चन्द्र शनिसे वीक्षित हो तो नहीं मिलेगा, ये मंगल उपरोक्त चन्द्रसे दशम घरमें हो तो मिलेगा ।

(१८) यदि सूर्य और चन्द्र बुध गुरु सप्तम घरमें हों तो मिलेगा।

(१९) शुभ ग्रह पांचवें सातवें नवे घर हों तो मिलेगा, पाप ग्रह हो तो नहीं मिलेगा।

(२०) उदयसे या आरूढसे तृतीय, पंचम, नवम शुभ ग्रह हों तो धन मिलेगा और पाप ग्रह हों तो नहीं मिलेगा चीजके चोरी जानेकी दिशा ग्रहोंसे कहना।

(२१) आरूढ या उदयलग्नमें इन्द्रधनुष परिवेष धूम्र या सूक्ष्म हो तो नष्ट द्रव्य मिलेगा, ग्रहकी जो दिशा है उस दिशाको चीज गई है।

(२२) आरूढ या उदय लग्नसे तीसरे घर पाप ग्रह हों और उन पापग्रहोंसे चौथे या पांचवें शुभ ग्रह हों तो कोई पुरुष नष्ट द्रव्यको खुद बखुद लादेगा।

(२३) उदय या आरूढलग्नसे दशम घरमें सूर्य मंगल और शनि हो तो खोया हुआ चौपाया स्वयं घरको आजावेगा।

(२४) जो चतुष्पद राशिमें स्थित राहु सप्तम घर हो तो खोये हुए चौपायेका प्रश्न जानना, उदयलग्नमें राहु हो और सप्तम घरमें चतुष्पद राशि हो तो चौपाया बँधा हुआ या कहीं रुका हुआ है, राहु उदयलग्नमें हो और द्विपद राशि सप्तमस्थ होतो खोया आदमी कैद या बन्धनमें है।

(२५) जो गुरु उदयलग्नमें हो तो खोया हुआ सोना नाशको नहीं प्राप्त होगा, शुक्र चौथे घर हो तो खोई चाँदी नाशको नहीं होगी और यदि शनि सप्तम घर हो तो खोया हुआ लोहा विनाशको नहीं प्राप्त होगा यदि मंगल दशम घर हो तो खोया हुआ तांबा नाश नहीं होगा।

(२६) यदि बुध उदय लग्नमें हो तो खोया हुआ कथीर नष्ट नहीं होगा, यदि चन्द्र चतुर्थ घर हो तो खोई हुई कांसी नष्ट नहीं होगी,

यदि राहु सप्तम घर हो तो खोया हुआ शीशा नष्ट नहीं होगा, यदि सूर्य दशम घर हो तो खोया हुआ पीतल नष्ट नहीं होगा ।

(२७) यदि उदय लग्नमें कर्क या वृश्चिक हो तो पदार्थ घरके भीतर छिपाया गया है यदि मकर मीन हो तो बाहरकी दालान या दीवालके नजदीक है यदि और कोई राशि हों तो घरकी ओलादी छत या कैंचीपर रक्खी है ।

(२८) उदय लग्नमें सूर्य या बुध हो तो दीवालके सिरेपर चीज रक्खी है, यदि चन्द्र या शुक्र हो तो जलपात्रमें और मंगलसे दीवालके समीप या घरके बरामदेमें, और गुरुसे रसोई घरमें, शनिसे चूल्हा या भट्टीमें, राहुसे छिद्रमें रक्खी कहना ।

(२९) यदि प्रश्नकालमें अश्विनी नक्षत्रका उदय हो तो चीरीगई चीज गाँवके भीतर ही धरी है, भरणीसे गलीमें, कृत्तिकासे जंगलमें, रोहणीसे सिरके या लवण पात्रमें, मृगशिरसे खाटतले, आर्द्रासे मन्दिरमें पुनर्वसुसे नाजके बन्डेमें, पुष्यसे घरमें, आश्लेषासे धूलके ढेरमें ।

(३०) मघा नक्षत्रसे चावल रखनेके पात्रमें, पूर्वाफाल्गुनीसे शून्य घरमें, उत्तराफाल्गुनीसे जलाशयमें, हस्तसे तालाबमें, चित्रासे जलके किनारे, स्वातीसे चावलके खेतमें, विशाखासे रुईके खेतमें, अनुराधासे लता बेलड़ीकी जगहमें, ज्येष्ठासे मरुस्थलमें ।

(३१) मूलसे पायगामें, पूर्वाषाढासे छप्परमें, उत्तराषाढासे धोबीके धोनेके बरतनमें, श्रवणसे व्यायामभूमि याने कवायद करनेकी जगहमें, धनिष्ठासे घट्टीके नजदीक, शतभिषासे गलीमें, पूर्वाभाद्रपदसे आग्नेय कोण-के घरमें, उत्तराभाद्रपदसे दलदलमें, रेवतीसे पुष्पवाटिकामें कहना ।

(३२) मंगलसे छोटापात्र, बुधसे शक्करकी चासनीका पात्र अथवा कड़ाय, गुरुसे बड़ा जलपात्र, शुक्रसे जलपात्र, शानिसे बड़ा बरतन, राहुसे छिद्रवाला बरतन, सूर्यसे सिरकेका पात्र, चन्द्रसे पतले बरतनमें चोरीगई चीज धरी कहना।

(३३) जब यह जाननाहो कि चोरी जानेके पेश्तर चीज किस दिशामें रक्खी थी तो प्रश्नकालिक उदय लग्नका स्वामी जिस राशिपर बैठाहो उसके तुल्य दिशा कहना, जैसे वृषसे पूर्व, मिथुन कर्कसे आग्नेय, सिंहसे दक्षिण, कन्या तुलासे नैर्ऋत्य, वृश्चिक, धन मकरसे वायव्य, कुंभसे उत्तर और मीन बेषसे ईशानकोंणमें कहना।

(३४) जो राशिकी आरूढ़ छत्र लग्नको देखै उसीकी दिशामें हृत द्रव्य गया है और उस द्रष्टा राशिकी जितनी किरणें हैं उतनी संख्या चोरी गई चीजकी कहना और जितने ग्रह छत्रारूढ लग्नको देखते हैं उतनीही चीज चोरी गई कहना।

(३५) यदि उदय व आरूढ विषमराशि हों तो पुरुष चोर है, सम हों तो चोर स्त्री है।

(३६) जिसको अतिपूर्ण बली ग्रह देखे उसीकी दिशाके तुल्य चोरीकी दिशा कहना और जो ग्रह अति पूर्ण बली ग्रहसे दृष्ट है उस तुल्य द्रव्यका रंग कहना और जो ग्रह अतिपूर्ण बली ग्रहसे दृष्ट है उसीसे चोरका रंग जाति इत्यादि सब कहना।

(३७) जो सबमें बली ग्रह है और उसकी जो अवधि है उसीकी अवधिमें चोरी मिलेगी, अवधिका वर्णन १ अध्यायके ७७ श्लोकमें देखो।

इति श्रीपवांरवंशावतंस श्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे नष्टमुष्टिचिंताकांडं सम्पूर्णम्॥

अध्याय छठा ६.

अथ शुभाशुभप्रकरणम्

(१) इस अध्यायमें मैं उन बातोंको लिखूंगा जो विवाह, परस्परप्रीति, यात्रा संबंधी जो १२–१३–१९ इन कांडोंमें वर्णनकरनेसे रहगईं हैं ।

(२) यदि प्रश्नकालमें उदयलग्न शिरोदय हो तो कार्य सिद्ध होगा और पृष्ठोदय हो तो न होगा, जो शिर पृष्ठोदय अर्थात् मीन लग्न हो तो बड़े कठिन उद्योगके बाद कार्य सिद्ध होगा ।

(३) यदि उदय लग्न चर हो तो चोरीगया धन नहीं मिलेगा और रोगीका रोग चलाजायगा शत्रु आकर संधि करेगा ।

(४) उदय लग्न चर हो तो चोरीगया धन मिलेगा शत्रुका आगमन नहीं होगा मृत्यु नहीं होगी न रोगसे निवृत्ति होगी कार्य सिद्ध होगा और बहुतसी पारितोषिकका लाभ होगा ।

(५) यदि उदय लग्न द्विस्वभाव हो तो गया धन नहीं मिलेगा न यात्रा न रोगनिवृत्ति न शत्रुसे संधि न विद्यासम्पन्नता और कार्य नष्ट होगा ।

(६) यदि चाहे उदय लग्न चर हो वा द्विस्वभाव हो परन्तु शुभग्रह मित्रक्षेत्री स्वक्षेत्री उच्चस्थानी होकर लग्नपर बैठे हों तो सब दोषोंका निवारण करते हैं कार्य सिद्धि होगी जो पापग्रह शत्रुक्षेत्री या नीचस्थानी होकर लग्नपर बैठे तो अशुभ कहना नेष्टफलके ये बढानेवाले हैं ।

(७) यदि उदयलग्नमें आरूढहो तो चोरीगया धन मिलेगा रोग जावेगा यदि चौथेघर आरूढहो तो चोरीगया धन मिलेगा उद्योगसिद्ध होगा, यदि सातवेंघर हो तो चोरीका धन भी नही मिले और आयंदाको

नुकसान हो, यदि दशवें घर हो तो द्रव्यकी वृद्धि होगी।

(८) यदि आरूढलग्न दूसरे, छठे, आठवें या बारवें घर हो तो कार्य नष्ट होवे द्रव्यकी हानि, शत्रुका जय होगा।

टिप्पणी—जो तीसरे, पांचवें, नवें और ग्यारहवें घर आरूढ़लग्न हो तो वही फल होगा जो इन स्थानोंमें छत्र लग्नके जानेसे होता हैं।

(९) यदि छत्रलग्न दूसरे या चौथे घर हो तो शत्रुसे संधि नहीं होगी परन्तु जो यह छत्र गुरुसे युत हो तो कष्टके साथ शत्रु नम्र होगा।

(१०) जो छत्रलग्न तीसरे घर हो तो निरन्तर कार्य सिद्धि और संपत्ति प्राप्त हो और यदि शुभग्रह उस छत्रपर बैठे हों तो विशेष वृद्धि जो पापग्रह बैठे हों तो किंचित दुष्टफल कहना, यदि छत्र लग्न ग्यारहवें घर हो तो निरन्तर दुष्टफल और कार्य नाश होगा यदि इसपर अशुभ-ग्रह बैठेहों तो विपत्ति विशेष कहना, यदि शुभग्रह बैठेहों तो किंचित सिद्धि कहना।

(११) यदि छत्रलग्न पंचम या नवम घर हो तो यात्री लौटेगा कार्यसिद्धि होगी शत्रुसे संधि होगी और संपत्ति सफलता सब प्रकारकी होगी।

(१२) यदि छत्रराशि लग्नमें हो या छठे, आठवें, बारहवें घर हो तो चोरी गया धन नहीं मिलेगा, रोगी रोगसे अच्छा नहीं होगा कार्य सिद्धि नहीं होगी मगर ये छत्रलग्न शुभग्रहोंसे युत हो तो किंचित सिद्धि कहना।

(१३) यदि छत्रलग्न सप्तम या दशम घर हो तो सिद्धि होगी, यदि ऐसे छत्रलग्नमें मित्रक्षेत्री, स्वक्षेत्री, और उच्चक्षेत्री शुभग्रह बैठेहों तो विशेष सिद्धि कहना।

(१४) यदि गुरु उदय आरूढ या छत्रलग्नमें हो तो द्रव्यकी प्राप्ति होगी द्रव्यसहित परदेशी लौटेगा रोगनिवृत्ति होगी शत्रुसे संधि होगी ।

टिप्पणी–जितना माहात्म्य गुरुके उदय लग्नपर बैठनेका है उतना आरूढ़ व छत्र लग्नपर बैठनेका नहीं है यही फल और ग्रहोंका है ।

(१५) जो चन्द्र उदय आरूढ छत्रपर स्थित हो तो द्रव्यकी प्राप्ति, और दूरदेशके दुर्लभ पदार्थोंकी प्राप्ति कार्य सिद्धि होगी ।

(१६) जो शुक्र आरूढ उदय छत्रमें हो तो यश और द्रव्यकी प्राप्ति, शत्रुपर जय, रोगसे निवृत्ति, स्त्रीकी प्राप्ति और हरएक प्रकारके ऐश्वर्यकी वृद्धि कहना ।

(१७) बुध उदयारूढ छत्र लग्नमें हो तो शत्रु नष्ट कार्यहो रोगसे निवृत्ति शत्रुसे संधि और कार्य सिद्धि हो ।

(१८) यदि सूर्य मंगल शनि उदयारूढ छत्र लग्नमें हो तो द्रव्य नाश रोगोत्पत्ति मृत्यु और विपत्ति होती है ।

(१९) यदि राहु उदयारूढछत्रमें हो तो घात, चोरी, विषजन्य तथा अग्निजन्य पीड़ा और मृत्यु तथा अनेक विपत्तियाँ हों ।

(२०) जो उच्चक्षेत्री ग्रह उदयारूढ़ छत्र लग्नको देखे तो कार्य सिद्धि दुर्लभ पदार्थोंका लाभ होगा परन्तु जो शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री होकर पूर्वोक्त लग्नोंको देखै तो कार्यहानि और स्त्रीलाभ तथा दुर्लभ पदार्थोंकी प्राप्ति न हो ।

(२१) स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री ग्रह उदयारूढ छत्रको देखै तो शत्रु संधि करेगा, जो उदयारूढ छत्रद्रष्टा ग्रहोंके मित्र स्वक्षेत्र उच्चक्षेत्र हो तो शत्रुभी मित्र होजावेंगे, स्त्रीलाभ, कई प्रकारके ऐश्वर्य प्राप्त होंगे ।

(२२) जो शत्रुक्षेत्री ग्रह उदयारूढ छत्रलग्नमें बैठे तो उसका फल अधोलिखितहै–मृत्यु, शत्रुके बंधनमें पड़ना, यात्रीका पीछा लौटना न

होवे, गयाधन नहीं मिले और जितनी बातोंके प्रश्न किये जावें उन सबकी अप्राप्ति हो ।

(२३) चन्द्र गुरु केन्द्रमें बैठे तो मृत्यु नहीं होगी, नष्ट हृत द्रव्य पीछे मिलेगा, यदि पापीग्रह केन्द्रमें बैठे तो मृत्यु होगी, द्रव्य नहीं मिलेगा विपत्ति उठानी पड़ेगी ॥

(२४) यदि पापीग्रह सम्पूर्ण केन्द्रमें बैठे अथवा शुभग्रह दशवें या ग्यारहवें घर बैठे तो सब कार्य्योंकी सिद्धि होगी ।

(२५) जो राहु केन्द्रमें बैठे तो बेड़ियाँ पड़े, यात्री नहीं लौटे, द्रव्य-लाभ नहीं होवे, विषया रोगसे मृत्यु होवे, यात्रा नहीं होगी और न कार्य्यसिद्धि होगी ।

(२६) जो चन्द्र उदयलग्नमें होवे शुक्र दशवें घर अथवा गुरु उदय लग्नमें व सूर्य्य दशवें घर हों तो सब कार्य्योंकी पूर्णसिद्धि कहना ।

(२७) जो शुक्र सप्तम या दशम हो तो स्त्री व द्रव्यका लाभ तथा राजकृपा होवे जो इन स्थानोंमें चन्द्रमा होवे तो स्त्रीका लाभ कहना ।

(२८) जो शुभग्रह केन्द्रमें बैठे तो पृच्छकको आधिपत्य प्राप्त होगा सुखी होगा परन्तु जो केन्द्रमें पापी ग्रह हों तो द्रव्यहानि, शत्रु रोग विपत्तिसे पीड़ा होगी ।

(२९) मित्रक्षेत्री व स्वक्षेत्री ग्रह मैत्री व ऐश्वर्यकी प्राप्ति कराते हैं और उच्चक्षेत्री द्रव्य लाभ इत्यादि बातें कराते हैं, शत्रुक्षेत्री ग्रह विपत्ति और शत्रु पैदा करते हैं नीचक्षेत्री ग्रह द्रव्यहानि इत्यादि दुष्टफल करते हैं ।

(३०) सारांश यह है कि, जो प्रश्न कालमें शुभग्रह आरूढ छत्र व केन्द्रमें हो तो कार्यसिद्धि द्रव्यप्राप्ति होगी, जो शुभग्रह बलवान् होगा तो पूर्वोक्त फलमें आधिक्यता होगी, जो यह बलवान् शुभ ग्रह मित्रक्षेत्री

शुभक्षेत्री उच्चक्षेत्री हो तो अत्यन्त कार्यसिद्धि व अनन्त द्रव्य लाभ कहना ।

(३१) जो पापग्रह आरूढछत्र और केन्द्रमें हो तो विपत्ति होगी जो यह पापग्रह बलवान् हो तो आपत्तिको बढावेंगे और जो यह बलवान् पापग्रह शत्रु या नीच क्षेत्री हो तो विपत्तिका अत्यन्त वृद्धि कहना ।

इति श्रीपवाँरवंशावतंस–श्रीमहाराजशम्भुसिंहसुठालियाधीशकृते
भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे शुभाशुभकांडं सम्पूर्णम् ॥

अध्याय सातवां ७.

अथ रोगप्रकरणम्

(१) उदय लग्नसे षष्ठस्थान रोगका है और आठवां स्थान मृत्युका है यह दैवसम्मति है ।

टिप्पणी–भाष्यकारके मतानुसार छठेघरसे छठाघर अर्थात् लग्नसे ग्यारहवां घर रोगका है और अष्टमसे अष्टमघर अर्थात् लग्नसे तीसरा घर मृत्युका है ।

(२) जो रोगभवनमें आरूढ राशि हो अथवा शत्रुक्षेत्री या नीचक्षेत्री पापी ग्रह रोग घरको देखता हो तो बीमारी नहीं जायगी ।

टिप्पणी–जो यह पापीग्रह रोगस्थानमें बैठे तोभी रोग नहीं जायगा परन्तु जो यही ग्रह मित्रक्षेत्री स्वक्षेत्री उच्चक्षेत्री हो तो रोगसे कुछ फुरसत हो जावेगी ।

(३) रोगस्थानमें अथवा आरूढ लग्नमें राहु, धूम, इंद्रधनु हों तो रोगसे निवृत्ति नहीं होगी और शत्रुके आक्रमणसे छुटकारा नहीं होगा, अग्नि तथा विष बाधासे भी नहीं बच सकेगा ।

(४) यदि आरूढ या छत्र अधोदृष्टि राशियां हों और उनको दृष्टि ग्रह तथा पापग्रह देखें तो रोगसे छुटकार नहीं होगा।

टिप्पणी—कर्क वृश्चिक अधोदृष्टि राशियां हैं और बुध शुक्र अधोदृष्टि ग्रह हैं पहिले अध्यायका ९–१० वां श्लोक देखो।

(५) यदि रोग घर या उससे सप्तम स्थानमें पाप ग्रह हों अथवा रोगभवनसे षष्ठ स्थानमें चन्द्रमा हो अथवा पाप ग्रहोंसे दृष्ट चन्द्रमा कहीं भी स्थित हो तो रोगसे छुटकारा न होगा।

(६) जो शुभ ग्रह उदय लग्नमें तथा नवम दशम घरमें हो तो रोग जायगा और यह शुभग्रह शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री होकर पूर्वोक्त स्थानमें बैठे तो किंचित् रोग निवृत्ति होगी परन्तु सम्पूर्ण रोग नहीं जायगा, जो मंगल शत्रुक्षेत्री अथवा नीचक्षेत्री होकर दशम घर बैठे तो रोग चला जायगा परन्तु जो स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री हो तो देखनेमें फुरसतसी जानपड़े परन्तु पूर्ण रोगकी निवृत्ति न होगी।

(७) जो दशमघरमें इन्द्रधनु या परिवेष हो तो रोग नहीं जायगा और यदि इन ग्रहोंमेंसे जो दशमस्थानी चन्द्र बुध गुरु शुक्रसे दृष्ट हो और यह द्रष्टा ग्रह मित्रक्षेत्री स्वक्षेत्री उच्चक्षेत्री हो तो देखनेमें ऐसा मालूम पड़े कि, फुरसत न होगी परन्तु अंतमें पूर्ण रूपसे फुरसती होजावेगी।

(८) रोगभवन या मृत्युभवन पाप ग्रहोंसे युत वा दृष्ट हों तो आराम न होगा और शुभग्रहोंसे युत वा दृष्ट हो तो आराम होगा यह सामान्य मत है।

(९) रोगभवन अथवा चन्द्रराशि ऐसे पापग्रहोंसे युत वा दृष्ट हो जो स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री हो तो रोग चला जायगा और सबसे बलिष्ठग्रहकी जो अवधि है उस अवधिमें रोग जायगा।

(१०) जो रोगभवन या चन्द्र राशि शुभग्रहोंसे युत वा दृष्ट हो और वे स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री हों तो रोगीको उतनेही दिन घड़ीमें आराम होगा जो पहिले अध्यायके ७७–७८ श्लोकमें कही है. यहां जो घटिकायें लिखी हैं ये नियत नहीं हैं घटीके दिन और दिनके महीनेभी हो सके हैं यह ग्रहोंकी अवधि पर असर रखता है ।

(११) मेष शिर है वृष चेहरा है मिथुन कंधे हैं कर्क छाती है सिंह स्तन मुख है कन्या पेट है तुला कांखें हैं वृश्चिक पीठ है धन जांघे हैं मकर घुटने हैं कुम्भ टकने हैं मीन पांव हैं. किसी किसीका यह मत है कि, धन पिछला भाग है मकर पुट्ठे है कुम्भ जांघे हैं औ मीन पांव हैं ।

(१२) मङ्गल मस्तक है शुक्र चेहरा है बुध गर्दन और कंधे हैं चन्द्रमा छाती है, सूर्य उदर है गुरु नितम्ब याने पुट्टे हैं शनि जांघे और राहु टांगे हैं, किसीका यह मत है कि बुध चेहरा है और शुक्र कंधे हैं ।

(१३) उदयलग्नमें जो राशि व ग्रह है उसका जो अंग ऊपर कहा गया तदनुसार उसी अंगमें बाधा कहना । यदि यह ग्रह अथवा उदय लग्नेश शत्रु यानी चरराशिपर बैठे तो रोग सख्त याने भारी कहना जो यदि यह ग्रह स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री हो तो रोग स्वल्प कहना ।

(१४) कृत्तिका शिर है रोहिणी कपाल, आर्द्रा नेत्र, पुनर्वसु नाक, मृगशिरा भौंह, पुष्य चेहरा, आश्लेषा कान, मघा होठ और ऊपरी भाग मुखका, पूर्वाफाल्गुनी दक्षिण बाहु, उत्तराफाल्गुनी वाम बाहु, हस्त अंगुलियां, किसीका यह मत है कि पुनर्वसु चेहरा है, पुष्य ऊपरका होठ आश्लेषा नीचेका होठ ।

(१५) चित्रा गर्दन है स्वाति छाती विशाखा स्तन मुख है अनुराधा उदर है ज्येष्ठा दक्षिणपार्श्व मूल वामपार्श्व पूर्वाषाढा पीठ उत्तराषाढा पुट्ठे श्रवण

मूत्रेन्द्रिय धनिष्ठा गुदा शतभिषा दक्षिणजांघ पूर्वाभाद्रपदा वाम जांघ ।

(१६) उत्तराभाद्रपद घुटने रेवती टकुने अश्विनी पांवका ऊपरी भाग भरणी पांवका तलुवा है, जिस नक्षत्रका प्रश्नकालमें उदयहो उसी नक्षत्रके कथित अंगमें पीड़ा कहना और जिस राशिका वह नक्षत्र है उस राशिका स्वामी जो शत्रुक्षेत्री या नीचक्षेत्री हो तो बीमारी भारी है और जो स्वक्षेत्र मित्रक्षेत्र उच्चमें हो तो बीमारी स्वल्प है ।

(१७) शिरोरोगका और फेनिल अतिसारका यान संग्रहणीका मंगल स्वामी है छातीका दर्द तथा सर्दी जुखामका चन्द्रमा स्वामी है कांख बिलाईका स्वामी बुध है सूर्य उदररोगका स्वामी है ।

(१८) वात और पंगुताका स्वामी शनि है, फेफड़ेका क्षयरोग तथा विषजन्य बाधाका स्वामी राहु है, नेत्ररोगका स्वामी शुक्र है और बवासीर-रोगका स्वामी गुरु है ।

(१९) कुष्ठका स्वामी परिवेष है, बालकोंका क्षयरोग तथा सूखी रोगका स्वामी धूम है उद्वेष्टन रोग अर्थात् बांवठाका स्वामी राहु है पिशाचजन्य पीड़ाका स्वामी सूर्य है, क्षय रोगका स्वामी शनि है और जिस रोगसे खाल निकल जाती है उस रोगका स्वामी मंगल है ।

इति श्रीपवाँरवंशावतंस श्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते
भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे रोगप्रकरणं संपूर्णम् ।

अध्याय आठवाँ ८.

अथ मृत्युप्रकरणम्

(१) वृष सिंह वृश्चिक कुम्भ आरूढ व छत्र लग्न दोनों होवें तो मृत्यु नहीं होगी, जो तुला आरूढ हो और उसका छत्र धन हो तो भारी रोगसे पीड़ा होगी, जो धन आरूढहो और उसका छत्र तुला हो तो मृत्यु होगी ।

(२) मेष आरूढ हो मिथुन छत्र हो तो सख्त बीमारी होगी जो मिथुन आरूढहो व मेष छत्रहो तो मृत्यु होगी, कर्क आरूढहो और कण्या छत्रहो तो सख्त बीमारी होगी जो कन्या आरूढहो और कर्क छत्रहो तो मृत्यु होगी, मकर आरूढ हो और मीन छत्रहो तो सख्त बीमारी होगी जो मीन आरूढ लग्नसे छत्र तीसरा होगा तो सख्त बीमारी होगी और आरूढसे छत्र ग्यारहवाँ होगा तो मृत्यु होगी ।

(३) जो प्रश्नकालमें आरूढ अष्टमघरमें हो और चन्द्रमा उससे अष्टमहो अथवा मृत्युघर या चन्द्रराशि या अंगस्पर्शसे जो राशि ज्ञाति हुई हो इनपर केवल पापग्रहोंकी दृष्टि हो तो रोगसे आराम नहीं होवेगा।

(४) आरूढ या मृत्यु घरको जो ग्रह देखते हैं उनकी जो अवधि वर्ष मास दिन घटीको है उसी अवधिमें मृत्यु कहना ।

(५) यदि प्रश्नकालमें चन्द्रमा उदय लग्नमें हो और पापग्रहोंसे युतहो अथवा उदयलग्नसे छठे आठवें घरमें चन्द्रमा बैठाहो और सातवें घरमें पापग्रह हों तो जो ग्रह चन्द्रमाको देखते हैं उन द्रष्टा ग्रहोंकी जो वर्ष मास दिनकी अवधि है तत्परिमित अवधिमें मृत्यु होगी ।

(६) उदय लग्न दशम घरमें पापग्रह हो और तीसरे घरमें सूर्य हो तो दश दिनमें मृत्यु होगी, यदि तीसरे घरमें गुरु या शुक्र हो तो मृत्यु सात दिनमें होगी ।

टिप्पणी–किसीका यह मत है कि दशम घरसे तीसरा जो घर है उसका यहां ग्रहण है ।

(७) प्रश्नकालमें सूर्य मङ्गल शनि अथवा राहु आरूढसे अष्टम घरमें हो तो मृत्यु आठदिनमें होगी, यदि इनमेंसे कोई भी लग्नमें, आरूढमें, हो तो मृत्यु चौथे दिनमें होगी ।

(८) दूसरे घर, सप्तम घर अथवा दशम घरमें सूर्य मङ्गल शनि, या राहु हो तो मृत्यु तीन दिनमें होगी, दशम घरमें सूर्य या राहु हो और इससे सातवें घर मंगल या शनि हों तो प्रश्नकिया उसी दिन मृत्यु होगी ।

(९) अष्टम घरमें सूर्य हो तो मृत्यु आगसे होगी, चन्द्रसे जल, मंगलसे शस्त्र, बुधसे अतिसार, गुरुसे उदररोग, शुक्रसे हवा ओस या सरदी, शनिसे भूखे मरना और राहु विषसे मृत्यु करता है ।

(१०) अष्टम घरमें स्थिर राशि हो तो स्वदेशमें मृत्यु कहना, चर राशि हो तो परदेशमें मृत्यु होगी और द्विस्वभाव राशि हो तो निकटस्थ देशमें मृत्यु होगी ।

(११) जो सबमें बलिष्ठ ग्रह उच्चस्थ हो तो मरनेके बाद देवयोनिमें जन्म होगा, जो स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री हो तो मनुष्ययोनिमें जन्म होगा, जो और शत्रुक्षेत्री हो तो पशुयोनिमें जन्म होगा, नीचक्षेत्री हो तो पक्षी कीड़ा जलचरमें जन्म होवेगा ।

टिप्पणी–जो सबमें बलिष्ठग्रह अपने उच्च वर्गमें होगा तो मोक्ष होजायगी और फिर जन्म होगा नहीं ॥

इति मृत्युकांडं सम्पूर्णम्

अध्याय नववाँ ९.

अथ भोजनप्रकरणम्

(१) जो कोई यह प्रश्न करे कि मैंने क्या भोजन किया है ? उस समय अधोलिखित बातोंका विचार करना चाहिये भोजन बनाने समय, भोजनकी किस्म, स्वाद, जो पुरुष संग भोजन करने बैठे, पात्र जिनमें भोजन परोसा गया और वह आदमी जो परोसनेवाले हैं इत्यादि ।

(२) जो उदय लग्न मेष हो तो बकरेका भोजन, वृष हो तो पत्ते दूध गव्य रसादिका भोजन कहना, जो मिथुन धन या सिंह हो तो मच्छीका मांस कहना, जो उदय लग्न कर्क वृश्चिक मकर मीन हो तो फल कहना, उदय लग्न तुला हो तो साग कढ़ी कहना, जो कन्या या कुंभ हो तो केवल अन्न कहना और तरकारी रहित कहना ।

टिप्पणी–किसीका यह मत है कि मेषसे पत्र कहना और वृषसे दूध छाँछ करना ।

(३) उदय लग्नमें जो सूर्य बैठा हो स्वाद खट्टा और कहुआ कहना, जो बुध हो तो ठंढे व्यञ्जन कहना अथवा दूसरी बार उबाला हुआ भोजन कहना, गुरु हो तो उत्तम भोजन, राहुसे ज्यादा पका हुआ भोजन, शनिसे पत्तोंकी तरकारी और तेल, मङ्गलसे मांस कहना ।

टिप्पणी–किसीका मत यह है कि बुधसे फल कहना, गुरुसे बहुत प्रकारके व्यञ्जन, शनिसे दलिया, मङ्गलसे गरमकढ़ी या तरकारी और छौंकीहुई तरकारी कहना और जिस ग्रहका जो स्वाद पहिले अध्यायके ५८ वें श्लोकमें कहा है वही स्वाद कहना और जो रंग ग्रहोंका है वही रंग भोजनके धान्यका कहना, वा सबमें बलिष्ठ ग्रहसे फल कहना ।

(४) जो उदय लग्नमें सूर्य और मङ्गल हो तो मांसौदन याने मांस चावलका भोजन कहना, जो चन्द्र शुक्र राहु इकट्ठे किसी राशिपर बैठकर सूर्यको देखें वा युत हों तो भोजन चावल दही दूध घीका मिलाकर कियाहै ।

टिप्पणी–किसीका मह मत है कि जो सूर्यको चन्द्र देखे तो दही मिले चावलका भोजन कहना और शुक्र देखे तो दूध मिले हुए चावल, राहु देखे तो घी मिले चावलका भोजन कहना घृतमें तेलका भी ग्रहण है ।

(५) गुरु उदय लग्नको देखता हो तो काला उड़द, पत्ते, मच्छी और दाल, यदि चन्द्र देखे तो शाक कन्द मच्छी, शुक्र देखता हो तो मधु, दूध और इमलाना, शनिसे ठण्ढा भोजन व ठण्ढे चावल कहना ।

टिप्पणी–किसीका यह मत है कि मकर कुम्भमें जो ग्रह बैठे हों उनसे पूर्वोक्तफल कहना ।

(६) जो उदयलग्न विषम राशि हो तो केवल भोजन कहना और सम हो तो तरकारीसहित भोजन कहना और जो लग्नमें विषम ग्रह हो तो केवल भोजन कहना और समहो तो तरकारीसहित पूर्वोक्तफल कहना, जो शनि और राहु या तो विषम राशिस्थ हों या विषम ग्रहके संयुक्त हों तो भोजन तरकारी सहित कहना, जो सम राशिस्थहों और सम ग्रहसे युक्त हों तो केवल चावल या भोजन कहना ।

(७) जो जल राशियां कर्क तुला मकर कुम्भ मीन इनमें सूर्य मंगल बुध शनि और राहु हो तो तैल संयुक्त भोजन कहना, यदि इन राशियोंमें चंद्र या गुरु बैठेहों तो घृतयुक्त भोजन कहना, जो शुक्र बैठाहो तो मक्खन सहित भोजन कहना ।

टिप्पणी–किसीका यह मत है कि, जो जलराशियोंका है वह चर राशिका है ।

(८) जो पापीग्रह सबमें बली हो तो भोजन चावल तैल संयुक्त कहना और जिस पात्रमें भोजन परसा गया वह खण्डितहै जो शुभग्रह बली हो तो घृत सहित भोजन कहना और पात्र साबित कहना परसनेवालेका रंग ग्रहतुल्य कहना ।

टिप्पणी–भाष्यकारका यह मत है कि पापग्रह अतिबली हो तो भोजन करनेवाले पुरुष या स्त्री दुर्जन हैं और परसनेवाले उनके सम्बन्धी नहीं है और भोजन स्वादिष्ट न होगा परन्तु जो शुभग्रह बली हो तो सब फल इसके विरुद्ध कहना, किसीका यह मत है कि जो सबमें बलीग्रह पुरुष राशिमें हो हो तो घृत तरकारी सहित भोजन कहना और भोजन कहना और भोजन दिनको किया होगा ।

(९) जो सूर्य मंगल शनि और राहु सबमें बलीग्रह हो तो बरतन पुराना कहना, खण्डित कहना, तथा मिट्टीका कहना, शनिसे पात्रका रंग काला कहना,जो चंद्र बुध गुरु शुक्र सबमें बली ग्रह हो तो बरतन नया कहना, भाष्यकारका यह मतहै कि पीतल चांदी सोनेका कहना ।

इती श्रीपवाँरवंशावतंस श्रीमहाराजशम्भुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे भोजनप्रकरणं सम्पूर्णम्

अध्याय दसवाँ १०

अथ स्वप्नप्रकरणम्

(१) प्रश्नलग्न मेष हो तो स्वप्नमें देवदर्शन देवगृहका देखना तथा राजगृहका दर्शन कहना, वृष हो तो पूर्वोक्त मकानोंमें चलना फिरना होगा, मिथुनसे देव ब्राह्मण तथा तपस्वीका दर्शन होगा ।

टिप्पणी–दर्शनसे सुनना बात चीत करना इत्यादि बातोंका ग्रहण है चलने फिरनेमें निवास आवागमनका ग्रहण है ।

(२) प्रश्नलग्न कर्क हो तो स्वप्नमें कीचड़में घुसकर दरख्तकी डाली तोड़ता देखे और सूखी व हरी खेतीको देखेगा, यदि सिंह हो तो पहाड़ीके आदमी व पहाड़ तथा पत्थर देखेगा, कन्या हो तो मुंडा स्त्रीके साथ जलपान व क्रीड़ा करेगा, तुला हो तो नृप व्यापारी स्वर्णका दर्शन होगा।

टिप्पणी–किसीका यह मत है कि, प्रश्नलग्न सिंह हो तो युद्ध व भैंसाका दर्शन हुआ होगा और तुलासे कन्याका दर्शन कहना।

(३) प्रश्नलग्न वृश्चिक हो तो बैल घोड़े प्यादेके दर्शन कहना, धन हो तो पुष्प सुगंध रत्न इनका दर्शन कहना, मकरसे मनुष्य और स्वर्णका दर्शन होगा, कुंभसे नदियोंका दर्शन कहना।

टिप्पणी–किसीका यह मत है कि, जो प्रश्नलग्न वृश्चिक हो तो स्वप्नमें विच्छू और पशु देखेगा धन हो तो विधवा स्त्री तथा मनुष्योंको देखेगा मीन हो तो मच्छीका स्वप्न आयेगा।

(४) जो उदयलग्नमें शुक्र हो तो सुपेद मकानात देखेगा, बुध हो तो देवदर्शन होगा इसी तरह आरूढ़ छत्र तथा उनपर स्थित ग्रहोंसे स्वप्नका फल कहना।

टिप्पणी–किसीका यह मत है कि, जो बुध प्रश्नलग्नमें हो तो स्वप्न राक्षस तथा राजपुरुषोंका कहना, बुध शुक्रको छोड़कर अन्य ग्रह लग्नमें हो तो जो स्वक्षेत्री लग्नस्थ ग्रहका फल है वही जानना।

(५) उदय लग्न तथा उसपर स्थित ग्रहसे जो फल कहा जाता है वह भूतस्वप्न तथा भावीस्वप्न दोनोंका समझना चाहिये।

(६) लग्नसे चतुर्थस्थानमें शुक्र हो तो स्वप्न चाँदीके जेवर तथा मोती इत्यादिका देखेगा, जो राहु या मंगल हो तो मांसदर्शन, गुरुसे फल तथा राजपुरुषोंका दर्शन, शनिसे पशुओंका दर्शन, बुध हो तो प्रवा-

हमें तैरना तथा वृक्षोंकी कोचरका देखना और उपवास करना इतनी बातें कहना, स्वक्षेत्री ग्रहका भी यही फल है ।

(७) जो चतुर्थ घरमें सूर्य्य हो तो स्वप्नमें यह देखेगा कि सूखा वृक्ष खुदपर गिरा है और मृतक पुरुष जी उठा है और खुद मृतकके सामने, जो जी उठा है सो रो रहा है, जो चन्द्रमा हो तो ऐसा स्वप्न आय कि देखनेवाला खुद मरगया है और तृषावंत है या निद्रा आरही है, सूर्य्य चन्द्रके चतुर्थ होनेमें जो इन्होंकी राशिका फल है सो इनका भी कहना ॥

(८) जो कोई यह पूछे कि, हमको कौनसा स्वप्न आवेगा ? तो इसका फल प्रश्नलग्न तथा उसपर स्थित ग्रहसे कहना और जो यह पूछे कि हमको कौन स्वप्न आया है ? तो उसका फल चतुर्थ घर व उस पर स्थित ग्रहसे कहना और अब उसका स्मरण भी नहीं रहा तो उसका उत्तर सप्तम घर व उसपर स्थित ग्रहसे कहना जो स्वप्न जाग्रत अवस्थामें आया है उसका फल दशम घर तथा दशमस्थ ग्रहसे कहना ।

इति स्वप्नकाण्डं सम्पूर्णम्

अध्याय ग्यारहवाँ ११.

अथ शकुनप्रकरणम्

(१) जो प्रश्नलग्न द्विस्वभाव हो तो कोई शकुन नहीं मिलेंगे, यदि हो तो विरुद्ध शकुन मिलेगा और चर लग्न हो तो अनुकूल शकुन मिलेंगे जो प्रश्नलग्न स्थिर हो तो यात्रा न होगी ।

टिप्पणी—जो लग्न चर हो तो यात्रा होगी और द्विस्वभाव हो तो थोड़ी दूर यात्रा होकर पुनः लौट आना होगा यह भाष्यका मत है ।

(२) सूर्य्य अतिबली हो तो श्येन और गरुड़पक्षीका शकुन होगा, चंद्र हो तो उल्लूका दर्शन होगा व कपोत और नीलकंठका, बुध हो तो खूसर बंदर, बिल्ली, खरगोश, सूअर, हिरन खंजन, काक, कुररी, तोता, मैना इत्यादिके शकुन कहना, जो शनि या राहु हो तो कौवा, लाल सांप, बंदर, शृगाल, कुत्ता, बिल्ली, खरगोश, सूअर, हिरन, गधा, घोड़ा, खंजन इनके दर्शन कहना।

(३) यदि मंगल सबमें बली हो तो भारद्वाज और खंजनके दर्शन कहना, जो बृहस्पति हो तो तीतर क्रकणपक्षी, कपोत कहना, शुक्र हो तो तीतर बगुला और किलकला कहना ॥

(४) जो प्रश्नलग्नमें सूर्य्य हो तो लालगरुड़का शकुन होगा, चंद्रसे मच्छी मंगलसे शृगाली और बुध हो तो बिनाजमा दहीका पात्र, गुरु हो तो घृतका पात्र, शुक्रसे दूधपात्र, शनिसे अग्नि और शत्रुके दर्शन और राहुसे नपुंसक और सर्पके दर्शन कहना ॥

टिप्पणी–किसीका मत है कि, यदि प्रश्नलग्नमें चन्द्र हो तो काकबलि, बृहस्पति हो तो सुनहरी रंगका पक्षी, शनि हो तो चोर नीचपुरुष तेली और राहु हो तो गृह छिपकली अथवा श्वानके दर्शन कहना।

(५) जो सबमें बली ग्रह हो उनसे शकुन कहना और वे ग्रह जो इनको देखें अथवा प्रश्नलग्न जिन ग्रहोंसे युत व दृष्ट हो उनसे शकुन बताना दक्षिण लांछन भागी ग्रह हो तो दाहिनी तरफ शकुन मिलेंगे, जो वाम लांछन भागी ग्रह हो तो वाम तरफ शकुन मिलेंगे।

टिप्पणी–पहिले अध्यायका ६० वां श्लोक देखो, भाष्यकारका यह मत है कि, मनमें विचारे हुए शकुनको प्रगटकरना हो तो आरूढ़ लग्नसे कहना और होनेवाले शकुनोंको उदय लग्न कहना।

इति श्रीपवांरवंशावतंस–श्रीमहाराजशम्भुसिंहसुठालियाधीशकृते
भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रन्थे शकुनकाण्डं सम्पूर्णम्

अध्याय बारहवाँ १२.

अथ विवाहप्रकरणम्

(१) जो प्रश्नलग्नमें सूर्य या मङ्गल हो तो जिसके निस्बत प्रश्न हुआ है वह विधवा हो जायगी, जो चन्द्रमा हो तो बाल्यावस्थामें मरेगी, यदि बुध गुरु शुक्र हों तो वह सुमङ्गली होगी, शनिसे वंध्या और राहुसे मृत-प्रजा होगी ।

टिप्पणी-किसीका यह मत है कि, शनि और राहु लग्नस्थ हो तो दीर्घ काल-तक वन्ध्या रहकर फिर सन्तति होगी और वह सन्तति नष्ट हो जावेगी ।

(२) दूसरे घरमें सूर्य मङ्गल शनि या राहु हो तो स्त्री विपत्तिग्रस्त रहेगी, चन्द्रसे बहु प्रजावाली और बुध गुरु शुक्रसे सर्व सुखोंसे युक्त रहेगी।

(३) यदि तीसरे घरमें सूर्य या राहु हो तो दीन और वन्ध्या होगी। बाकीके छःग्रहोंमेंसे कोईभी लग्नस्थ हो तो सब प्रकारसे सुखी होगी, मङ्गल बुध गुरु शुक्रसे विशेष होगी ।

(४) जो चौथे घरमें सूर्य या चन्द्र हो तो स्त्री पाप कर्म करेगी, मङ्गल बुध गुरु शुक्र हो तो सब प्रकार सुखी रहेगी, शनि हो तो दुग्धरहित होगी और राहु हो तो उसपर सौत आवेगी चाहे वह सौत धृता हो या व्याहता ।

(५) जो पंचम घरमें सूर्य चन्द्र हो तो वह पतिसहवास न करेगी, यदि मङ्गल हो तो बहु प्रजावाली होगी और बुध गुरु या शुक्र हो तो बहु प्रजावाली होगी, शनि हो तो रोगपीड़ित होगी और राहु हो तो युवाव-स्थामें मरजावेगी ।

(६) छठे घर सूर्य मंगल गुरु शनि या राहु हो तो स्त्री द्रव्यवाली. सुखयुक्ता होगी, चन्द्र हो तो विधवा होगी,बुध हो तो कलह प्रिया होगी, शुक्र हो तो दीर्घजीवी और सुमंगली रहेगी ॥

(७) सप्तम घरमें सूर्य या चन्द्र हो तो स्त्री रोगी रहेगी और मङ्गल हो तो कारागारवास करेगी बुध और गुरु हो तो भाग्यवती होगी शुक्र हो तो युवावस्थामें मरेगी शनि और राहु हो तो विधवा होगी ।

(८) अष्टम घरमें सूर्य मङ्गल हो तो विधवा होगी, चन्द्र हो तो युवावस्थामें मरेगी, बुध शनि हो तो कुटुम्बवाली होगी और गुरु शनि राहु हो तो मृतप्रजा होगी ।

(९) नवमघरमें सूर्य मङ्गल हो तो स्त्रीके दूध नहीं निकलेगा, चन्द्र या गुरु हो तो उसके पुत्र पुत्री दोनों होंगे, बुध हो तो रोगी रहेगी, शुक्र हो तो उसके पुत्र होगा, शनि या राहु हो तो वंध्य रहेगी ।

(१०) दशम घरमें सूर्य या बुध हो तो स्त्री सब प्रकार सुखी रहेगी, चन्द्र हो तो निरपत्य रहेगी, मंगलशनि या राहु हो तो विधवा रहेगी, गुरु हो तो निर्धन रहेगी, शुक्र हो तो वेश्या होगी ।

(११) जो ग्यारहवें घरमें सूर्य हो तो स्त्री समृद्धिवाली होगी, जो चन्द्र गुरु शुक्र शनि या राहु हो तो वह ऐश्वर्यवती तथा वह पुत्र कन्यावती होगी और जो मंगल या बुध हो तो दीर्घ कालतक सुमंगली रहेगी ।

(१२) जो बारहवें घरमें सूर्य या राहु हो तो स्त्री निरपत्य रहेगी, चन्द्र हो तो शीघ्र मरेगी, मंगल या शनि हो तो वह शराबी हो जायगी, बुध हो तो उसके पुत्र होंगे, गुरु हो तो द्रव्यवाली होगी और शुक्र हो तो सर्व सुखसे सम्पन्न रहेगी ।

टिप्पणी विवाह प्रश्नोंके कहनेमें जो प्रश्नलग्न आरूढ़भी हो तो उक्त फल अत्यंत दृढ़ताके साथ कहना क्योंकि प्रश्नलग्न आरूढ़ होनेसे और भी बली हो जावेगी ।

इति श्रीपवाँरवंशावतंसश्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रन्थे विवाहकांडं सम्पूर्णम्

अध्याय तेरहवाँ १३.

अथ दंपतिप्रीतिप्रकरणम्

(१) इस प्रकरणमें हम इतनी बातोंका विवरण करेंगे. परस्पर प्रीति दंपतियोंमें स्नेहभंग, स्त्रीका पातिव्रत्य, उसका व्यभिचार इत्यादि बातें ।

(२) जो भार्याके आचारणसम्बन्धी प्रश्न करे उस समय केन्द्र राहुसे युत वा दृष्ट हो तो स्त्री व्यभिचारिणी होगी चाहे देवांगना क्यों न हो ।

(३) जो चन्द्रमा सूर्य मंगलसे दृष्ट या युत हो तो स्त्री परपुरुषोंमें आसक्त होवेगी ।

(४) जो प्रश्न लग्नसे चंद्रमा तीसरा, सप्तम, दशम, एकादश स्थित होकर गुरुसे युत वा दृष्ट हो तो भार्या पतिव्रता होगी ।

(५) पूर्वोक्त अशुभ योगोंमें जो चंद्रमा नीचक्षेत्री वा शत्रुक्षेत्री होकर शत्रुक्षेत्री या नीचक्षेत्री ग्रहसे दृष्ट हो तो स्त्री अतिशय न व्यभिचारिणी होगी, जो पूर्वोक्त शुभयोगोंमें चंद्र मित्र उच्च स्वक्षेत्री होकर उच्च मित्र स्वक्षेत्री ग्रहसे दृष्ट हो तो अतिशय न पतिव्रता होगी ।

(६) जो अशुभग्रहसे चंद्रमा युत वा दृष्ट हो तो भार्या पतिसे स्नेह न करेगी, जो वे अशुभग्रह नीच या शत्रुक्षेत्री हों तो भार्या बिलकुलही स्नेह न करेगी, जो शुभग्रहसे चंद्रमा युत वा दृष्ट हो तो भार्या पतिसे प्रेम करेगी, जो वे शुभग्रह मित्र उच्च स्वक्षेत्री हों तो अत्यंतही स्नेह रक्खेगी ।

(७) जो चंद्रमा गुरुके क्षेत्रमें तथा स्त्री ग्रहोंके क्षेत्रमें हों तो स्त्री पतिसे प्रेम करेगी ॥

(८) जो आरूढलग्न बारहवें या छठे घर हो तो जिस भार्याके निस्बत पूछा गया है वह विधवा होजायगी और जो पतिके निस्बत पूछा गया हो तो वह पुरुष विधवाका पुत्र होगा जो आरूढ़ लग्न या उससे सातवां घर शुक्रका क्षेत्र हो तो पुरुष शूद्र होगा और बुधका क्षेत्र हो तो वैश्य होगा।

टिप्पणी—जो और अन्य ग्रहोंका क्षेत्र हो तो उस ग्रहकी जाति कहना १ अध्यायका ४३ वाँ श्लोक देखो।

(९) प्रश्नकालमें शुक्र मंगल शामिल हों तो पृच्छकने सजातिकी विधवाके साथ गमन किया है और दुःखित हुआ है, यदि सूर्य शुक्र इकट्ठे हों तो राजपत्नीसे गमन किया है।

(१०) जो चन्द्रमा शत्रु क्षेत्री हो तो पृच्छकने शत्रु सम्बन्धीस्त्रीसे गमन किया है, यदि मित्र क्षेत्री हो तो मित्र सम्बन्धी स्त्रीसे गमन किया है, यदि नीच क्षेत्री हो तो नीच जातिकी स्त्रीसे गमन किया है।

(११) जो चन्द्रमा स्वक्षेत्री हो तो स्वकुटुम्बकी स्त्री या स्वभार्यासे गमन कहना, जो उच्च क्षेत्री हो तो उच्च कुलकी स्त्रीके साथ गमन कहना, जो चन्द्र नीच या शत्रु क्षेत्री हो तो वेश्यासे समागम किया है।

(१२) जो उदयलग्न या उसपर स्थितग्रह विषम हों तो एक बार समागम हुआ है जो सम हों तो दो बार समागम अथवा लग्नस्थ ग्रहोंकी संख्या तुल्य रतिगणना कहना या जो सबमें बली ग्रह हो और उसकी जितनी किरणे हैं उतनी बार समागम कहना।

(१३) यदि चन्द्र और मंगल उदय लग्नमें हों तो पृच्छकने वेश्याके साथ सकलह मैथुन किया है जो चन्द्र उदय लग्नस्थ शुक्र या शनिसे युक्त हो तो पृच्छकने स्वभार्यासे सकलह रति किया है।

(१४) जो उदय लग्नमें तृतीय, चतुर्थ, सप्तम घरमें चन्द्र और शुक्र हो तो पृच्छकने स्व स्त्रीके साथ कहल किया है और उसके वस्त्र फाड़े हैं।

(१५) जो उदय लग्न या पञ्चम सप्तम नवम घर चन्द्र और शनिसे युत वा दृष्ट हो तो स्वप्नमें किसी स्त्रीसे रति किया है।

(१६) जो चन्द्रमा उदयलमें और मंगल दूसरे घर हो अथवा मङ्गल लग्नस्थ चन्द्र वा द्वितीय घरको देखे तो चोरके डरसे सारी रात्रि निद्राभंग रही होगी।

(१७) सातवें घरमें पाप ग्रह हों दशम मङ्गल और तृतीय बुध हो तो पृच्छक अव्यवधान बिछोनारहित कोरी जमीने (भूमि) पर किसी वादग्रस्त प्रश्नपर वादविवाद करके मनोद्वेग सहित सोया है।

इति पवाँरवंशावतंस- श्रीमहाराजशम्भुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे दम्पतिप्रीतिकाण्डं सम्पूर्णम्

अध्याय चौदहवाँ १४.

अथ सन्तानोत्पत्तिप्रकरणम्

(१) जब स्त्री यह प्रश्न करे कि मेरे पुत्र होगा या नहीं ? उस समय उदय लग्न या आरूढ़लग्न (भाष्यकारके मतानुसार चौथा पाँचवाँ नवां) घरमें राहु हो तो स्त्री गर्भवती कहना चाहे गर्भ एकरात्रिकाही हो गर्भ अवश्य है।

टिप्पणी–कई आचार्योंका ऐसा मत है कि जो राहु सूर्य संयुक्त हो तो स्त्रीके आगामी किसी कालमें गर्भ रहेगा जो मंगलसे युक्त हों तो जब मङ्गल दूसरी राशिपर प्रवेश करेगा तब आधान रहेगा।

(२) प्रश्नकालमें जो चन्द्रमा उदयलग्नमें (टीकाकारके मतानुसार आरूढ़ लग्नमें भी) शुभग्रहोंसे युक्त बैठे तो सन्ता-

नोत्पत्ति होगी परन्तु जो चन्द्रमा तीसरे पांचवे नवें घर सूर्य या शुक्रसे युक्त बैठे तो सन्तानका जन्म नहीं होगा।

(३) जो गुरु उदय लग्नमें या आरूढ अथवा पांचवें सातवें घर बैठे तो सन्तान होगी और जो गुरु मित्र उच्च स्वक्षेत्री हो तो सन्तान चिरजीवी होगा जो गुरु शत्रु या नीचक्षेत्री हो तो सन्तान युवा अवस्थामें मर जावेगा।

(४) जो उदय लग्न (भाष्यकारके मतसे आरूढलग्न) पर परिवेष, राहु चन्द्र गुरु इनसे युक्त होकर बैठे हो तो सन्तान होवेगी साथ बैठने वाला ग्रह पुरुषग्रह हो तो पुरुष सन्तान और स्त्रीग्रह हो तो स्त्री संतान होगी।

टिप्पणी- संख्या रंग और अन्य बातें संतति सम्बन्धी इन्ही ग्रहोंसे कहना।

(५) जो सूर्य उदय लग्नसे तीसरे छठे सातवें दशवें ग्यारहवें घरहो तो पुत्र जन्म होगा, जो इन पांचों घरोंमें किसी घरमें चन्द्रमाबैठे तो कन्याका जन्म कहना, सातवें घरमें चन्द्रको छोड़कर शेष शुभ ग्रह बैठें तो पुत्र जन्म होगा और सूर्यको छोड़कर शेष पाप ग्रह बैठें तो कन्याका जन्म होगा॥

टिप्पणी-जो विषम राशि शुभग्रह या विषम ग्रह युक्त हो तो पुत्र जन्म होगा और समराशि अशुभ ग्रह या समग्रहसे युक्त हो तो कन्या होगी।

(६) जो प्रश्नकालमें विषम नक्षत्रका उदय हो तो पुत्रजन्म और सम नक्षत्रका उदय हो तो कन्याजन्म कहना, अश्विनीसे एक एक नक्षत्र बीचमें छोड़कर जैसे अश्विनीसे कृत्तिका मृगशिर इत्यादि ये नक्षत्र विषम हैं और भरणीसे एक एक नक्षत्र छोड़कर जैसे भरणी रोहिणी आर्द्रा इत्यादि नक्षत्र सम हैं।

टिप्पणी-किसीका यह मत है कि, चन्द्र व शनि और उदय लग्नेश विषम राशिस्थ हो तो पुत्रजन्म होगा, जो सम राशिस्थ हो तो कन्या जन्म होगा।

(७) जिस दिन और घड़ी पलमें चन्द्रमा आरूढ लग्नसे सप्तम घरमें प्रवेश करेगा उसी दिन व उसी घड़ी पलमें सन्तानका जन्म होगा ।

टिप्पणी–यह प्रश्न सन्तान होनेवाले मासमें। करना चाहिये ।

(८) जो गर्भवती स्त्री गर्भसम्बन्धी प्रश्न आकर करे उस समय उदयलग्न या आरूढलग्न परिवेष ग्रहसे युक्त हो तो गर्भपात होगा और जो उदय या आरूढ लग्नसे अष्टम घरमें परिवेष चन्द्र दोनों हों तो उसीके साथ स्त्रीका मरण भी होगा ।

टिप्पणी–भाग्यकारका यह मत है कि, जो केवल चन्द्रमाही शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री हो तो स्त्रीका मरण होगा, जो चन्द्रमा मित्र उच्च स्वक्षेत्री हो तो स्त्री मरे नहीं केवल प्रसवयातनाही भुगत लेवे ।

(९ प्रश्नकालमें जो अशुभग्रह उदय लग्न, सप्तम, अष्टम, दशम, द्वादश घरमें हों और गुरु तथा अन्य शुभग्रह केन्द्रवर्तियोंसे दृष्ट न हों तो बालक उत्पन्न होतेही मर जायगा ।

टिप्पणी–भाष्यकारका यह मत है कि, उपरोक्त ग्रह शत्रु या नीच क्षेत्री हो तो केन्द्रवर्तियोंका मतलब यह है कि द्रष्टाग्रह बलवान् होना जो शुभग्रह पापग्रहको देखे तो बालककी मृत्यु न होगी ।

(१०) प्रश्नमें या जन्म कालमें सूर्य अष्टम घरमें हो और मंगल या शनि सूर्यसे अथवा उदयलग्नसे अथवा उदयलग्नसे सप्तम घरमें हो तो ऐसे योगमें बालक जन्मते ही मर जायगा परंतु योगकारी ग्रह जो बली शुभ ग्रहोंसे न देखे गए हों तो पूर्वोक्त योग कहना ।

(११) जो चन्द्रमा उदय लग्नमें होय मंगल अष्टम होय चन्द्रमासे और इसी लग्नस्थ चन्द्रसे शुक्र या शनि नवम होंय और योगकारक इसी बली शुभ ग्रहोंसे दृष्ट न होंय तो बालक जन्मतेही मरेगा ।

(१२) जो चन्द्रमा पापग्रहोंसे दृष्ट होय अथवा लग्न अथवा आरूढसे शनि छठा आठवाँ होय तो बालक चार दिनमें मरेगा।

टिप्पणी–भाष्यकारके मतसे जैसे उदय और आरूढसे कहा इसी तरह चन्द्राक्रांत राशिसे कहना।

(१३) जो चंद्रमा उदय लग्नमें होय और बुध अष्टम होय पापग्रह चतुर्थ अष्टम होय तो बालक चार या आठ दिनमें मरेगा।

(१४) जो पापग्रह छठे आठवें बारहवें होय और बुध गुरु शुक्रसे अदृष्ट होंय तो बालक एक महीनेमें मरेगा।

(१५) जो पापग्रह उदय लग्नसे आठवें बारहवें होय और शुभ ग्रहोंसे दृष्ट न होय तो बालक एकवर्षमें मरेगा और उसके माता पिता सगोत्रियोंको तकलीफ होगी।

(१६) चन्द्रमा लग्नमें होय पापग्रह केंद्रमें अथवा दूसरे आठवें होंय तो बालक एक वर्षमें मरेगा।

(१७) जो शुभग्रह चन्द्रको न देखें पाप ग्रह उदय लग्नमें अथवा सप्तम होवें अथवा वे पापीग्रह चन्द्रके साथ होंय तो बालक एकवर्षमें मरेगा।

(१८) उदय लग्नसे अष्टम मंगल अथवा नवम सूर्य होय या बारहवां शनि होय और वे पापग्रह शुभ ग्रहोंसे दृष्ट न होकर शत्रु क्षेत्र नीचक्षेत्रमें होंय तो दो वरसमें बालक मरेगा।

(१९) जो तीन पापग्रह शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री होकर दूसरे घर होंय तो बालक मरेगा चाहे योगकारक ग्रह शुभग्रहोंसे दृष्ट होंय चाहे न होंय।

(२०) जो पापग्रह उदय लग्नसे तीसरे आठवे होंय तो बालक मरेगा जो ये ग्रह षष्ठाष्टम गृहमें स्थित चन्द्रको देखें तो बालक मरेगा।

(२१) मंगल या शनि सूर्यको देखें तो बाप मरे या बीमार पड़े, भौम अथवा शनि चन्द्रको देखे तो मा मरे या बीमार होय, जो बृहस्पति सूर्य या चन्द्रको देखता होय तो मा बाप मरनेसे बचें ।

टिप्पणी-जो सूर्य मित्रक्षेत्र स्वक्षेत्री भी उच्चक्षेत्री होय तो बाप फकत बीमार होवे मरे नहीं, इसी प्रकार चन्द्रका भी जानना चाहिये ।

(२२) जन्म कालमें उदय लग्नसे पांचवें घरमें सूर्य होंय तो उस बालकका बाप मरेगा, चन्द्रमा पंचम होवें तो मा मरेगी, शनि होय तो बालक मरेगा, शुक्र पंचम होवे तो बालकके सम्बन्धी मरेंगे ।

टिप्पणी-ब्रह्म श्री सीताराम जोशीके मतानुसार ये सब बातें प्रश्नसे कहना और इन्ही ज्योतिषीका यह मत है कि जो पंचम घर खाली होय तो आरूढ लग्नसे पंचम देखना, उससे भी खाली होय तो छत्र लग्नसे देखना सो वास्तवमें ज्योतिषीके मतानुसार बहुतसे ऐसे योग हैं कि इस अध्यायमें जन्मकाल तथा प्रश्नकालसे सम्बन्ध रखते हैं ।

(२३) उदयसे छठे या दशम घरमें क्षीणचन्द्र अथवा शत्रु क्षेत्री चन्द्र वा नीचक्षेत्री चन्द्र होय तो बालककी माता मरेगी, जो सूर्यहोवे तो बालकका पिता मरे, शनि होय तो बालक मरे और मंगल होय तो बालकका भाई मरेगा परन्तु ये ग्रह नीच या शत्रुक्षेत्री होंय तो उक्त फल कहना ।

(२४) जो मंगल और शनि चन्द्रमासे सप्तम हों तो मा मरेगी, जो सूर्यसे सप्तम मङ्गल शनि होवें तो पिता मरे, उदय लग्नसे दूसरे बारहवें मंगल शनि और राहु होवें तो बालक मरे ।

(२५) मंगल शनि चन्द्रसे सप्तम होंय तो मा बीमार पड़े, शनि मंगल सूर्यसे सप्तम होंय तो पिता बीमार होय, चन्द्रसे शनि मंगल दूसरे बारहवें होंय तो मा मरेगी तथा सूर्यसे शनि मङ्गल दूसरे बारहवें होंय तो पिता मरे ।

(२६) जो जन्मकालमें वा प्रश्नकालमें पुष्य अथवा पूर्वाषाढा नक्षत्रके दूसरे या तीसरे चरणका उदय होय तो पिता मरेगा, जो उत्तरफाल्गुनी या चित्राका प्रथम द्वितीय चरणका उदय होय तो मा मरेगी, जो सूर्य शुक्र या शनि पूर्वाषाढाको या पुष्यको देखें तो बालक पिताके पूर्व मरे, यही ग्रह उत्तराफाल्गुनी या चित्राको देखें तो माताके प्रथम बालक मरे।

टिप्पणी–भाष्यकारका यह मत है कि, पूर्वोक्त चार नक्षत्रोंके पहिले चरणका उदय होय तो बालकका बाप मरेगा जो दूसरे चरणका उदय होय तो बालककी मा मरेगी, तीसरे चरणला उदय होय तो खुद बालक मरे, चौथे चरणका उदय होय तो बालकके कुटुंबी मरें।

(२७) जन्म या प्रश्नकालमें पुष्य या पूर्वाषाढा उदय होय और ये सूर्यसे दृष्ट होंय तो बालकका पिता मरे, बुधसे दृष्ट होय तो मा मरे, शुक्रसे दृष्ट होंय तो बालक मरे, मंगलसे दृष्ट होय तो बालकके मामा आदि कुटुंबी मरें।

टिप्पणी–भाष्यकारका यह मत है कि, उदयलग्न सिंह होय तो और सूर्यसे दृष्ट होय तो बालकका बाप मरे, मिथुन कन्या लग्न होय और बुधसे दृष्ट होय तो बालककी मा मरे, वृष या तुला लग्न होय और शुक्रसे दृष्ट होय तो बालक मरे, मेष था वृश्चिक लग्न होय और मंगलसे दृष्ट होय तो बालककी कुटुम्बी मरे।

(२८) राहु गुरुसे दृष्ट न होकर लग्नमें होय तो बालक मरे, चन्द्र गुरुसे दृष्ट न होकर दूसरे छठे आठवें बारहवें घर होय और उस चंद्रसे सप्तम घर पापग्रह होंय तो बालक और मा दोनों मरें।

टिप्पणी–भाष्यकारका मत है कि, सूर्य गुरुसे दृष्ट न होकर दूसरे छठे आठवें बारहवें घर होंय और सूर्यसे सप्तम पापग्रह होंय तो बालक तथा उसका पिता मरे।

(२९) चन्द्र लग्नमें होय मंगल सप्तम होय या मंगल लग्नमें चन्द्र सप्तम होय या चन्द्र लग्नमें शुक्र सप्तममें हो या शुक्र लग्नमें चन्द्र सप्तम होय तो माता और बालक दोनों मरें परन्तु ये ग्रह गुरु या अन्य शुभ ग्रहसे दृष्ट न हों तो उक्तफल कहना ॥

(३०) सूर्य लग्नमें शनि सप्तम होय या शनि लग्नमें सूर्य सप्तममें होय और सूर्य लग्नमें और शुक्र सप्तम होय तथा शुक्र लग्नमें और सूर्य सप्तम होय गुरुसे दृष्ट न होय तो बालक तथा उसका पिता मरे ।

(३१) जो उदय लग्नमें चन्द्रमा किसी तीन पापग्रहोंसे (सूर्यको छोड़कर) युक्त हो और वे पापग्रह शत्रुक्षेत्री होंय तो मा और लड़का दोनों मरें ।

टिप्पणी–भाष्यकारका मत है उदय लग्न सूर्य तीन पापग्रहोंसे युक्त हो और वे पापग्रह नीचक्षेत्री या शत्रुक्षेत्री होंय तो बालक और उसका बाप मरे ।

(३२) जो चन्द्रमा लग्नसे छठा होय उस चन्द्रमासे सप्तम पापग्रह-होंय तो मा और लड़का दोनों मरें, चन्द्रमा उदय लग्नसे पञ्चम होय उससे पञ्चम घर पापग्रह होंय तो उसका हाथ टूटेगा जो लग्नसे बारहवाँ चन्द्र होय तो बालक अन्धा होय ।

टिप्पणी–भाष्यकारका मत है कि, जो सूर्य छठा होय उससे पापग्रह सप्तम होय तो बालकका पिता मरे तथा बालक भी मरे ।

(३३) जो सूर्य बारहवें घरमें होय तो बालक दक्षिणनेत्रसे काणा होय चंद्रमा बारहवें घर होय तो वाम नेत्रसे काणा होयगा जो दोनों ग्रह बारहवें होंय तो अन्धा होय ।

(३४) उदय लग्नमें शनि और सप्तम मङ्गल होय अथवा बुध लग्नमें होय और शनि सप्तम होय तो बालक वामन

अर्थात् छोटे कदका होयगा, पूर्वोक्त योगकारक ग्रह पापग्रहोंसे दृष्ट होय तो बालक दूषित अङ्गका होय ।

टिप्पणी–दूषित अंग आठ है अर्थात् छोटा कद १ अन्धा २ लँगड़ा ३ कूबड़ा ४ बहरा ५ गूँगा ६ अंगोंका अशक्त ७, अकालजमें अर्थात् जो नवम मासके पहिले जन्मा है ८, (वामन उसका नाम है कि जिसकी उँचाई दो हाथसे जादे न होय)।

(३५) उदय लग्न अथवा आरूढ़ लग्न गुरु या शुक्रसे दृष्ट न होय और चन्द्रमा सूर्य मंगल शनि राहु इन ग्रहोंसे युक्त होय तो बालक अपने पितासे पैदा नहीं है ।

टिप्पणी–भाष्यकारका मत है कि उदय लग्न या आरूढ़ लग्न गुरु या शुक्रसे दृष्ट न होय चन्द्रमा चाहे सूर्य मंगल शनि राहुसे युक्त होय चाहे न होय तो भी जारजात है ऐसा जानो, जो पूर्वोक्त चन्द्र सूर्यसे युक्त होय तो जार ब्राह्मण या क्षत्रिय है, मंगलसे युक्त होय तो जार वैश्य और शूद्र होय, शनि होय तो शूद्रसे भी नीच जात जार है, राहु होय तो जार चांडाल हैं ।

(३६) जो शुभ ग्रह उच्चक्षेत्री होकर उदय लग्नसे दोनों बाजू बैठे होय या चौथे सातवें दशवें घरमें होंय, एको योगः ॥ और पापग्रह स्वक्षेत्री होकर छत्र लग्नमें होंय या शुभग्रह उच्चक्षेत्री या स्वक्षेत्री होकर उदय लग्नमें होय तो बालक भाग्यवान् होय ।

टिप्पणी–पापग्रह नीचक्षेत्री होकर लग्न दूसरे या बारहवें अथवा चतुर्थ सप्तम दशम होय या शुभग्रह शत्रुक्षेत्री छत्र लग्नमें होंय अथवा पापग्रह शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री होकर लग्नमें बैठें तो बालक अभागी होगा, जो लग्नका फल है वोही चन्द्र और आरूढ़ लग्नका है ।

(३७) जो शुभग्रह उच्चक्षेत्री चन्द्रके आगे हो तो बालक धनवान् होय और ऐसेही ग्रह चन्द्रमाके आगे पीछे होंय तो अपरिमित धनवान् होय ।

(३८) उच्चक्षेत्री शुभग्रह आरूढ़ लग्नके अगले घरमें होय तो बालक गांवका अधिपति जन्मा, जो ऐसे ग्रह दोनों तरफ बैठे होंय तो प्रान्तका

अधिपति होयगा, जो ये योग कन्याके होय तो प्रांताधिपतिकी स्त्री होयगी ।

(३९) जो तीन ग्रह उच्चक्षेत्री होंय या तीन ग्रह शुभ उदय लग्नमें होंय तो सेनापति होय. जो चार ग्रह उच्चक्षेत्री या चार शुभ ग्रह लग्नमें होंय तो प्रांतका शासक हाकिम होय ।

(४०) आरुढलग्नसे उदयलग्नतक गिने जो संख्या आवे उसको दूनी करे और उदयलग्नके दूसरे घरसे मेष राशितक गिने और वृषभसे आरूढके बारहवें घरतक गिने तीनों संख्याओंको जोड़े उस योगमें सत्ताईसका भाग देवे शेष अंक आवे उतनी संख्या अश्विनीसे गिने जो नक्षत्र आवे वही जन्मनक्षत्र है ।

टिप्पणी—भाष्यकार कहते हैं इस तरहसे जो नक्षत्र आवेगा उसीसे दशा उपदशा देखी जायगी ॥

इति श्रीपवाँरवंशावतंसश्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रन्थे सन्तानोत्पत्तिकाण्डं समाप्तम्

अध्याय पन्द्रहवाँ १५.

अथ क्षुरिकाप्रकरणम्

(१) प्रश्नकालमें चन्द्र राहुसे संयुक्त होय अथवा चन्द्र पापग्रहोंसे दृष्ट होय अथवा नीचक्षेत्री शत्रुक्षेत्री ग्रहोंसे दृष्ट होवे तो क्षुरिका भंग होयगा ।

(२) चन्द्राक्रान्तराशि (आरूढ) लग्नमें होय या सप्तममें होय तो छुरीकी मूठ टूटेगी, जो पांचवें घरमें या नवममें होय तो मूठके नीचेसे टूटेगी जो चौथे या दशम घर होय तो बीचमेंसे टूटेगी. तीसरे ग्यारहवें घर होय तो अंतसे टूटेगी ।

टिप्पणी-(अ) राहुसे चन्द्रमा युक्त होय अथवा पापग्रहोंसे दृष्ट होय तो तो पूर्वोक्त योग पूर्ण जानना, जो दूसरे घरमें छठे आठवें बारहवें चन्द्रमा होय तो छुरी टूटे नहीं।

(३) शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री पापग्रह उदयलग्न या आरूढको देखें तो छुरी हाथसे खो जावेगी, जो मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री स्वक्षेत्री शुभ ग्रह उदय या आरूढ लग्नको देखें तो छुरी हाथसे नहीं जायगी।

(४) उदयलग्न या आरूढ चन्द्र गुरु सूर्य्य तीनोंमेंसे किसी ग्रह दृष्ट होय तो छुरी पृच्छककी है, जो उदय आरूढ मंगल शनिसे दृष्ट होय तो छुरी दूसरेकी हैं, जो बुध या शुक्रसे दृष्ट हो तो सार्वजनिक छुरी है और छुरीके मालिककी मृत्यु होयगी।

टिप्पणी-जो दृष्टा ग्रह मित्रक्षेत्रमें होय तो छुरी मित्रकी है जो स्वक्षेत्री होय तो अपनी है उच्चक्षेत्री होय तो बड़े हाकिमकी है जो शत्रु क्षेत्री होय तो शत्रुकी है नीचक्षेत्री होय तो नीच पुरुषकी है।

(५) आरूढलग्नमें पापग्रह होय तो आदमीको घाव आवेगा आरूढमें केवल शुभग्रह होय तो घाव नहीं आवेगा।

टिप्पणी-जो शुभ पाप दोनों हों तो थोड़ा घाव आवेगा।

इति श्रीपवाँरवंशावतंसश्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रन्थे क्षुरिकाप्रकरणं सम्पूर्णम्

अध्याय सोलहवाँ १६.

अथ शल्यप्रकरणम्

(१-२) प्रश्नकालमें जितने पांवडे मनुष्यकी छाया होय उसमें अट्ठाईस मिलाना और उससे तात्कालिक उदयलग्नकी संख्या मिलाना, सर्व योगको बारहसे गुणना और सोलहका भाग देना जितने बचें उससे

फल कहना । जमीनमें खोदनेसे निकले उसका नाम शल्य है । १ बचे तो जमीनमें कपाल निकलेगा २ बचें तो हड्डी ३ बचें तो ईंट ४ बचें तो ठीकरी ५ बचें तो लकडी ६ बचें तो मूर्ति ७ बचें तो राखोड़ी ८ बचें तो कोयला ९ बचें तो मृतकशरीर १० बचें तो नाज ११ बचें तो धन १२ बचें तो पाषाण १३ बचें तों मेंडक १४ बचें तो सींग १५ बचें तो मरा कुत्ता १६ बचें तो मनुष्यके बाल कहना ।

(३) जो शेष बचें उसीके अनुसार शल्य कहना जैसे ४ शेष बचें तो ठीकरीका टुकड़ा कहना इन सोलह शल्योंमें धान्य धन सींग ये तीन शुभ हैं बाकीके अशुभ हैं ।

टिप्पणी–जो सोलह बचें अर्थात् शून्य बचे तो मनुष्यके बाल हैं ऐसा कहना, दूसरा अर्थ यह भी है कि शून्य बचे तो जमीनमें कोई शल्यनहीं है ऐसा कहना, परन्तु पूर्वका मतही श्रेष्ठ है क्योंकि शल्य नहीं मिलनेका योग आगे लिखा है ।

(४) इस शल्यचक्रमें २८ नक्षत्रोंके २८ कोठे हैं प्रत्येक उत्तरसे दक्षिणजानेवाली रेखामें सात सात कोठे हैं और पूर्वसे पश्चिम जानेवाली प्रत्येक रेखामें चार चार कोठे हैं जिस नक्षत्रपर चन्द्रमा हो उस नक्षत्रके कोठेके नीचेकी जमीनमें शल्य है ।

(५–६) सूर्योदयसे दूसरे सूर्योदयतक ६० घड़ी होती हैं इन साठ घड़ियोंमें २८ का भागदेना जो लब्धि आवे वही प्रत्येक नक्षत्रका प्रत्येक कोठेमें ठहरनेका काल है । अब सूर्योदयके समयका चक्र बनानेकी विधि कहते हैं कि पूर्वके तरफ मुख करके बैठना और पूर्वसे पश्चिम जानेवाली ऐसी आठ रेखा खैंचना और इन रेखाओंपर उत्तरसे दक्षिण जाने-वाली पांच रेखा खैंचना ऐसा करनेसे २८ कोठेका एक चक्र बन-

जावेगा, अब इस कोठेमें नक्षत्र धरनेकी रीति यह है कि पूर्ववाली प्रथम रेखामें आदिके दो कोठे जो दक्षिणोत्तरक्रमसे एक दूसरे पर बने हुए हैं छोड़कर तीसरे कोठेमें कृत्तिकानक्षत्र लिखना उसके आगे दक्षिणदिशावाले कोठेमें रोहिणी लिखना इस रोहिणीके आगेके कोठेमें इसीतरह मृगशिर लिखना मृगशिरके नीचे पश्चिमदिशावाले कोठेमें आर्द्रा लिखना फिर आर्द्रासे उत्तरके कोठोंमें पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा ये तीन नक्षत्र क्रमानुसार लिखना फिर आश्लेषाके नीचे मघा पश्चिमके कोठेमें लिखना फिर मघासे आगे दक्षिणके कोठेमें पूर्वा, उत्तरा, हस्त, चित्रा ये चार नक्षत्र लिखना फिर चित्रासे ऊपर पूर्वदिशाके कोठेमें स्वाति, विशाखा ये दो नक्षत्र लिखना फिर विशाखाके आगे अनुराधा लिखना, फिर अनुराधासे आगे शेष तेरह कोठोंमें बाकीके तेरह नक्षत्र प्रदक्षिण क्रमसे स्थापन करना ये चक्र सूर्योदयसे लगाकर २$\frac{3}{8}$ घड़ीके भीतरतकका है। आशय यह है कि ६० घड़ीमें २८ का भाग देनेसे २$\frac{3}{8}$ घड़ी लब्धि आई जो अपनी इष्ट-घटी होय उसमें २$\frac{3}{8}$ का भाग देना जो लब्धि आवे उतनेही नक्षत्र कृत्तिकासे गिनना और इस तरह गिननेसे जो नक्षत्र आवे उस नक्षत्रको उक्तचक्रके उस तीसरे कोठेमें लिखना कि जिसमें अभी हमने कृत्तिका-नक्षत्र स्थापित किया था और फिर सब नक्षत्र पूर्वोक्त क्रमसे चक्रमें स्थापित कर देना।

उदाहरण-जैसे किसीने सूर्योदयात् इष्ट घटिका २५ पर शल्यका प्रश्न किया अब पूर्वोक्त रीत्यनुसार २$\frac{3}{8}$ का भाग २५· घड़ीमें दिया तो ११ खंड व्यतीत होकर १२ खंडमें यह २५ घटी आई अतएव कृत्ति-कासे बारहवां नक्षत्र चित्रा आया अब इस चित्राको तीसरे कोठेमें रखकर नक्षत्र भरना प्रारंभ किये यह चक्र बना जो आगे लिखा जाता है।

अथ सूर्योदयात् इष्टघ० २५ पर शल्यज्ञानार्थ नक्षत्रचक्रम् ॥

उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	उ.भा.	रे.
पू.	पू. षा.	मूल.	ज्ये.	अ.	पू.भा.	अ.
म.	उ. षा.	अभि.	श्र.	ध.	श.	भ.
अ.	पुष्य.	पु.	आ.	मृ.	रो.	कृ,

जो किसीने सूर्योदयात् इष्टघटी२ ½ के भीतर प्रश्न किया तो उस समयका चक्र इसप्रकार बनेगा ।

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	वि.	अ.
रे.	अ.	पुण्य.	पुन.	आ.	स्वा.	ज्ये.
उ.भा.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	मू.
पू.भा.	श.	ध.	श्र.	अभि.	उ.षा.	पू.षा.

इस तरहसे सम्पूर्ण दिनरात्रिमें २८ चक्र बनते हैं नित्यप्रति प्रातः कालको उक्त तीसरे कोठेमें कृत्तिकानक्षत्र आता है और सूर्योदयात् २½ घटीतक ठहरता है फिर इसके आगेका नक्षत्ररोहिणीइसके स्थानपर आता है और वह भी २ ½घटी उस कोठेमें ठहरता है इसी तरह सब नक्षत्र क्रमसे आते रहते हैं यहां अभिजित् नक्षत्रभी लिया गया है अतएव इस चक्रका नाम २८ नक्षत्रोंका कोष्ठक है ।

(७) प्रश्नकालमें जिस नक्षत्रपै चन्द्रमा है और वह नक्षत्र जिस कोष्ठकमें है उसी जगह शल्य है यह बात पहिलेभी कहदी गई है ।

शल्य बतानेका दूसरा प्रकार

(८) प्रश्नकालमें जिस नक्षत्रका उदय होय उस नक्षत्रको आदि मानकर कृत्तिकाके स्थानपर लिखे और पूर्वोक्त क्रमसे चक्रको भरदे। जिस नक्षत्रपर चन्द्रमा है वो नक्षत्र जिस कोष्ठकमें है उसी स्थानपर शल्य है। उदाहरण—जैसे प्रश्नलग्नमें सिंहके बीस अंश गये हैं तो पूर्वाफाल्गुनीका उदय है इस कारण इस नक्षत्रको तीसरे कोठेमें रखकर उक्तविधिसे चक्र भरना प्रारंभ किया तो चक्र इस तरहसे बना, जो आगे लिखा है।

अ.	म.	पू.भा.	उ.भा.	ह.	ध.	श.
पुण्य.	अ.	वि.	स्वा.	चि.	श्र.	पू.भा.
पुन.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	उ.भा.
आ.	मृ.	रो.	कृ.	भ.	अ.	रे.

अब उदयनक्षत्रको जानकर चक्र तो भरदिया परन्तु यह नहीं मालूम कि चन्द्रमा इसवक्त किस नक्षत्रपर है अब पंचांग देखनेसे मालूम हुआ कि चन्द्रमा उस समय अनुराधा नक्षत्रपर है अतएव मालूम हुआ कि चक्रमें जहां अनुराधा है उसी कोठेके नीचे शल्य है ऐसा कहना।

(९) प्रश्नकालमें शुभग्रह केंद्रमें होयँ और पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होंय तो शल्य पृथ्वीमें है जो चन्द्रमा केंद्रमें मंगलसे युक्त वा दृष्ट होय तो भेडकी हड्डी उस कोष्ठकमें है जिस कोष्ठकमें मंगल है।

टिप्पणी—जो पूर्वोक्त शुभग्रह पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट न होंय तो शल्य नहीं ऐसा कहना।

(१०) चन्द्रमा गुरुसे युक्त वा दृष्ट केंद्रमें होय तो ब्राह्मणकी अथवा गायकी हड्डी है या ईंटका टुकडा या सुवर्ण कहना कि जिस कोठेमें गुरु है उस कोठेके नीचे ये वस्तु हैं ।

(११) जो चन्द्रमा केंद्रमें सूर्यसे युक्त वा दृष्ट होय तो देवमूर्त्ति कहना, जिस कोष्ठकमें सूर्य है उस स्थानमें देवमूर्त्तिका शल्य कहना परन्तु चन्द्रमा शनिसे युक्त होय या दृष्ट होय तो शनि जिस कोठेमें है उस नक्षत्रके नीचे भैंसाकी हड्डी है ।

(१२) जो चन्द्र केंद्रमें राहुसे युक्त वा दृष्ट होय तो सांप या सांपकी हड्डी या उसकी वामो उस नक्षत्रके नीचे है जिस नक्षत्रके कोठेमें राहु बैठा है ।

(१३) जो चन्द्रमा केंद्रमें बुधसे युक्त वा दृष्ट होय तो बुधके नीचे कुत्तेकी हड्डी कहना यानी उस नक्षत्रके नीचे हड्डी कहना जिसपर बुध स्थित है । जो चन्द्रमा केंद्रमें शुक्रसे युक्त वा दृष्ट होय तो शुक्र कोष्ट-कके नीचे चांदी कहना ।

(१४) शुभग्रह पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट केंद्रमें होय तो जिस घरके निस्बत शल्यका प्रश्न है उस घरके स्वामीको शल्य नहीं मिलेगा और कार्यहानि तथा धन नाश होगा ।

(१५) प्रश्नकालमें केंद्र पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होय तो विपत्ति पडेगी । राहु मङ्गल सूर्य शनि ये पापग्रह हैं । यदि केंद्र शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट होय तो ऐश्वर्य प्राप्त होयगा ।

टिप्पणी—जो केन्द्रमें शुभ पाप मिश्रित होयँ तो विपत्ति और प्रसन्नता दोनों होयँ ।

(१६) केंद्रघर गुरु शुक्र चन्द्र बुध इनसे युक्त वा दृष्ट होय तो द्रव्य ऐश्वर्य सुख सबकी वृद्धि होय !

(१७) इष्टकालमें दशमघर शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होय तो मालिक मकानको इसस्थानसे सौख्य होय और जो पाप

ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होय तो उस मकानमें देव पिशाच राक्षस आदिका वास होयगा ॥

(१८) शल्यसूचक ग्रहोंकी जो किरणें कही हैं उतने बीता गहरा पृथ्वीमें नीचा शल्य है ॥

टिप्पणी–प्रथम अध्यायके चौवनवें श्लोकमें ग्रहोंके किरणोंका वर्णन है वो ग्रह उच्चक्षेत्री होय तो उसके जितने किरणें हैं उतनेही बीता गहराई जानना, स्वक्षेत्रीग्रह होय तो जितनी किरणें हों उतने हाथ गहरा शल्य है और जो मित्र-क्षेत्री होय तो एक किरण एक पुरुषके बराबर है शत्रुक्षेत्री नीच क्षेत्री ग्रह होय तो बहुत गहराई है ॥

(१९–२०) शंका स्थलकी लम्बाई और चौड़ाई दो हाथके गजसे नापना लम्बाई वा चौड़ाई परस्पर गुणना, गुणनफलमें अट्ठाईसका भाग-देना जो लब्धिआवे वह हाथ है शेषरहें उनको दोसे गुणना और अट्ठा-ईससे भागदेना लब्धि होय सो बीता है फिर शेष रहे उसको चारसे गुणकर अट्ठाईसका भागदेना लब्धि होवे वो गिरह है ॥

टिप्पणी--इसतरहसे जितने हाथ बीता गिरह लब्धि आवे उतनाही गहरा पृथ्वीमें शल्य है ॥

इति शल्यप्रकरणम्

अध्याय सतरहवाँ १७.

अथ कूपखातनिर्णयः

(१) उदयलग्न आरूढ़लग्न और प्रश्नलग्नसे चतुर्थस्थानमें वृषकर्क तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन इनमेंसे कोई होयतो झिरन निकलेगी जो ये राशियाँ आरूढ़लग्न और चतुर्थघर ये चन्द्र या शुक्रसे युक्त वा दृष्ट होंय तो जलकी आमद बहुत है। परन्तु जो ये स्थान बुध या गुरुसे युक्त वा दृष्ट होयँ तो जलकी आमद मध्यम है ॥

(२) उदयलग्न आरूढ़ चतुर्थघर इनमें सूर्य मंगल शनि होंय या देखें तो पृथ्वीमें जल नहीं। जो राहुसेयुक्त वा दृष्ट ये स्थान हैं तो अपारजल है। जो जलग्रह आरूढलग्नमें होय तो झिरन गहरी नीचे निकलेगी। छत्रमें होय तो नजदीक झिरन निकलेगी ॥

टिप्पणी-झिरनसम्बन्धी विशेषबातें योगकारक ग्रह जिस राशिपै बैठे हैं उन राशियोंके स्वभावानुकूल कहना ॥ योगकारकग्रहोंके दिशाके तुल्य झिरनके आनेकी दिशा कहना ॥

(३) राहु उदयलग्नमें होय जलग्रह आरूढमें होय और शेषग्रह छत्रलग्नमें होंय तो झिरन ऊपरही निकलेगी। जो इसके प्रतिकूलहोय अर्थात् जलग्रह छत्रलग्नमें होंय बाकीके ग्रह आरूढ लग्नमें होंय तो झिरन बहुत दूर नीचे निकलेगी ॥

(४) उदय और आरूढ और चौथाघर इनमें जलराशियाँ होंय और इन राशियोंमें जलग्रह होंय तो थोड़े खोदनेसे बहुतजल निकलेगा। जो जलग्रहोंसे पृथक्ग्रह जलराशियोंपर होंय तो बहुत खोदनेसे जल निकलेगा ॥

(५) चन्द्रमा केन्द्र गुरुसेयुक्त वा दृष्ट होय तो जलकी आमद अपरिमित होयगी परन्तु चन्द्र शुक्रसे युक्त वा दृष्ट होय तो परिमित जल निकलेगा ॥

टिप्पणी--झिरन उस कोठेमें निकलेगी जिस नक्षत्रकोष्टकमें गुरु या शुक्र प्रश्नकालमें होयँ ॥

(६) चन्द्रमा परिवेषग्रहसे युक्त वा दृष्ट केन्द्रमें हो तो अपरिमित-जल निकलेगा जो बुध या गुरुसे वो चन्द्र दृष्ट होय या युक्त होय तो पुराना बेकामका जिसे अभीतक किसीने नहीं देखा ऐसा कूँवा निकलेगा ॥

(७) केन्द्रमें शुक्र या चंद्र होय तो जल बहुत निकलेगा। जो इनग्रहोंपर परिवेष धूम्र सूक्ष्म इन्द्रधनुष्य इनकी दृष्टि होय तो पुरानी खाई वा थोड़ेपानीका तालाब निकलेगा ॥

(८) केन्द्र सूर्यसे युक्त वा दृष्ट होय तो नोनवाली खारी जमीन निकलेगी परंतु वोही केन्द्र परिवेषसे युक्त वा दृष्ट होय तो जमीन कड़ी निकलेगी । चंद्र या शुक्रसे युक्त वा दृष्ट होय तो शुद्धजल निकलेगा और यह केन्द्र ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होय तो कीचड़मिला जल निकलेगा ।

(९) केन्द्र मंगलसे युक्त वा दृष्ट होय तो सफेदरंगकी मिट्टी निकलेगी । जो यह बुधसे युक्त वा दृष्ट होय तो कूवेके तटकी मिट्टी खसरीली निकलेगी । जो केन्द्रघरोंमें मिथुन कन्या सिंह ये राशियां होंय तो जमीनमें अगलबगलकी झिरने और कोचेंर निकलेंगी ।

टिप्पणी—भाष्यकारका मत है कि जो ये केन्द्रघर बुधको छोड़ अन्य किसी ग्रहसे युक्त वा दृष्ट होय तो कूवेके किनारे दृष्ट होंगे और पानीका स्वाद ग्रहोंके स्वादमाफिक कहना ।

(१०) जो केन्द्र शनि वा राहुसे युक्त वा दृष्ट हो तो एक ऐसी झिरन निकलेगी जिसमें बहुतसा जल निकलेगा । जो केन्द्र गुरुसेयुक्त वा दृष्ट हो तो पत्थर या चांठ कूँआमें निकलेगी । जो अन्यग्रहोंकी स्थिति दृष्टि केन्द्रमें हो तो हड्डियां लिकलेंगी ।

(११) आगेके श्लोक १२वेंमें कथितानुसार विधिसे झिरनेके गहराई मालूम करना और उस गहराईके तीन खण्ड करना चन्द्रमासे जल प्रथमखण्डमें है यह कहना, बुधसे तीसरे खण्डमें जल है यह कहना, शेष ग्रहोंसे दूसरे खण्डमें जल निकलेगा ऐसा कहना, सूर्यसे ८ हाथ नीचा जलहै और कन्या राशिस्थ राहु हो तो चांठ निकलेगी,शनिसे छोटी पहाड़ी निकलेगी ऐसा कहना ।

(१२) जिस ग्रहसे झिरनेका निर्णय हुआ है उस ग्रहकी जितनी किरणे हैं उनको उस राशिकी किरणोंमें जोड़ना जिसपर यह ग्रह बैठा है

अर्थात् ग्रह तथा तदाक्रांत राशिकी किरणोंको जोड़ना जो योगसंख्या आवे उतनेही बीता नीचे जल है। इन बीताके हाथ कर लेना।

टिप्पणी–पहिले कहचुके हैं कि उच्चक्षेत्री ग्रहसे बीता स्वक्षेत्रीसे उतनेही हाथ मित्रक्षेत्री ग्रहसे उतनेही पुरुष और नीच या शत्रुक्षेत्रीग्रहसे अगाध नीचाजल है ऐसा कहना और शल्यकी गहराई भी इसी तरहसे मालूम करलेना।

(१३) योगकारक ग्रह सूर्य हो तो जिस स्थानपर कुआं खोदना विचारा है उस जगह जंगल है। मंगल या शनि हो तो वह स्थान कांटोंसे ढकाहुआ है, राहु हो तो वह स्थान चींटीकी तथा सर्पोंकी वामियोंसे आच्छादित है, चन्द्र हो तो उस जगह केलाके वृक्ष हैं, बुध हो तो वहां कटहरके वृक्ष हैं, गुरु हो तो नारियल, ताड़, सुपारी, आम इनके वृक्ष कहना, शुक्र हो तो उस जगह लता बेलही है।

(१४) वह लग्न जिससे कुआंकी झिरन निर्णीत हुई है यदि वह उच्चक्षेत्री स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो कुआं मालिकके कब्जमें रहेगा, जो शत्रु नीचक्षेत्री पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो कुआं दूसरेके कब्जेमें चलाजावेगा।

(१५) पूर्वोक्त राशि या चर या द्विस्वभाव हो तो मालिकके कब्जेमें कुआं रहेगा और वह मालिक सुखी रहेगा परन्तु इन राशियोंपर उच्चक्षेत्री स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री शुभग्रहोंकी दृष्टि अवश्य होनी चाहिये। जो ये राशियां इस तरह शुभग्रहोंसे दृष्ट न हों तो स्वामी दुःखी होगा और कुआं किसी दूसरेके अधिकारमें चलाजावेगा। जो स्थिरराशियां योगकारक हों तो मालिक सुखी रहेगा।

(१६–१७) मालिकके घरसे जो कुआं पूर्व आग्नेयकोण या दक्षिणदिशामें हो तो उसकी संतति नष्ट हो जायगी। जो कूप

नैर्ऋत्यकोणमें हो तो सेवकोंकी प्राप्तिहो, पश्चिमदिशामें हो तो शाखा बिगड़े. वाव्ययकोणमें हो तो कुटुम्बकी वृद्धि हो उत्तर दिशामें हो तो धान्यकी वृद्धि हो, ईशानकोणमें हो तो द्रव्यकी प्राप्ति हो, जो घरके मध्यमें कुआं हो तो अनन्तसुख और लक्ष्मीकी प्राप्ति हो, यही फल गांव के तालाबका कहना ।

(१८) पृच्छकसे कहा जावे कि तुम उस जमीनकी शकल हमें बतलाओ ? उस वक्त जो वह अपनी कनिष्ठिका अंगुलीसे बतावे तो कन्याओंकी प्राप्तिहोगी, जो अनामिका अंगुलीसे बतावे तो द्रव्यकी प्राप्ति हो, मध्यम अंगुलीसे बतावे तो फिरना होवे, तर्जनी अंगुली अथवा अंगूठेसे बतावे तो विपत्ति पड़ेगी ।

(१९) मेष वृष मिथुनके सूर्यमें जो कुआँ खोदना आरंभ करे तो जल बहुत निकले, लक्ष्मीकी प्राप्तिहो, जो कार्तिक मासमें अथवा सिंहस्थ सूर्यमें आरम्भकरे तो जल थोड़ा निकले, बाकीके महीनोंमें जो खोदना आरम्भकरे तो थोड़ा जल निकले और विपत्ति आये । भविष्य कहनेमें ग्रहोंका योगायोगभी विचार लेना ।

इति श्रीपवाँरवंशावतंसश्रीमहाराज शंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रन्थे कूपखातकाण्डं संपूर्णम्

अध्याय अठारहवाँ १८.

अथ शत्रु-आगमनम्

(१) जो उदयलग्न चर हो और पंचमघर पापग्रहोंसे युक्त व दृष्ट हो तो शत्रुआगमन कहै अगर उदयलग्न स्थिर हो तो शत्रु अपनी जगह नहीं छोड़ेगा, अगर उदयलग्न द्विस्वभाव हो और पंचमघर मङ्गलसे दृष्ट हो तो शत्रु आधीदूर आकर वापस स्वस्थानको लौट जावेगा ।

(२) यदि उदयलग्न चर हो और जो सूर्य मंगल गुरु या शनिसे युक्त या दृष्ट हो तो एको योगः । अथवा उदयलग्नसे छठे या सातवें स्थान आरूढ होय तो शत्रुका आना होगा । यदि कर्क वृश्चिक कुंभ मीन ये राशियाँ लग्न वा चौथे घर आवें तो आधीदूर शत्रु आकर वापस लौट जायगा ।

(३) उदयसे छठे घरमें अथवा आरूढलग्नमें सूर्य या बुध हो तो शत्रु आवेगा परन्तु चौथे घर या छठे घर अथवा आरूढमें गुरु हो तो शत्रु नहीं आवेगा ।

(४) प्रश्नकालमें शनि उदयलग्नसे दूसरे घर या आरूढसे दूसरे घर में होय तो शत्रु आवेगा परन्तु शनि तीसरे पांचवें छठे ग्यारहवें घरोंमें होय तो शत्रु लूटके माल सहित और स्त्रियोंको अपनी दासी बनाकर संग लिये हुए लौट जायगा ।

(५) आरूढ या उदयलग्नसे शुक्र चौथे या पांचवे घर होय तो शत्रु अपनी संपत्ति खोकर और स्त्रियोंको बन्धनमें छोडकर वापस घरको जाय, जो इनराशियोंसे शुक्र छठे घर होंय तो संधि होयगी, सातवें घर शुक्र होय तो कोई भय नहीं होगा ।

(६) प्रश्नकालमें शनि आरूढ अथवा उदयसे दूसरे तीसरे चौथे आठवें घरमें होय तो नहीं आवे, जो दशवें ग्यारहवें होय तो लूटके माल सहित और स्त्रियोंको अपनी दासी बनाकर संग लिये हुए लौट जायगा और शनि पांचवें घर होय तो शत्रु बलवान् होगा ।

(७) प्रश्नकालमें सूर्य उदय वा आरूढसे ग्यारहवां होय तो शत्रु अपने भाई बंधु तथा फौजका नुकसान उठाकर तथा अपनी स्त्रियोंको दूसरेकी दासी बनाकर घरको लौट जायगा । यदि सूर्य नीचक्षेत्री या शत्रुक्षेत्री होकर लग्नमें बैठे तो फौजका मुखिया मारा जायगा ।

(८) प्रश्नकालमें सूर्य्य और शुक्र उदय या आरूढ़से छठे घर होंय तो शत्रु आवेगा जो ये मित्रघरपै बैठें होय तो संधि होय, जो शत्रुके घरमें होंय तो लड़ाई होय, जो उदय या आरूढ़से गुरु चौथे या छठे घर होय तो शत्रु नहीं आवेगा ।

(९) प्रश्नकालमें जो चन्द्रमा चरराशिवर्ति लग्नमें होय तो जाहिरीमें शत्रु मित्रता करेगा परन्तु गुप्तरीतिसे उस मुलुकको उस देशको लेनेकी इच्छा रखेगा, जो चन्द्रमा द्विस्वभाव उदय लग्नमें होय तो शत्रु आधीदूर आकर वापस लौट जायगा ।

(१०) जो प्रश्नकालमें मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री स्वक्षेत्री ग्रह आरुढ लग्नमें होय तो स्थाई जीतेगा जो येही ग्रह छत्रलग्नमें होंय तो चढ कर आनेवाला जीतेगा ।

(११) प्रश्नकालमें शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री ग्रह आरूढलग्नमें होय तो चढकर आनेवाला जीतेगा, जो ये ग्रह छत्रलग्नमें होंय तो जिस पर चढाई हुई है वो जीतेगा ।

टिप्पणी--जो चढ़कर आता है वो यायी है और जिसपर चढ़कर आता है वो स्थायी है ।

(१२) प्रश्नकालमें आरूढ लग्नस्थ ग्रह बली होंय तो स्थायी जीतेगा जो छत्रलग्नस्थ ग्रह बली होय तो यायी जीतेगा ।

टिप्पणी–जो फल आरूढ़ लग्नेश बलवान् होय तो भी पूर्वोक्तफल जानना अर्थात् यायी जीतेगा ।

(१३) जो प्रश्नकालमें आरूढ लग्नसे छः लग्नोंके भीतर बुध होय और सूर्य छः पीछेके लग्नोंपर होय तो स्थायीकी जय होयगी, जो इसके प्रतिकूल याने लग्नसे आगेकी छः राशितक सूर्य होय और पीछेकी छःराशियोंमें बुध होय तो यायीकी जय होगी ।

(१४) प्रश्नकालमें शीर्षोदय उदयलग्न होय और उसमें शुभग्रह बैठे होंय तो स्थायीकी जय हो, जो पृष्ठोदय उदयलग्न शुभग्रहोंसे युक्त होय तो यायीकी जय कहना, उदयलग्नमें द्विपदराशि होय और पापग्रहोंसे युक्त होय तो युद्ध होयगा, जो शुभग्रहोंसे युक्त होय तो संधि होयगी ।

(१५) प्रश्नकालिक उदयलग्न बहुपद या चतुष्पद होय और उसपै पापग्रह बैठे होंय तो युद्ध होय, जो वही शुभग्रहोंसे युक्त होय तो संधि होती है ।

(१६) प्रश्नकालमें मंगल तीसरे सातवें आठवें और नवें हो तो यायी धन देवेगा परंतु जो मंगल चौथे पांचवें छठे दशवें ग्यारहवें बारहवें दूसरे पहिले घरमें हो तो स्थायी यायीको कर (स्वराज्य) देवेगा ।

(१७) सूर्य तीसरे या पांचवें घर उदयारूढ़ लग्नोंसे हो तो स्थानाधिप युद्धमें हारेगा परंतु रवि मित्रक्षेत्री हो तो स्थानाधिपति संधिकी याचना करेगा, जो उक्त रवि शत्रुक्षेत्री हो तो वह लड़ाई करेगा जो रवि चौथे घर हो तो वह स्वराज्य भेट करेगा, जो रवि बारहवां हो तो शत्रुके शस्त्र छीनेजावेंगे ।

(१८) प्रश्नकालमें उदयलग्न रवि, मंगल, शनिसे युक्त वा दृष्ट हो तो यायीकी जय होगी, जो उदयलग्न गुरुसे युक्त वा दृष्ट हो तो यायी हारकर भागजावेगा, जो उदयलग्न बुध या शुक्रसे युक्त वा दृष्ट हो तो शत्रु संधिकी याचना करेगा ।

(१९) उदयलग्न या आरूढ़लग्नसे गुरु तीसरे पांचवें दशवें बारहवें घर हो तो शत्रुका बल नष्ट होगा जो गुरु दूसरे घर हो तो वह संधिकी प्रार्थना करेगा, जो चन्द्र और बुध ग्यारहवें घर हों तो वह सर्वस्व खोकर रणभूमिमेंसे भाग जावेगा ।

(२०) प्रश्नकालमें बुध पांचवें घर हो तो स्थायी यायीको स्वराज देवेगा, बुध दूसरे या तीसरेघर हो तो स्वराज्य

देवेगा बुध बारहवें हो तो स्थायी जीतेगा बुध ग्यारहवें हो तो यायी जीतेगा।

(२१) प्रश्नकालिक उदयलग्नसे या आरूढसे चन्द्र छठा हो तो शत्रुके आगमनके समाचार सुने जावेंगे, चौथे पांचवें घर हो तो कोई डर नहीं है, पूर्वोक्त छठेघरका चन्द्रमा जो मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री स्वक्षेत्री होय तो शत्रु अपने आनेकी खबर प्रसिद्ध करेगा परन्तु आवेगा नहीं. जो चतुर्थ पंचम राशिस्थ उक्तचन्द्र शत्रुक्षेत्री या नीचक्षेत्री होय तो किंचित् हानि होगी।

(२२) प्रश्नकालमें सूर्य मङ्गल विषमराशिमें हों तो स्थायी जीतेगा, जो समराशिमें हों तो वह हारेगा, सूर्य उदयलग्नमें हो चन्द्र बारहवें हो तो स्थायी जीतेगा, जो चन्द्र लग्नमें रवि १२ वें हो तो स्थायी हारेगा।

(२३) उदयलग्नके चौथे घर ६ घर यायीके हैं और शेष ६ घर पौर जिसपर चढाई युद्धकी हुई है उसके हैं; यदि यायीके घरोंमें मित्र स्व उच्चक्षेत्री शुभग्रह हों तो यायी जीतेगा, जो स्थायीके ६ घरोंमें मित्र-क्षेत्री स्वक्षेत्री उच्चक्षेत्री शुभग्रह हों तो स्थायी जीतेगा, जिसके घरोंमें नीच शत्रुक्षेत्री पापग्रह हों उसकी हार होवेगी।

(२४) जो प्रश्नकालमें यायी और पौर इन दोनोंके घरोंमें समा-नबलवाले पापग्रह हों तो लड़ाई दोनों ओरसे छिड़ेगी, जो दोनों ओर-वाले पापग्रहोंके बल समान न हों तो जिसके घरमें विशेष ग्रह बली हैं उसीकी ओरसे पहिले लड़ाई प्रारंभ होगी।

(२५) धनिष्ठाके उत्तरार्द्धसे १३॥ साढे तेरह नक्षत्र अर्थात् आश्लेषा नक्षत्रके अन्ततकके नक्षत्र चन्द्र नक्षत्र हैं और मघानक्षत्रसे १३॥ साढे तेरह नक्ष अर्थात् धनिष्ठाके पूर्वार्द्धतक सूर्यनक्षत्र हैं अर्थात् कुंभराशिसे

कर्कराशितकके संपूर्णनक्षत्र चन्द्रके हैं और सिंहराशिसे कर्कराशितकके संपूर्ण नक्षत्र सूर्यके हैं।

(२६) जब लड़ाई प्रारंभ हो उस समय चन्द्रमा उपरोक्त चन्द्रनक्षत्रोंमें हो और रवि सूर्यनक्षत्रोंमें हो तो संधिहोवे, जो इसको प्रतिकूलहो तो युद्ध होगा, लडाईके प्रारम्भकालमें रवि चन्द्रके नक्षत्रोंमें हो तो पौर (स्थायी) की जय होगी, जो चन्द्र सूर्य नक्षत्रमें हो तो यायीकी जय होगी।

इति श्रीपवांरवंशावतंस-श्रीमहाराजशम्भुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रन्थे शत्रुआगमनप्रकरणं सम्पूर्णम्

अध्याय उन्नीसवाँ १९.

अथ यात्राप्रकरणम्

(१) इस कांडमें यात्रीका लौटना द्रव्यसहित आगमन उसका शुभाशुभ भावी तथा किन किन पुरुषोंसे उसका मिलना होगा इत्यादिबातें लिखी जाती हैं–

(२) उदयलग्न आरूढ़ और दशमस्थान इनको देखनेवाले मित्रक्षेत्री ग्रह हों तो यात्रीका मिलना अपने इष्टमित्रोंसे होगा जो वे ग्रह नीचक्षेत्री हों तो नीचपुरुषोंसे मिलना होगा, जो उच्चक्षेत्री हों तो कुलीन उच्चपुरुषोंका मिलाप, स्वगृही हों तो अपने घरके पुरुषोंसे मिलना और द्रष्टा ग्रह शत्रुक्षेत्री हों तो शत्रुओंसे भेंट होगी।

(३) उदयलग्न आरूढलग्न और दशमघर इनमें पुरुषराशि होय और ये पुरुष ग्रहोंसे दृष्ट हों तो यात्रीका पुरुषसे मिलाप होगा, जो उक्तस्थानोंमें स्त्रीराशियां हों और स्त्रीग्रहोंसे वे दृष्ट हों तो यात्रीका मिलना स्त्रियोंसे होगा, यात्राकरनेका तात्पर्य राशिभाव और द्रष्टा ग्रहोंसे कहना।

(४) उदयलग्नमें चरराशिस्थग्रह चर हों वा लग्नेश चरराशिस्थ हों इन योगोंमें जो ग्रह या राशि बलवाली होगी उसीकी दशामें यात्री जावेगा ।

टिप्पणी--लग्नेशका चरराशिस्थ होनेका जो फल है वोही आरूढ़ लग्न और दशमघरके स्वामीका चरराशिस्थ होनेका फल है ।

(५) उदयलग्न आरूढ दशमस्थान इनमें चरराशि हों और ये स्थान चन्द्र बुध गुरु शुक्र इनमेंसे किसीएक ग्रहसे युक्त या दृष्ट हों तो यात्रा होगी, जो उक्तस्थानोंमें द्विस्वभाव राशियाँ पापग्रहोंसे युक्त हों तो यात्री आधीदूर जाकर वापस लौट आवेगा ।

(६) प्रश्नकालमें उदयलग्न आरूढ लग्न और दशमघर इनमें स्थिर राशियाँ हों ये सूर्य मङ्गल या शनि इनसे युक्त वा दृष्ट हों तो यात्रा नहीं होगी, यात्री बिलकुल जानेको तैयार होगया हो तो भी यात्राको बन्द करदेगा ।

(७) प्रश्नकालमें उदयलग्न शीर्षोदय हो तो यात्री स्वस्थानमें सुखी रहेगा, परदेशमें दुःखी रहेगा, जो उदयमें पृष्ठोदयलग्न हो तो यात्री परदेशमें सुखी रहेगा, स्वस्थानमें दुःखी रहेगा ।

टिप्पणी–उभयोदय उदयलग्न हो तो यात्री स्वदेश परदेश अर्थात् घर और यात्रामें दोनों जगह समान सुखी दुःखी रहेगा ।

(८) उदय आरूढ दशमस्थानसे दूसरे तीसरे घर द्विपद राशियाँ द्विपदग्रहों से युक्त हों तो यात्रीके लौटनेके पहले आगेके समाचार घर आजावेंगे ।

टिप्पणी–जो द्विपदग्रहोंको छोड़कर उक्तस्थानोंमें अन्यग्रह हों तो यात्रीके आनेके बाद समाचार आवेंगे ।

(९) उदयलग्न दूसरे तीसरे दशमघरमें चन्द्र बुध गुरु शुक्र हों तो तत्काल यात्री घर आवेगा ऐसा कहना ।

(१०) उदयलग्न आरूढ और दशमघर इन स्थानोंसे पांचवें या छठेघरमें शुभग्रह होय तो यात्री नैरोग्य आवेगा, जो पापयुक्त होवें तो यात्री रोगयुक्त आवेगा ।

(११) प्रश्नकालमें चन्द्रमा वृष कर्क सिंह धनराशिका होय तो यात्री तत्काल आवेगा, जो चन्द्रमा अन्यराशिका होय तो कालान्तरमें आवेगा, चन्द्र और गुरु चौथे घरमें होय तो यात्री उसीदिन एक तरुण-स्त्रीसहित आवेगा ।

(१२) दशमस्थानमें चन्द्र बुध गुरु या शुक्र हों तो इन ग्रहोंका जो काल निर्णीत है उस कालके व्यतीत होनेपर यात्रा होगी, जो सातवें घरमें बुध चन्द्र गुरु या शुक्र हो तो इन ग्रहोंका काल जो पूर्व कहचुके हैं उतनेही काल व्यतीत होनेपर यात्री लौटेगा ॥

टिप्पणी-कालजाननेवास्ते पहलेअध्यायका सत्रहवां श्लोक देखो ।

(१३) प्रश्नकालमें शुभग्रह नीचक्षेत्री या शत्रुक्षेत्री होकर दशमघरमें बैठे तो कार्यसिद्धि और रोगपीड़ा होगी और घाव लगेगा, जो पापग्रह शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री दशमस्थानमें हो तो कार्यसिद्धि नहीं होगी और रोग तथा घावसे पीड़ा होगी ।

(१४) शुभग्रह दशमघरमें हो अथवा उपरोक्त अन्यघरोंमें होतो कार्यसिद्धि होगी, सामान्यतः यात्रासंबन्धी जितनी बातें होंय उनका विचार दशमस्थान तथा दशमस्थानस्थित ग्रहोंसे करना ।

(१५) प्रश्नकालमें उदयलग्न वा दूसरेस्थानमें पापग्रह हों तो यात्री अपना धन खोदेगा और निर्धनताके कारण पीछा नहीं लौट सकेगा, चौथेघर पापग्रह हों तो यात्रीको शत्रुसे पीड़ा होगी और कालांतरसे लौटेगा ।

इति श्रीपवाँरवंशावतंसश्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रन्थे यात्राप्रकरणं समाप्तम् ॥

अध्याय वीसवाँ २०.

अथ नद्यागमः अर्थात् नदीका चढना

(१) जो उदयलग्नसे सातवेंघरमें जलराशि होय तो नदी शीघ्र ही पूर आवेगी, जो जलराशि जलग्रहोंसे युक्त सप्तमस्थानमें हो तो नदी बहुत चढेगी और किनारोंसे बाहर होजायेगी,जो सातवें घर पापग्रह हो तो नदी पूर नहीं आवेगी ।

टिप्पणी–जो सप्तस्थानमें जलराशि न होय तो नदी पूर नहीं आवेगी जो सप्तमस्थजलराशियोंमें जलग्रहोंके अतिरिक्त अन्यग्रह होंय तो पूर थोड़ी आवेगी आरूढ़लग्न बलवान् हो तो नदी पश्चिमसे पूर्वको बहती है जो छत्रलग्न बली हो तो पूर्वसे पश्चिमको नदी बहती है ।

(२) सप्तमस्थानमें कर्क मीन राशि हो तो नदी बहुत पूर आवेगी। जो मकर कुंभ राशि हो तो पौनहिस्सा ऊपर आवेगी । जो तुला हो तो आधी पूर आवेगी, जो वृषभ या वृश्चिक हो तो चौथा हिस्सा पूर आवेगी ।

इति श्रीपवांरवंशावतंसश्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे नद्यागनप्रकरणं समाप्तम्

अध्याय एकवीसवाँ २१.

अथ वृष्टिप्रकरणम्

(१) उदयलग्नमें जलराशि होय और वह जलग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो वृष्टि होगी । उदयलग्नमें जलराशि न हो अथवा वो जलराशि जलग्रहोंके अतिरिक्त अन्यग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो तो वृष्टि नहीं होगी ।

(२) उदयलग्न चन्द्र या शुक्रसे दृष्ट अथवा युक्त हो तो बहुत जल बरसेगा परन्तु उदयलग्नमें बुध या गुरु बैठे या उदयलग्नको देखे तो थोड़ी वर्षा होगी ।

टिप्पणी-उदयलग्नमें कर्क मकर कुंभ मीन राशियां हों तो वृष्टि बहुत होगी जो वृष, तुला, वृश्चिक उदयलग्नमें हों तो वर्षा थोड़ी होगी ।

(३) छत्रलग्न पृष्ठोदय होवे अथवा आरूढलग्न पृष्ठोदयग्रहोंसे दृष्ट हो अथवा आरूढलग्नमें परिवेष, सूक्ष्म, इंद्रधनु इनमेंसे कोई ग्रह बैठा होवे तो बहुत वृष्टि होगी ।

(४) जो चन्द्र, बुध गुरु या शुक्र, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, उच्चक्षेत्री हों वा ये ग्रह केंद्र त्रिकोणके स्वामी हों तो तत्काल वृष्टि होगी, जो चन्द्र या शुक्र चौथे घरमें हों तो जिस दिन प्रश्न किया है उसी दिन जल गिरेगा, जो बुध या गुरु दूसरे घर हो तो दो दिनमें जल आवेगा, जो तीसरे घर बुध या गुरु हो तो तीन दिनमें पानी आवेगा ।

टिप्पणी-उक्त बुध गुरु चंद्र शुक्र नीचक्षेत्री शत्रुक्षेत्री हो वा षष्ठाष्टम द्वादश-घरके स्वामी ये हों तो वृष्टि कालान्तरमें होवेगी ।

(५) उदयलग्न, सूर्य मंगल शनि राहु इनमें किसीसे युक्त हो वा दृष्ट हो तो वृष्टि नहीं होगी, इन्हीं ग्रहोंसे आक्रान्त उदयलग्न जलराशि हो तो ठण्डी और जलार्द्र (दरयाई) हवा चलेगी जो उक्त सूर्य मंगल शनि राहु इन ग्रहोंमेंसे किसीके साथ जलग्रह बैठजावे तो सूक्ष्मवर्षा (बूँदाबांदी) होगी ।

इति श्रीपवांरवंशावतंसश्रीमहाराजशम्भुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रन्थे वृष्टिप्रकरणम् समाप्तम्

अध्याय बाईसवाँ २२.

अथ अर्घप्रकरणम्

(१) उदयलग्न और दशमघर उच्चक्षेत्री ग्रहोंसे दृष्ट होय तो धान्य आदिवस्तुओंका भाव सस्ता रहेगा । जो शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री ग्रहोंसे पूर्वोक्तग्रह दृष्ट होय तो भाव महँगा होयगा । जो उदयलग्न दशमघर स्वक्षेत्री और मित्रक्षेत्री ग्रहोंसे दृष्ट होय तो भाव मध्यम होगा अर्थात् महंगा भी नहीं जादा सस्ता भी नहीं ।

(२) जो शुभ ग्रह उदयमें और दशमघरमें होंय तो भाव सस्ता होगा। जो ये शुभग्रह सप्तमघरमें होंय तो भाव तेज रहेगा। पापग्रह नीचक्षेत्री अथवा शत्रुक्षेत्री हो कर उदयलग्न और दशमस्थानमें बैठे तो भाव तेज होगा।

टिप्पणी–जो स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री पापग्रह लग्न और दशमस्थानमें बैठे तो भाव सम रहेगा अर्थात् सस्ताभी नहीं महँगा भी नहीं, इसीतरह शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री शुभग्रह लग्नमें और दशमस्थानमें बैठे तो भाव सम रहेगा, जिस ग्रहकी जो वस्तु है उस ग्रहसे। उस वस्तुकी तेजाई सस्तापन कहना। तीसरे अध्यायके ग्यारहवें और बारहवें श्लोकमें ग्रहोंके वस्तुका वर्णन है।

इति श्रीपवाँरवंशावतंसश्रीमहाराजशम्भुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे अर्धकांडं सम्पूर्णम्।

अध्याय तेईसवाँ २३.

अथ नौकाप्रकरणम्

(१) उदयलग्न या आरूढलग्नमें जलराशि हो अथवा तीसरे पांचवें घरमें जलराशि हो तथा नवमें घरमें जलराशि हो और चन्द्र गुरु याशुक्रसे युक्त हो तो नौकाका आगमन वक्ष्यमाणरीतिसे कहना। जो जलराशीय उदयलग्न स्थिर या द्विस्वभाव हो तो नाव सीधी चली आवेगी। जो चरराशि होय तो नाव मार्गमें ठहरकर अथवा अपनामार्ग छोड़कर अन्य किसीमार्गसे आवेगी।

टिप्पणी–उदयलग्न या आरूढमें जलराशि न होय और वो सूर्य मङ्गल बुध शनि राहु इन राहुग्रहोंमेंसे किसी ग्रहसे युक्त होय तो जो नाव गई है सो वापस लौटके नहीं आवेगी।

(२) जो उदयलग्न या आरूढलग्न पापग्रहोंसे युक्त होय तो नाव अपनेमार्गसे हटकर अन्य किसी दूसरे तटपर चलीजायगी परन्तु जो वे

पापग्रह शत्रुक्षेत्री होंय तो नाव कभी नहीं लौटेगी, जो नीचक्षेत्री होंय तो पोत भंग होगा अर्थात् नाव टूट जायगी और बेकामकी होकर आवेगी।

(३) उदयलग्न आरूढमें अप्रकाश ग्रहोंमेंसे कोई एक ग्रह होय तो नाव डूब जायगी, जो प्रश्नकालमें इन अप्रकाशग्रहोंमेंसे कोई एकग्रह आकाशमें नजर आवे तो नाव अपनी रस्ता छोड़कर कुछ समयके बाद आवेगी।

टिप्पणी—अप्रकाशग्रह जाननेके वास्ते पहले अध्यायका चौरासीवाँ श्लोक देखो।

आरूढलग्न छत्रलग्न दोनों चरराशि होय तो नावने अपना रास्ता छोड़ दिया है और अब नहीं आवेगी, जो उदय लग वा आरूढलग्नसे तीसरेघर शुक्र होय तो नावने रास्ता तो छोडदिया परन्तु शीघ्र आवेगी।

इति श्रीपवांरवंशावंतसश्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेंद्रमालाग्रंथे नौकाकांडप्रकरणं समाप्तम्।

अध्याय चौवीसवाँ २४.

अथ चेष्टाप्रकरणम्

(१) इस प्रकरणमें जो पुरुष ज्योतिषीसे प्रश्नकरने आते हैं वे ग्रहतुल्य हैं और उन्हींके शब्द आरूढललग्न उदयलग्न हैं उनोंकी इंद्रियां राशि हैं और उनकी चेष्टा उच्च स्वक्षेत्र मित्रक्षेत्र नीचक्षेत्र शत्रुक्षेत्र इत्यादि ग्रहोंके स्थान हैं।

टिप्पणी—प्रश्नकर्ताके शब्द कृत्य इत्यादिकी अर्थ बोधनासे ज्योतिषी सब फलित कह सकता है जैसा कि उदय आरूढ़ मित्र स्वक्षेत्र उच्चनीच शत्रु क्षेत्रको देखकर पूर्वोक्त अध्यायोंमें फलित कहना लिखा है वैसाही इस अंगविद्यासे फलित कहा जा सकता है। वराहमिहिरने बृहत्संहिताके इक्यावन ५१ अध्यायमें ये श्लोक लिखा है—

दैवज्ञेन शुभाशुभं दिगुदितस्थानाहृतानीक्षता
वाच्यं प्रष्टुनिजापरांगघटनां चालोक्य कालं धिया ॥
सर्वज्ञो हि चराचरात्मकतयाऽसौ सर्वदर्शी विभु-
श्चेष्टाव्याहृतिभिः शुभाशुभफलं संदर्शयत्यर्थिनाम् ॥

अर्थ—ज्योतिषीको चाहिये कि, प्रश्नकर्ता तथा अन्यपुरुषके अंग लक्षण स्थान दिशा हृतपदार्थ (उठाई हुई चीज) इत्यादिको देखकर शुभाशुभ-फल कहे क्योंकि सर्वज्ञ चर अचरात्मक सर्वदर्शी सर्वव्यापी परमात्मा शुभाशुभफलको चेष्टा और शब्दोंद्वारा अर्थोंको सूचित करता है।

(२) यह चेष्टाविद्या प्रारम्भमें बृहस्पतिजीसे उत्पन्न हुई है, जो इन्द्रकी सभामें देवताओंके आचार्य्य हैं। इसलिये इस विद्याको बड़ी समझना चाहिये, मेरी सामर्थ्य नहीं है कि मैं इस विद्याका वर्णन पूर्णतया करसकूं जो कुछ मैंने पुस्तकोंसे और अध्यापकोंसे सीखा है उसके अनुसार वर्णन करता हूं।

अथ जातिज्ञानप्रकारमाह

(३) जब जाति पहँचानना हो तो यह देखना कि प्रश्नकर्ताने कौनसे अंगका स्पर्श किया है ? जो मस्तकसे गर्दनके भीतरके अंगका स्पर्शकिया हो तो पृच्छक ब्राह्मण है, जो गर्दनके नीचे और नाभिके ऊपरके अंगका स्पर्श करे तो पृच्छक क्षत्री है, नाभिके नीचे घुटनाके ऊपर स्पर्श करे तो वैश्य है, घुटनाके नीचे और गुल्फके (टकना) ऊपर स्पर्श करे तो शूद्र है, जो चरण या बालोंको स्पर्श करे तो चांडाल है।

(४) अब रंग जाननेका प्रकार लिखते हैं--जो पांव अथवा गुप्तेंद्रिय इनको खुजावे या स्पर्श करे तो हरारंग कहना, हाथ या मुखका स्पर्श करे

तो लालरंग कहना, बाल अथवा पेट स्पर्श करे तो कालारंग जानना, स्फिक् (कूला) का स्पर्श करे तो सुनहरीरंग है, अन्य किसी अङ्गका स्पर्शकरे तो श्वेत रंग है, वा पूर्वोक्त अङ्ग खुजावे तो भी येही फल हैं।

(५-६) जो वर्ष मास तिथी घटी जाननेका प्रश्न होय तो ये देखना—मस्तकका स्पर्श करे तो वो संख्या सौ है, मुखका स्पर्श करे तो ९० है, गर्दन कन्धा छातीका स्पर्श करे तो ८० है, उदरका स्पर्श करे तो ७० है, नाभि अथवा कूलेका स्पर्श करे तो ६०, कूलेसे हाथ तकका स्पर्श करे तो ५०, जंघाका स्पर्श करे तो ४०, घुटनाका स्पर्श करे तो ३० घुटनेसे नीचे पाँवके तलुवे तक अंगोंका स्पर्श कर तो १० और संख्याको जानना होय तो अनुमानसे जान लेना।

(७) प्रश्नकालमें हाथमें कोई चीज लेकर भुजा फैलावे तो धातु है, जो भुजाको समेटके रक्खे तो मूल है, जो भुजाको फैलावे नहीं और समेटेभी नहीं तो जीव है, जो उच्चारितशब्द अकारादि होय तो धातु है, इकारादि होय तो मूल है, उकारादि होय तो जीव है।

(८) कपालका स्पर्शकरे तो मुकुट पात्र इत्यादिधातुओंका चिन्तन कहना, जो कानको हाथ लगावे तो कर्णभूषण इत्यादि कहना, दांतका स्पर्श करे तो खाद्यवस्तुका चिन्तना कहना, गर्दनका स्पर्श करे तो विवाह अथवा उसकी अँगूठीका चिन्तना, हाथका स्पर्श करे तो हस्तभूषणकी चिन्तना कहना, उदरका स्पर्शकरे तो गर्भकी चिन्तना कहना। जांघका स्पर्शकरे तो वस्त्रोंकी चिन्ता कहना।

(९-१०) गुप्तेंद्रियका स्पर्शकरे तो विवाहकी चिंतना कहना, कण्ठका स्पर्शकरे तो विद्याकी चिंतना कहना, नाकका स्पर्शकरे तो विवाह विद्या अधिकारकी चिन्तना कहना, पांवका स्पर्शकरे तो क्रोध या कलहसम्बधी चिंता कहे. जो दीपक या पुष्पका स्पर्शकरे तो महत्कार्यकी

चिंता है जो स्पर्श करनेवाला शुभ आरूढग्रहके दिशामें बैठे तो कार्यसिद्धि और द्रव्यकी प्राप्ति होय, जो वो पापी आरूढग्रहोंके दिशामें बैठे तो कार्य-हानि और विपत्तिका प्राप्त होय। शुभग्रह शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री होय तो उन्होंका फल अशुभ है, पापग्रह उच्चक्षेत्री स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री होंय तो परि-णाममें शुभफल होय, आरूढग्रहोंकी जाननेकी रीति प्रथमाध्याय ८३ श्लोकमें देखो।

(११) प्रश्नकर्ता ज्योतिषीके दाहिने बाजू बैठे तो कार्य सिद्धि हो, जो ज्योतिषीके वाम भागमें बैठे तो कार्यकी हानि होय, जो प्रश्नकर्ता ज्योतिषीके बिलकुल समीप बैठे तो कार्यकी सिद्धि न होगी, जो समीप बैठे तो कार्यसिद्धि होगी, जो बहुत दूर बैठे तो कार्यकीहानि होगी।

(१२) जो प्रश्नकर्ता अपने मस्तकका दक्षिणभाग तथा दक्षिणनेत्र दक्षिणभ्रुकुटी दक्षिणस्कन्ध अथवा कान मुख स्तनका अग्रभाग उदर दक्षिणपांव इनमेंसे किसीका स्पर्श करे तो कार्यकी सिद्धि होगी, जो अन्य अंगका स्पर्श करे तो कार्य सिद्ध नहीं होगा।

(१३) जो प्रश्नकर्ता सीधा मुखकी तरफ देखे तो तत्काल सिद्धि होगी। जो नीचे देखे तो कालान्तरमें सिद्धि होगी, जो ऊपर देखे तो कार्यसिद्धि न होगी। जो किसी वस्तुको झुककरके देखे तो शुभकार्यकी सिद्धि और अशुभकार्यकी हानि होगी।

(१४) प्रश्नकर्ता जो कपड़ेको अपने गर्दनके आसपास लपेटे तो कार्यसिद्धि और धनका लाभ होगा। कपड़ेको कमरके आसपास तथा पांवके आसपास प्रश्नकरनेके समय लपेटे तो कार्यकी हानि होगी, जो प्रश्नकर्ता उच्चस्थानमें बैठकर प्रश्न करे तो कार्यकी सिद्धि होगी, प्रश्नकर्ता

ऊँची भूमिसे नीची भूमिपर खिसलकर आवे वा उठकर आवे तो कार्य-हानि होगी ।

(१५) प्रश्न करतेसमय जो प्रश्नकर्ता किसीचीजको लंबी करता हुआ और बढाता हुआ दिखावै तो संपत्ति और उपभोग प्राप्त होगा, जो प्रश्नकालमें विवाहकार्य मैथुन भोजनकरता हुआ कोई पुरुष नजर आवे तो कार्यकी सिद्धि होगी,जो इसके प्रतिकूल कोई पुरुष किसी वस्तुको तोड़ता फोड़ता छिद्रकरता हुआ या कम करता हुआ नजर आवे तो कार्यसिद्धि नहीं होगी नुकसान होगा ।

(१६) प्रश्नकर्त्ता आकाशको देखे और अपने हाथ मसले ज्योतिषीके पांव पकडे तथा झुकजावे तथा हाथ जोडकर खडा रहे तो खोया हुआ द्रव्य नहीं मिलेगा, बालककाजन्म नहीं होगा, द्रव्यकी हानि होगी ।

(१७) प्रश्नकालमें प्रश्नकर्त्ता कंकर फैंके वा किसी पदार्थको तिरछी दृष्टिसे देखे या गद्गदकंठसे बोले अर्थात् सफा नहीं बोले या अपने बाल खोले अथवा उंगली चटकावे वा पाँवके अँगूठेसे पृथ्वीपै रेखा करे तो कार्यकी हानि होचुकी है ऐसा कहना ।

(१८) जो प्रश्नकालमें ज्योतिषी और प्रश्नकर्ताके बीचमेंसे कोई मनुष्य अथवा ढोर निकल जावे अथवा काष्ठभार लेजाता हुआ नजर आवे वा कठोर शब्दोंको प्रश्नकर्त्ता बोले वा शिर ढांककर प्रश्नकरे तो कार्यसिद्ध नहीं होगा ।

(१९) जो तलवार चक्कू बाण आदि शस्त्र या जंगली वा जहरीलावृक्ष प्रश्न करनेके –मय कोई लावे अथवा कपास वा अग्नि पृथ्वीपै गिरतीहुई दीखै वा जिस समय जोतिषी क्रोधमें होय उस समय प्रश्न करे तो इन सब कारणोंसे कार्यकी असिद्धि तथा हानि होती है ।

(२०) प्रश्नकालमें पृच्छक अथवा अन्यपुरुष नाक छिनके अथवा मुख संकोच करे या निशास लेवे तुतलाकर बोले बगासी लेवे तो रोगी रोगसे नहीं छूटेगा, खोया हुआ धन नहीं मिलेगा बल्कि गांठका जायगा ।

(२१) प्रश्नकालमें जो पृच्छक बांहैं जानूको स्पर्श करे तो कार्य-सिद्ध नहीं होगा, द्रव्यलाभ नहीं होगा, खोई हुई चीज नहीं मिलेगी, प्राप्त वस्तुकी हानि होगी, रोग बढेगा, आराम नहीं होगा ।

(२२) कमरका वामभाग अथवा बायें कूलेको स्पर्श करे तो विवाहित पुरुषोंको तकलीफ पहुंचे है तथा विवाह और पदार्थके उपभोगसे होय और पृच्छककी स्त्री मरे परन्तु जो दक्षिणशिरोभाग दक्षिणपादको स्पर्श करे तो पूर्वोक्त हानि नहीं होगी ।

(२३) प्रश्नकालमें जो पुरुष पृथ्वीपै वृत्त खींचे अथवा मुख वदन स्कंध उदर इनका स्पर्श करे तो गया द्रव्य मिलेगा, मन्या अर्थात् गर्दनके पीछेकी नसोंका या कांखोंका स्पर्श करे या पीठका कूलोंका कमरका पांवका स्पर्श करे तो चोरी गया धन नहीं मिलेगा ।

(२४) जो प्रश्न करते समय ये वाक्य बोले ओ हो हो ये क्या दुःख है सह्य नहीं क्या ये बच जायगा ये बड़े रंजकी बात है ऐसे शब्द बोलै तो रोगी रोगसे मुक्त नहीं होगा ।

टिप्पणी-जो इसके प्रतिकूल इस तरह वाक्य बोले उसको दो दिनमें आराम होजायगा, उम्मेद है कि उसको फुरसत होगी तो इन संकेतोंसे रोगकी निवृत्ति जानना ॥

(२५) जो मृत्युसम्बन्धी प्रश्न होय उस समय कालबहलिया नजर आवे या लँगडा आदमी--दुःखित पुरुष निर्लज्ज पुरुष तथा पृच्छकका

शत्रु विधवा संन्यासी शस्त्रधारी ये नजर आवें तो मृत्यु अवश्य है ऐसा कहना।

(२६) प्रश्नकालमें कोई आदमी रस्सी अथवा ऊनी सूत बटता-हुआ नजर आवे रस्सी बनाता हुआ अथवा टांगोंको पकड़ता हुआ अथव नेत्र मिसलता हुआ काष्ठभारलिये हुए अथवा हाथमें लकड़ी लिये हुए नजरा आवे वा जमीनपै पड़े हुए प्रश्न करे अथवा प्रश्नकरके सो जावे तो प्रश्नका फल मृत्यु है ऐसा कहना !

(२७) ऐसे समय ये प्रश्नकरे कि जिस समयमें पृच्छक तेल शरीरको लगा रहा है अथवा दांत घिसरहा है वा हजामत करा रहा है अपने नेत्रको बंदकरके वा किवाड़ बंदकरके अथवा जिस समय गाय दौडरही है बछ-रोंको समूह तितर बितर होरहा है तो ऐसे समय प्रश्न करनेसे मृत्युकी सम्भावना होती है।

(२८) जो प्रश्नकालमें चावलके आटेसे मांडना मांडे या इस प्रका रकी और वस्तुसे मांड़ना मांड़े किसी पुरुषपै छत्री लगी देखे या बालोंको बांधता हुआ अथवा पुष्पमाला गलेमें धारण करता हुआ अथवा प्रश्नकरे तो जिस पुरुषकी निस्बत प्रश्न करता है वो पुरुष ग्रामाधिपति वा नृपति होयगा।

(२९) प्रश्नकालमें जमीन हंकी जाती होय हाथमें तसवीर हो या हाथपै चित्र लिखजाता हो अथवा प्रश्नकर्ता अत्यंत प्रसन्नहो या किसी पदार्थको छातीसे लगारहा हो या मधुरवाणी बोलरहा हो तो इन सब लक्षणोंसे द्रव्यकी प्राप्ति होती है।

(३०) प्रश्नकालमें दूध, नवनीत, ब्राह्मण, घोडा, बैल, भैंस, गर्भ-वतीगाय, गर्भिणीस्त्री, पूर्ण जलसे भरा पात्र, रजस्वला युवतीस्त्री इनमेंसे कोई एक नजर आवे तो कूपमें जल बहुत निकलेगा ऐसा कहना।

(३१) प्रश्नकालमें दोपदार्थ संयुक्त नजर आवें तो संधि होगी, जो संयुक्त पदार्थोंमेंसे एक कोई अलग होजावे तो संधि नहीं होगी, जो टूटे-हुए व फटे हुए पदार्थ जोड़ेजाते हुए नजर आवें तो संधि होगी और प्रश्नकालमें कोई पदार्थ फटजावे टूटजावे तो संधि नहीं होगी।

(३२) प्रश्नकालमें गवय (रोज) बन्दर, घोड़ेका सवार, कन्या, उदारचित्तवाले पुरुष, राजा, यात्री इनका दर्शन होय तो यात्रा होगी।

(३३) प्रश्नकालमें शोकाकुलपुरुष असाध्यरोगी घातक लगँड़ा कल-हप्रियपुरुष मतवाला निर्व्यापार अर्थात् आलसी वेकार पुरुष अहंकारी इनका दर्शन होवे तो यात्रा नहीं होगी।

(३४) जब वृष्टिका प्रश्न होय उस समय कोई थूकता वा लार-गिराता नजर आवे और नेत्र मिचता हुआ बालोंको नीचे करता हुआ और नेत्रोंसे आँस बहाता नजर आवे मुकुट नीचे करता हुआ नजर आवे तो वृष्टि तत्काल होगी। प्रगटहो कि इस चेष्टाध्यायमें जो चर्या लिखी है वो स्वयं प्राकृतिक होना चाहिये, जो जानके कोई चर्या या लक्षण करै तो वो निष्फल है।

इति श्रीपवारवंशावतंसश्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषा-नुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे चेष्टाप्रकरणं समाप्तम्

इति प्रथमभागः समाप्तः

सूचना

विदित हो कि इंग्रेजी जिनेन्द्रमालासे यह भाषानुवाद मैंने अक्षर प्रत्यक्षरका किया है अतएव नागरीभाषाकी वाक्यधारामें कहीं अन्तर आ गया है तो पाठकगण क्षमा करेंगे क्योंकि इंग्रेजी भाषा बहुत दूर देशकी होनेसे नागरी भाषासे बिलकुल नहीं मिल सकती और मूलग्रन्थ जिनेन्द्रमालाका सम्पूर्ण भारतवर्षमें ढूंढा गया; परन्तु नहीं मिला। एन् चिदम्बरम् अय्यर जिन्होंने इस ग्रन्थको इंग्रेजीमें प्रकाशित किया था, उनके यहां भी अब ये ग्रन्थ संस्कृतमें नहीं हैं। शोक है कि उक्त महाशयका देहांत हो गया नहीं तो उनसे इसके मूलग्रन्थका विवरण पूछते। हमने उक्त महाशयके छोटे भाई पं० विश्वनाथ अय्यर मदुरानिवासीसे इस ग्रन्थका ब्योरा पूछा था, तो उन्होंने उत्तर दिया कि ये मूलग्रन्थ तामिली लिपिमें लिखा हुआ सिंहलद्वीप (CEYLONE.)से आया था। उसीका इंग्रेजी भाषांतर छापा गया है; परन्तु अब वह ग्रन्थ खो गया ढूंढनेसे नहीं मिलता इति। अतएव हमने लाचार होकर उक्तग्रन्थका भाषानुवादमात्र लिखा है, जो मूलग्रन्थ मिल जाता तो अवश्य आकाशी, पाताली टीकासहित मूलग्रन्थको प्रकाशित करते।

ग्रन्थकर्ता

निवेदन

वर्त्तमान भागमें जो फलितके योग लिखे हैं इन्हींको जन्मकुंडली, वर्षकुंडली, प्रश्नकुंडली तीनोंमें देखना चाहिये और ये योग भारतवर्षीय पुरुषोंके लिये फलदाता हैं यूरोप निवासी पुरुषोंको फल पूरा न देंगे उनके वास्ते दूसरे योग हैं।

प्रथम ज्योतिषका कुछ अभ्यास करके फिर पाठक गण इस ग्रन्थको पढे तब समझमें ठीक आवेगा, क्योंकि मैंने फलितमात्र इसमें लिखा है; जो लग्न बनाना इष्ट लिखना इत्यादि ज्योतिष सीखनेकी विधि प्रारम्भसे लिखता तो ग्रन्थ बहुत बढ जाता और विस्तृत ग्रन्थको प्रेसाध्यक्ष लोग कदाचित् छापना स्वीकार न करते।

द्वितीय भागकी प्रस्तावना

सबसे पूर्वमें श्री पं० गङ्गाप्रसादजी महाराज सिरोजनिवासीको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिनकी अनुग्रहसे मेरा ज्योतिषविद्यामें पदार्पण हुआ। आजकल भारतवर्षमें गुण छिपानेकी परिपाटी प्रचलित है और उसका कारण यही विदित होता है कि प्राचीन संस्कृत विद्याकी गुणज्ञता इस देशमें कम हो गई है, जो विद्या जीवननिर्वाहका हेतु होती है उसीको सर्वसाधारण ग्रहण करते हैं, वर्त्तमानकालिक शासकोंकी दृष्टि फलित ज्योतिषपर कम होनेके कारण इस विद्याकी दिनप्रतिदिन अवनति होती जाती है और विदेशीय विद्याका प्रचार बहुधा देखनेमें आता है; जो कुछ इने गिने ज्योतिषी रहे हैं वे अपनी विद्या दूसरेको सिखानेमें जीवननिर्वाहका मूलोच्छेदन समझ जो प्रत्यक्ष चमत्कारिक फलितके योगायोग हैं वे किसीको नहीं बतलाते हैं और ज्योतिषके जो उत्तमोत्तम ग्रन्थ थे वे महाभारतके पश्चात् नष्ट होगये, आजकाल जो ग्रन्थ फलितके प्रकाशितहैं उन्होंकी विधि प्रायः कम मिलतीहै और जो नए ग्रन्थ इस विषयमें प्रकाशित होते जाते हैं, उनके प्रकाशक ग्रन्थ कर्त्तालोग इधर उधरके ग्रन्थोंका सार लेकर नया ग्रन्थ रचते हैं और नाम अपना जाहिर कर देते हैं ऐसे ग्रन्थोंके छपनेसे वस्तुतः इस देशको कुछ भी लाभ नहीं केवल पिष्टपेषण करना है॥ मेरी रुचि प्रायः ज्योतिष विद्यापर रहती है और जो ज्योतिषी आते हैं उनका सत्कार यथासम्भव होता रहता है। इस कारण बहुतसी फलितकी चमत्कारिक बातें मुझे मिली हैं और मैंने स्वयं भी अनुभव ले लेकर कुछ नवीन

योग रचे हैं जो वर्त्तमान समयके देश कालानुकूल होनेसे अखिल प्रभावोत्पादक हैं। यद्यपि विद्वानोंके समक्ष ऐसे योगोंका प्रकाशित करना सूर्य्यको आदर्श दिखानेकी भाँति है तथापि सज्जनोंकी परिचर्य्या कि जिसके करनेसे इस शरीरका धारण करना सार्थक होता है अपना कर्तव्यकर्म जान यह ग्रन्थ निर्माण किया है ॥

इस ग्रन्थके प्रथमभागमें मैंने जिनेन्द्रमाला नामक ग्रन्थ सरल नागरी भाषामें प्रकाशित कियाहै और वर्त्तमान भागमें मैंने वे विषय लिखे हैं जिनकी मैं कई बार परीक्षा कर चुका हूं इसलिये इस ग्रन्थका नाम स्वानुभूत ज्योतिष रक्खा गया है। किसी छपे ग्रन्थसे कोई विषय उद्धृत करके मैंने इस भागमें नहीं लिखा है और न किसी दूसरेकी इस ग्रन्थमें सहायता लीगई है बहुधा लोग दूसरोंसे ग्रन्थ बनवाकर कीर्तिके वास्ते अपने नामसे ग्रन्थ छपवा देते हैं। ऐसा मैंने कभी नहीं किया है, जितने ग्रन्थ मैंने अभी तक छपवाये हैं उनको स्वयं रचकर आविष्कृत किये हैं, जो विषय मेरा अनुभूत नहीं है वहां वैसा बतला दिया गया है ॥

फलितका संबन्ध कुंडली चक्रोंसे विशेष है, जितनी अधिक कुण्डलियां देखनेमें आवेगी उतना ही अभ्यास विशेष होवे गा, इसलिये इस भागमें मैंने भूमण्डलके महापुरुषोंकी जन्मकुण्डलियां स्वयं शोधकर प्रकाशित की हैं जिनका जन्म समय मालूम नहीं हुवा है उनकी केवल चन्द्र कुंडली ही लिख दी है ॥

जो जो विषय मुझे याद आते गये लिखता गया हूं इस लिये बहुतसे विषयोंका प्रकरण असंबद्ध हो गया है सो सज्जन क्षमा करेंगे, इस ग्रन्थमें लिखे हुए योगोंको पाठक अल्प स्वल्प न समझें, जब इनकी परीक्षा होगी तब हाल मालूम हो जावेगा ॥

ऐसे २ गोप्ययोग कि जिनको ज्योतिषी किसीको नहीं बतलाते हैं। मैंने इस ग्रन्थमें सन्निविष्ट कर दिये हैं, उस सर्वान्तर्यामी अखिल जगदाधार प्रभुके अनुग्रहसे जो यह शरीर बना रहा है तो इसी तरहसे अनेक नवीन ग्रन्थोंके प्रादुर्भावसे सज्जनोंकी परिचर्य्या होती रहेगी। किं बहुधा बुद्धिमत्सु ॥

सज्जनोंका अनुगृहीत—

मिती द्वितीय ज्येष्ठ बदी ११ } महाराज शंभुसिंह सुठालियाधीश—
गुरुवार सम्वत् २०१५ } स्थान सुठालिया (मध्यभारत).

श्रीगणेशाय नमः

ज्योतिषकल्पद्रुम

द्वितीय भाग

अर्थात्

स्वानुभूत ज्योतिष

(१) मूर्तिस्थानमें सूर्य अथवा मंगल पड़े तो मूत्रद्वारमें रोग करे औ मस्तकमें चोट न चिह्न करें और उसी घर सूर्य शनि भौमकी राशि व सूर्यकी राशिपर शनि संयुक्त और मङ्गल रहित हो अथवा कुंभ, मकर, मेष, वृश्चिक, सिंहराशि, ७ वें घरपड़े और इनपर सूर्य शनि बैठें या देखें तो उसके मूत्रकृच्छ्र रोग होय और उसीसे मरेगा, और सातवें घरपर जितने ग्रह बैठे होंय उतनेही विवाह निस्संदेह होंगे और बुध वा सूर्य सप्तम, कन्या वा मिथुन राशिपर दोनों एकत्र स्थित हों तो कन्यासे ६ विवाह और मिथुनसे ३ विवाह कहना ।

(२) दूसरे घर सूर्य अथवा मङ्गल पड़े तो मुख वा दंतमें रोग होय दंत आधी उमरमें गिरे मुखमें दुर्गंध आवे गालपर गूमड़ाका चिह्न हों शनिसे तिल कहना और राहुसे मस कहना ।

(३) तीसरे घर क्रूर वा पाप ग्रह पड़ें तो भ्रातृका सुख नेष्ट करें और दक्षिण भुजामें पूर्वोक्त ग्रहानुमान चिह्न कहना, पराक्रम अच्छा हो और नौकरोंका सुख हो ।

(४) चौथे घरपर यही अशुभ ग्रह पडें तो पेटपर पूर्वोक्त ग्रहानुसार चिह्न हो और पेटमें कष्ट रखे और इसी घरपर शनिकी राशि पड़े-

वा शनि देखे अथवा बैठे तो वह लोभी होता है जमीनसे फायदा चौपायोंसे नुक्सान हो ।

(५) पांचवें घरपर सूर्ययुक्त मंगल अथवा इकेला शनि पडे व शनिसे वातगुल्मरोग हो, फारसी विद्या अच्छी हो. संतान नेष्ट हों, सूर्य हो तो बुद्धिमान्, क्रोधी, नेत्रोंके डोरे लाल मंदबुद्धि गर्भपतन, गुरुकरके रहित शुभग्रह सन्तानकी वृद्धि करे और गुरुका माहात्म्य विद्यामें श्रेष्ठ है. वेदादि अध्ययन करे ।

(६) छठे स्थानमें सूर्य मंगल शनि स्थित हों व पूर्णदृष्टिसे देखें तो क्रूरकर्म कर्त्ता कहे, दक्षिणपादमें चिह्न व रोग करे रुधिरविकार करे मातुलोंकी हानि रोग व शत्रुका नाश और अरिष्ट दूर करे ।

(७) सातवें स्थानमें सूर्य बुध बुधकी राशिपर होंय तो मूत्रेन्द्रीमें रोग सुजाक करे, राशिके अंक समान स्त्री प्राप्त होय तथा उद्वाह होय और सप्तम भावमें जितने ग्रह बैठें तथा देखें उतनेही विवाह करावें, मिथुन राशिके ७ वें होनेसे और शत्रु घरका सप्तम स्थानमें कोई ग्रह बैठे और विशेषतः बुध व सूर्य शत्रुकी राशिमें बैठे तो अवश्य व्यभिचारी होगा और सप्तमेश शनि व सूर्य नवमघर व अष्टम व छठे अथवा बारहवें सूर्य युक्त बैठें तो जन्म कारा रहे अथवा सप्तमेश नवम शत्रु राशिपर बैठे तो स्त्रीसम्बंधी क्लेश रहे ।

(८) आठवें घरमें मंगल व सूर्य मेष वृश्चिक अथवा सिंहके एकत्र पड़े व इनमेंसे कोई भी पड़े तो ऊंचेसे गिरे बवासीरकी बीमारी होवे दो विवाह होवें और सूर्य मंगलकी दशामें शस्त्रसे भय होवे, मकरके भौमसे २८ वर्षकी उमरमें दस्तोंकी बीमारी होती है ।

(९) नौवां स्थान धर्म व तपका घर है इसमें शुभग्रह पड़ें तो अच्छा और शति पड़े तो अच्छे लोकसे आता है मीठा बोलनेवाला मनका

पापी और म्लेच्छविद्या पढनेवाला होता है । तथा–"जीवे प्रयागमरणं विधुना च काश्यां द्वारावती बुधसितौ यदि धर्मभागे । द्रेष्काणपेऽप्यथ कुजे परदेशमृत्युर्जीवे स्वभूमिमरणं प्रवदंति संतः ।"

(१०) दशवें घरमें मङ्गल व सूर्य पड़े तो राज्य घर अच्छा, कर्कका व मीनका, वृषका तथा शुभचन्द्र हो तो राज्यश्रेष्ठ परन्तु चन्द्रमा शुक्ल-पक्षका होना चाहिये, बुध व गुरु हो तो राज्यभवन ठीक परन्तु राज्यमें ठोकर लगे, दशम शनि स्वगृही पड़े तो भैंसोंका सुख हो और राहु केतु उच्चके पड़े तो अच्छे शनिवत् फल कहना, राहु मिथुनका और केतु कन्याका उच्चका होता है और शनि व राहु मूर्तिको देखे व बैठे तो नशाबाज कहना, शनिसे भाँगका, राहुसे अफीमका नशा कहना और मूर्तिपर मङ्गल व सूर्य पड़ें अथवा नवम पञ्चम होय तो तीक्ष्ण वस्तुपर इच्छा कहना । दशमेश छठा आठवाँ बारहवाँ जाय वा अशुभग्रह बैठें तो पितासे सुख न होगा । चौथे छठे व सप्तम अष्टम द्वादश व प्रथम स्थानमें शुक्र पड़े अथवा मंगल सूर्य व इनमेंसे कोई पड़े तो विस्फोटक खता होवे और शुक्र जिस राशिका इन घरोंमें पड़े जन्मसे गिनकर उसी महीनेमें खता गूमड़ा होवे और आठवें मंगल स्वराशिका पड़े तो तीनखने परसे तीन वक्त गिरे पर मरे नहीं, न अंग भंग हो और कर्कके बृहस्पति अष्टम पड़े तो निर्जल कूपमें पड़े और मूत्रेन्द्रीमें दो छिद्र होवें ।

(११) ग्यारहवें घर गुरु व शुक्र वर्गोत्तमी पड़े तो सुवर्ण हाथी घोड़ा व लक्षोंका लाभ हो परन्तु धन रंडीबाजीमें खर्च हो सूर्यादि अन्य ग्रह पड़े तो लाभ अच्छा न हो और स्वगृही शनि पड़े तो लाभ ठीक हो ।

(१२) बारहवें शनि पड़े तो सदा कर्जदार रहे और कर्ज मिलता भी रहे, उसका धनराजदण्डमें जावे, बुढापेमें नेत्रोंकी दृष्टि क्षीण होवे और

राहु आठवां होवे तो किसी वक्त भूत लगे, राशिसे व लग्नसे १२ वाँ बृहस्पति जिसके पड़े वह तीर्थाटनमें व मांगलिक कार्यमें धन खर्च करे, तीर्थाटन करे परन्तु कृपण होवे और मूर्तिमें कर्क, धन, मीन व सिंहकी बृहस्पति पड़े तो वह जाली पण्डित होता है, माथेमें खल्वाट हो और एक पुत्र व सात कन्या होवें। पञ्चममें यही योग होवे तो मंत्रविद्यामें निपुण हो और एक पुत्र कठिनसे होवे।

अब जो सन्तानार्थ प्रश्न करे उस प्रश्नका फल लिखा जाता है-जो पञ्चम घरमें गुरु व शुक्र बलिष्ठ हो व ये ही नवममें हो तो सन्तति योग करते हैं, शुक्रसे व चन्द्रसे कन्या व गुरुसे पुत्र, यदि ये ग्रह मंगल व सूर्य युक्त हों तो गर्भपात कहना। जो लग्नसे दशम पर्यन्त बलिष्ठ ग्रह होंय तो वह जिस स्थानमें बैठे उतनेही महीनेका गर्भ कहना और जिस लग्नमें बलिष्ठ ग्रह बैठे उसी लग्नमें जन्म कहना।

अथ उपासना विषय

नवम गुरु होवे तो राम उपासी, चन्द्रसे शिवोपासी, मङ्गलसे राम उपासी, बुधसे दुर्गोपासी, शुक्रसे विष्णु उपासी, शनिसे नास्तिक। मूर्ति व नवमस्थानमें मङ्गल पड़े तो महाक्रोधी होवे लोभी होवे।

अथ स्थूलमतसे आयुष्मान्

लग्नेश कहीं पड़ाहो और छठे व आठवें पापी चन्द्रमा न हो और अष्टमेश कहीं हो परन्तु लग्न व पञ्चम नवम स्थानमें सौम्यग्रह उच्चका हो तो १०० वर्षकी उमर होती है और उच्चके शुक्र से ७० वर्षकी तथा उच्चका गुरु हो तो सौवर्षकी उमर होती है और यही स्वक्षेत्री होतो ६५ वर्षकी आयु होती है। लग्नेश, अष्टम पति, दशमेश और शनिश्चर ये चारों केंद्र त्रिकोण और लाभमें हो ऐसे योगवालेकी दीर्घ आयु होती है, लग्नेश अष्टमेश दोनों चर राशिस्थ हों तो इस योगसे दीर्घ आयु होती है।

लग्नेश और अष्टमेश इन दोनोंमेंसे कोई एक स्थिर राशिपर हो और दूसरा द्विस्वभाव राशिपर हो तो इस योगसेभी दीर्घायु होती है, लग्नेश और अष्टमेश दोनों इकट्ठेवा पृथक् पृथक् स्थिर राशिपर हों तो इस योगसे अल्पायु होती है लग्नेश और अष्टमेश इन दोनोंमेंसे कोई एक चर राशिस्थहो और दूसरा द्विस्वभाव राशिस्थ हो तो इस योगसे अल्पायु होती है, लग्नेश और अष्टमेश इन दोनोंमेंसे कोई एक चर राशिस्थ हो और दूसरा स्थिर राशिस्थ हो तो इस योगसे मध्यायु होती है लग्नेश और अष्टमेश दोनों द्विस्वभाव राशिस्थ हों तो इस योगसेभी मध्यायु होती है ।

अथ अङ्गविचार

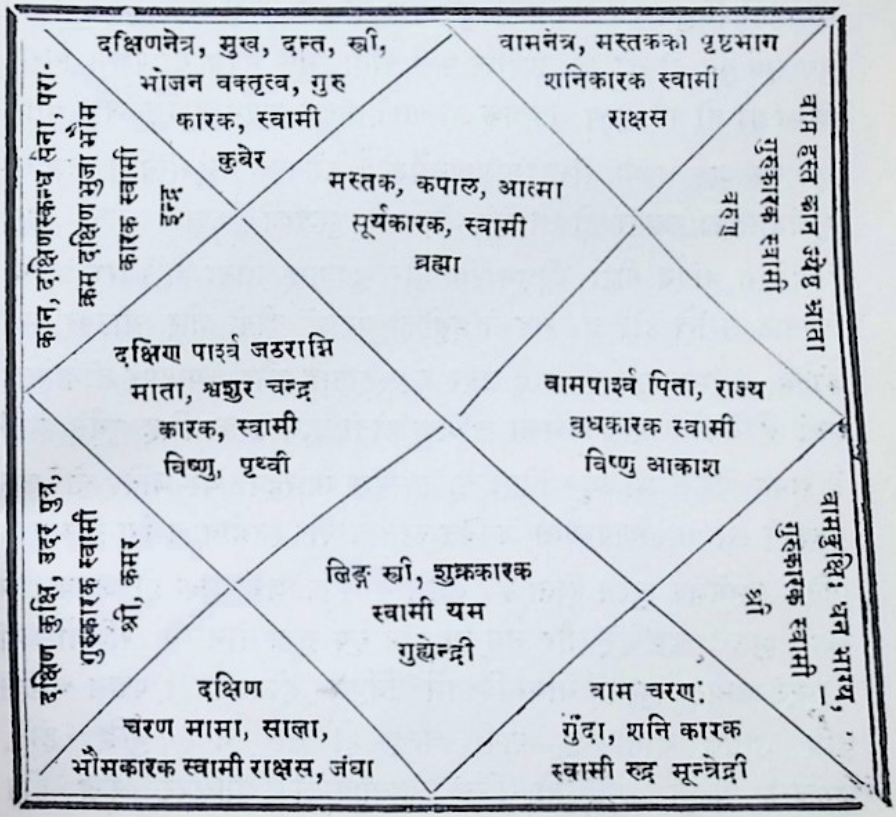

लग्नमें मङ्गल मेष, वृश्चिक वा मकर राशिका हो तो मुखपर चेचकके दाग होंवे, नेत्र छोटे हों कृश तन् हो दीर्घ नासिका होवे, जो फल मूर्त्ति वर्त्ती भौमका है वही सूर्यका है परन्तु इन दोनोंमें अन्तर यह है कि सूर्यसे चेचकके चिह्न न होवेंगे प्रत्युत शिरमें चोट होगी, तथा भौमसे चोट विस्फोटक, चेचक इत्यादि सब कुछ कहना, परन्तु उपरोक्त राशिका मंगल होना चाहिये अन्यथा फल सामान्य देगा, सूर्यका चिह्न गोल और छोटा होता है, तथा मंगलका चिह्न बडा और तिरछा होता है, बुध मिथुन व कन्याका लग्नमें हो तो रंग गोरा नाजुक मिजाज होता है अथवा मूर्त्तिवर्ती मिथुन कन्या लग्नको बुध देखें तो भी यही फल कहना। जो बुध सूर्य युत हो तो भी उपरोक्त फल होगा, बुध नवम या पञ्चम स्वराशिका हो तो वह पुरुष तुतलाके बोलता है नवम पञ्चम द्वादश और तनमें बुध गुरु शुक्र एकत्र हों तो बालापनमें तीर्थ करे कर्क धनु मीनका चन्द्रमा पूर्णिमासीका लग्नपर हो तो ऐसे योगवाले पुरुषका कपाल गोल, सम विभक्तांग, गर्दन मोटी, गोधूम रंग और रूपवान् होता है, शिरके चिह्न खल्वाट सरीखे होते हैं, रीढकी हड्डीकी बगलसे दोनों ओर पीठपर बाल होतेहैं, वक्षस्थल पुष्ट होता है उदर बड़ा होताहै और कपालपर तीन रेखा होती हैं जिनमेंसे नीचेकी रेखा खण्डित होती है,नस्तरका चिह्न सूर्यसे होता है सप्तम शुक्रसे स्त्री स्थूल होती है, सप्तमेश ग्यारहवें घर जावे तो उस पुरुषकी स्त्री आमरणपर्य्यन्त जीवित रहतीहै और स्वभाव व रंग भार्य्याका पतिके सप्तमेशके तुल्य होता है, लग्नमें वा त्रिकोणमें शुक्र हो अथवा ये स्थान शुक्रसे दृष्ट हों और उन स्थानोंमें वृष तुला मीन ये रशियाँ हों तो ऐसे योगसे पुरुष गायनविद्यामें निपुण होता है। पञ्चम चन्द्रसे बुद्धि शीतल होती है, पापी चन्द्र हो तो मन्द बुद्धि होवे, शुभचन्द्र पञ्चम हो तो जिस संख्यावाली राशिपर चन्द्र होवे

उतनीही कन्या उस पुरुषके होवें, बुध व शनि सप्तम घरको देखे वा सप्तम घरमें इन ग्रहोंकी राशियां हों अथवा बुध शनि सप्तमस्थ हों, और मंगल व सूर्यसे दृष्ट हों तो ऐसे योगवाला पुरुष अपनी गुदाका भञ्जन परपुरुषसे हमेशा करवाता रहता है।

शरीर देखकर ग्रह बतानेकी रीती

प्रथम मनुष्यका मुख देखना जिसके गाल बैठे हुए हों उसके लग्नमें सूर्य वा मंगल अवश्य हैं, जिसके नेत्र बड़े हों उसका वृष, तुला, धनु मीन और कर्क इन लग्नोंमें से कोई एकमें अवश्य जन्म है अथवा लग्नमें शुक्र या गुरु स्थित है अथवा लग्नको देख रहे हैं जिसकी नासिका ऊँची नेत्र और भौंह बड़े हों नेत्र बड़े क्रूर और चहुँ ओर श्वेत हो तो उसके नवम शुक्र कहना, जिसकी छाती पतली हो उसकी जन्म कुंडलीके चौथे घरमें पापग्रह मौजूद है तथा वक्षस्थल पुष्ट व चौड़ा हो तो चौथे घरमें सौम्य ग्रह होगा, जो सुस्त चित्त हो शांतस्वभाव हो बुद्धि मंद हो और आवाज बड़ी हो उसके चतुर्थ गुरुपड़े होंगे, जो बालापनसे कंगाल हो उसके ग्यारवें घर सूर्य होंगे, जिसके एकादश घरमें मंगल वा सूर्य हो उसकी भुजा पतली और कंधे ऊंचे होते हैं जिसके शनि लग्नस्थ हो उसके शिरपर बालोंकी भँवरी होती है और किसीके तिलभी होते हैं। यदि केवल तिलही हो तो शनिकी राशि लग्नपर कहना। जिसके मंगल तीसरा हो उसके भाई न कहना, यदि शनि तीसरा हो उसके पीठके भाई न जियेंगे और रविसे बड़े भाई न जियें, गुरुसे भाई होना, बुधसेभी भाई हों और शुक्रसे बहिन कहना। राहुका फल शनिवत् कहना। जिसके पांचवें घर रवि होगा उसके पेटपर अग्नि दग्ध होगा, मंगलसे विस्फोटादिक वा चिह्न एकही लंबा चौडा और अग्निका भी एकही लंबा चौडा निशान

होगा, शनिसे पेटपर तिलके बहुत चिह्न कहना, बुधसे अकलपर चञ्चलता गुरुसे पांडित्य शुक्रसे गायक राहु केतुसे कमरमें दाद गोलाकी बीमारी पेटकी खाल पतली हों. ६ ठा घर सूर्य मङ्गल शुक्र पड़े हों तो दाहिना पांव टूटा कहना, बाकी चिह्न पूर्वोक्त कहना. ७ वां घर सूर्य हो तो अंड-वृद्धि कहना व्यभिचारी कहना, मङ्गलसे इन्द्रीमें बीमारी, बुध गुरुसे स्वरूपवान् व शनिसे इन्द्रीपर तिल व रूपवती भार्याकी प्राप्ति हो, राहु केतुसे स्वरूप भयङ्कर और बेडौल कहना, अष्टम सूर्यसे गुदारोग डेरे पांवमें सूर्यका पूर्वोक्त चिह्न मङ्गलसे ऊंचेसे गिरना और जिसके पांवमें ज्यादे बाल हों उसके अष्टम घर शनि या पापग्रह कहना, गुरुसे वह अङ्गपुष्ट बुधसे अच्छा शुक्र विस्फोटकादिक व गूमडे करता है, शनि डेरे-पैरमें चोट लाता है, नवम गुरुसे भजनानन्द व कुछ स्वरूपवान् कहना 'शुक्रसे मन्दभागी और शुक्र स्वराशिका हो व सौम्यराशिका हो तो उग्र-भागी परन्तु आवाज भरीटेदार मन संकुचित शांतवृति, रविसे क्रोधी आंखे तीक्ष्ण, मङ्गलसे दुर्बल शुष्क, नेत्रोंमें कुछ लाल डोरे, स्कन्धपर विस्फोटकका चिह्न शनिसे डेरे कपोलपर तिलादि चिह्न होते हैं। दशम रवि हो तो वामपार्श्वमें विस्फोटक व अग्निका चिह्न कहना, यदि सूर्य पाप-क्रान्त हो तो पिताका सुख कम, भाग्य मध्यम, सुदीका चन्द्रमा हो तो भाग्य अच्छा, यदि पापाक्रान्त हो तो पिताका सुख नेष्ट, मङ्गलसे राज्य-मान डेरे पार्श्वमें चिह्न ज्यादे और पेटपर कम क्योंकि मङ्गलकी दृष्टि पेट-पर पडती है, बुध गुरु शुक्रसे फल अच्छा, कुछ भाग्यहीनता गुरुसे होती है।

शनिसे वाम पार्श्वपर तिलादि और शनि स्वगृही हो तो भैंसोंकी आजीविका, ग्यारहवें सूर्य हो तो भुजा पतली, स्कंध भुजासे ऊंचे, भुजा नीची, कुहनीके नीचे, मोटा, हाथ लम्बा, अंगुली पतली, नसें दीखती

हैं, मिहनतसे लाभ व मुश्किल हो, मङ्गल हो तो लाभ सूर्यवत् स्कन्धपर विस्फोटकादि चिह्न बुधसे भुजा पतली रूपवान् एकसी शुक्रसे मोटी गुरुसे बहुत अच्छी शनिसे तिलादि चिह्न ऐसेही राहु केतुसे जानना ।

बारहवें सूर्य हो तो नेत्र रोग सूर्य राहु हों तो वाम नेत्रमें फुली कहना, वाम कनपटी आँखके नीचे विस्फोटकादिका चिह्न कहना, चन्द्रसे आँखका रोग और उसके सींग लगे, शीतकी बाधा रहै मङ्गलसे स्त्री मरे स्त्री कर्कशा, नेत्रके समीप विस्फोटकादि चिह्न डेरे नेत्रके समीप कहना, मिथुनका बुध हो तो नेत्र चञ्चल अच्छे, गुरुसे पुष्टता अच्छी, शुक्र हो तो कान बहें, स्वक्षेत्रीसे कान फटे; शनिसे मन्द दृष्टि रतोंधसी, डेरी तरफ वर्णके आगे तिलके चिह्न दाहनी तरफ कम चिह्न, व्यय अधिक हो और राजभय हो ।

अथ राशि लक्षण

मेष लग्नसे मस्तक अर्थात् ललाटके सिरेपर विस्फोटकके चिह्न व चोटका चिह्न होगा, ऊँचा कद माथा छोटा कुछ कपालमें झील कृश तनु हो । वृष लग्नसे गठीला वदन गाल फूले हुए, कद मध्यम, कपाल चौड़ा हो । मिथुन लग्न हो तो ह्रस्व आकार खूब सूरत वदन, कमरसे नीचे पतला, चिकने गाल, स्त्रीके तुल्य डाढ़ी कम । कर्क लग्न हो तो ऊँचा पुरुष. वदन सामान्य, कन्धे ग्यारहवें सूर्यके तुल्य कहना । सिंह लग्न हो तो मस्तकपर चोट, क्रूर स्वभाव, ऊँचा कद, माथा, बड़ा, नेत्र कुछ छोटे हों । कन्या लग्नसे ह्रस्व आकार दुर्बल स्वरूप । तुला लग्नसे मस्तक बड़ा, कद मियाना, अङ्ग पुष्ट । वृश्चिक लग्नसे मस्तकमें विस्फोटक व चोटका चिह्न, कद मध्यम, वदन मध्यम, मुखपर कुछ लम्बाई, स्वभाव अच्छा । धन लग्नसे रंग गोरा मुख पर तिसके चिह्न, कद लम्बा, शरीर दुर्बल ।

मकर लग्नसे ऊँचा रंग सांवला, स्वरूपवान्, मुखपर तिलादि चिह्न, मुख छोटा, नेत्र छोटे। कुम्भ लग्नसे देह मध्यम, दुर्बल धनी मुख फीकासा, गाल बैठे हुए। मीन लग्नसे पस्ता कद स्वरूप गठीला वर्ण ठीक बुद्धि अच्छी, वक्षस्थल अच्छे।

जिसका मुख चिकना हो नाक नुकीली हो उसके कर्कके गुरु लग्नमें कहना, जिसके पेटभर खताका चिह्न हो उसके निश्चय पंचम मंगल कहना, जिसके मूर्तिमें मंगल हो उसका शरीर निश्चय दुबला होगा, पंचम मंगल मकर कुम्भ हो तो निस्सन्तान कहना, माथेमें चोटका चिह्न हो वा खताका चिह्न हो तो लग्नमें मंगल कहना, जिसके पञ्चम गुरु उच्चका व स्वक्षेत्री हो तो वह निश्चय झूंठा होता है, जो बहुत बकवाद करे उसके पञ्चम बुध कहना।

अथ भावविचार

श्लोक-सूर्याद्दशमके तातश्चन्द्रान्माता चतुर्थके।
भौमात्तृतीये भ्राता च बुधात् षष्ठे च मातुलः॥
गुरोस्तु पञ्चमे पुत्रः शुक्रात् सप्तमके स्त्रियम्।
शनितश्चाष्टमे मृत्युर्जन्मकाले विचिंत्यते॥

अर्थ—पिताका कारक सूर्य है इस लिये सूर्यसे दशम घर पिताका विचार करना और मातृकारक चन्द्रमा है इसलिये चन्द्रसे चौथे घर माताका विचार करना, भ्रातृकारक मंगल है इसलिये मंगलसे तीसरे घर भाईका विचार करना और मामाका कारक बुध है इस लिये बुधसे छठे घर मामाओंका विचार करना, पुत्रकारक गुरु है इस लिये गुरुसे पञ्चम भावमें पुत्रका विचार करना, स्त्रीकारक शुक्र होनेसे शुक्रसे सप्तम भावमें स्त्रीका विचार करना, मृत्युका कारक शनि है इसलिये शनिसे अष्टम घरमें मृत्युका विचार करना ये सब बातें जन्म कुण्डलीसे विचारना।

अथ ग्रहोंकी शुभाशुभ अवधिज्ञान

श्लोक—द्वाविंशो दिननाथवर्षकथितश्चन्द्रे चतुर्विंशति-रष्टाविंशतिकः कुजस्य कथितो दंते बुधस्य स्मृताः ॥ जीवे षोडश पञ्चविंश भृगुजे षष्ठात्रिसौरिर्वदेदुच्चस्था यदि केन्द्रगाः शुभखगाः कुर्वन्ति भाग्योदयम् ॥ १ ॥

अर्थ--सूर्य अपना शुभाशुभ फल जन्म कालसे २२ वें वर्षमें देते हैं, चन्द्रमा २४ वें वर्षमें, मङ्गल २८ वें वर्षमें बुध २६ या ३२ वें वर्षमें, गुरु १६ और ३२ वर्षमें, शुक्र २६ और ४२ वें वर्षमें शनि ३६ वें वर्षमें, तथा राहु और केतु ४२ वें वर्षमें अपना शुभाशुभ फल देते हैं ।

अथ मूकप्रश्न तथा मानसाचिंता वाहन पुष्पादि प्रकार

मेष लग्नमें चरका नवांशा याने १ । ४ । ७ । १० हो तो घोड़ा मनमें लिया है ऐसा कहना, चरलग्नमें स्थिर राशिका नवांशा हो तो हाथी कहना और द्विस्वभावका नवांशा हो तो इच्छा हाथीपर जायगी पर कहेगा घोड़ा, वृष लग्न हो और उसमें नवांशा मेष सिंह धन मकरका हो तो वाहन रथ कहना और नरराशि मिथुन कन्या तुला और कुंभ लग्नें होयँ और इनमें इन्हींका नवांशा होय तो नरवाहन पालकी वगैरह कहना और वृष लग्नमें वृषका नवांशा होय तो गज कहना, और चर लग्नमें मकर वृश्चिक धनका नवांशा हो तो ऊंट कहना और इन्हीं लग्नोंका द्विस्वभाव राशिमें नवांशा हो तो ऊंट कहना ।

अथ पुष्पचिन्ता

मेष लग्नमें मेषका नवांशा हो तो लाल कनेर सुगन्धिहीन कहना, मेष लग्नमें वृश्चिकका नवांशा हो तो अनारका फूल कहना, मेषका नवांशा हो

तो गुलाब और कर्क व सिंहके नवांशासेभी गुलाबका फूल कहना, मेषमें मिथुनका नवांशा हो तो तोरईका फूल और मेषमें कन्याका नवांशा हो तो गुलबाँस, तवड्या, चित्रविहित्र फूल कहना, मेषमें धनका नवांशा हो तो रायचम्पा सुगन्ध युक्त कहना, और वृषमें वृषका नवांशा हो तो मोगरा, वृषमें कर्कका नवांशा हो तो चमेली, वृषमें सिंहका नवांशा हो तो श्वेत चम्पा, वृषमें कन्याका नवांशा हो तो कमल, वृषमें तुलाका नवांशा हो तो केवड़ा,वृश्चिकका हो तो गुलाब, धनका हो तो श्वेत चम्पा, मकरका हो तो गिरिमल्लिका याने मालचमेली, कुम्भका हो तो धतूरा, मीनका हो तो गुलदावली और वृषमें मेषका नवांश हो तो कमलका फूल कहना। मिथुनमें मिथुनका नवांशा हो तो मकारादि तीन अक्षरका फूल कहना, मिथुनमें वृश्चिकका नवांशा हो तो गकारादि तीन अक्षरका फूल कहना, वृषमें वृषका नवांशा हो तो मकारादि तीन अक्षरका फूल कहना, सिंहमें सिंहका नवांशा हो तो जकारादि तीन अक्षरका फूल, सिंहमें कुम्भका नवांशा हो तो तकारादि तीन अक्षरका फूल, कन्यामें कन्याका नवांशा हो तो जकारादि दो अक्षरका फूल, तुलामें तुलाका व वृषका नवांशा हो तो मकारादि तीन अक्षरका फूल, वा मेषका नवांशा हो तो ककारादि तीन अक्षर व तकारादि चार अक्षरका फूल, धनमें धनका नवांशा हो तो अकारादि दो अक्षरका फूल कहना। जो कुम्भ राशिमें मकर कुम्भका नवांश होय तो महिष वाहन कहना, चतुष्पद राशि लग्नमें नीच राशिका नवांशा हो तो और मिथुनका व धनका उत्तरार्द्ध होय तो गर्दभ वाहन कहना, और अग्नि तत्त्वकी लग्न तथा नवांशा होय तो रेल वाहन कहना, मकरमें मकरका नवांशा हो तो

लकारादि अक्षरका फूल कहना, लग्न राशि तथा नवांशा राशि इन दोनोंका स्वामी एक हो तो एक रंगका फूल कहना, और लग्नराशि नवांशराशि इन दोनोंका स्वामी अलग अलग हो तो मिश्रित रंगका फूल कहना, लग्नराशि बलवान् हो तो लग्न रंग तुल्य रंग कहना और नवांशाराशि बलवान् हो तो नवांशाराशि तुल्य रंग कहना।

द्वादश राशियोंके तत्त्वज्ञान-

मे.	वृष.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि.
अ.	क्षि.	वा.	ज.	अ	क्षि.	वा.	ज.	अ.	क्षि.	वा.	ज.	तत्त्व.
पु.	स्त्री.	न.	पु.	स्त्री.	न.	पु.	स्त्री.	न.	पु.	स्त्री.	न.	स्त्रीपुरुषादि.

लग्नका वर्ण और नवांश राशि वर्ण दोनोंसे रंग जानना, पृथ्वी तत्त्वकी लग्न होय तथा नवांश होय तो पृथ्वी तत्त्वकी राशिकी सुगन्ध युक्त वस्तु जानना और पुरुष स्त्री नपुंसक इनके भेदसे वस्तुकी पुरुष स्त्री नपुंसक जाति जानना और लग्नमें तथा नवांशमें जलचर राशि होय तो जलसे उत्पन्न वस्तु जानना और पृथ्वी तत्त्वकी लग्न तथैव नवांश हो तो पृथ्वी-जनित मूल वस्तु जानना और ग्रामचारी राशि व नवांश होय तो बगीचा-जनित वस्तु जानना; वनचारी लग्न व नवांशा होय तो अरण्यजनित वस्तु जानना; लग्न व नवांशमें जो बलवान् होय उसीके तुल्य ह्रस्व दीर्घ मध्यम वस्तु जानना, वृक्ष चिन्तामें नपुंसक राशि होय तो अफल वृक्ष कहना।

अथ सूत्रः

(लग्नेशो ब्रह्मा, सुखकर्मेशो विष्णुः, धीधर्मेशा श्रीः, गुह्येशो रुद्रः, धनेशो धनदः, नगेशो यमः, सहजेशो देवेन्द्रः, रिपुव्ययेशो राक्षसः,लाभेशो वरुणः, ब्रह्मालक्ष्मीनारायणाभ्यां राज्यश्रीः, सुखं च)

अर्थ—लग्न चौथे, दशवें पांचवें और नवें घरके स्वामी इकट्ठे होकर केन्द्र त्रिकोणमें बैठे तो सारभूमि राजा होकर महाराज्य लक्ष्मीका भोग करे और उसको स्वप्नमें भी किसी प्रकारका दुःख नहीं व्यापे ॥ (विष्णुना राज्य-सुखम्) लग्नेश चौथे, दशवें घरके स्वामी इकट्ठे होवें तो राज्यसुख होवे (लक्ष्म्या धनसुखम्) लग्न, पंचम और नवमके स्वामी केन्द्र त्रिकोणमें होवें तो धनका पूर्ण सुख हो ॥ (राक्षसेन रोगदारिद्रौ) छठे बारहवें हों तो जन्मरोगी और महादरिद्री होवे ॥ (यमेन मृत्युः) सप्तमेश और लग्नेश इकट्ठे होकर छठे आठवें बारहवें बैठे तो थोड़ी उमर याने अल्पायु होवे (रुद्रेण धनधान्यदेहलयम्) अष्टमेश और लग्नेश इकट्ठे होकर छठे आठवें बारहवें बैठे तो राज्य धन दौलत और शरीर इन सबका थोड़ी उमरमेंही नाश होवे ॥ (धनदेन धनम्) लग्नेश और दूसरे घरका स्वामी नवम पंचम हो और उनका स्वामी भी वहीं हो तो दिनपरदिन राज्यलक्ष्मी बढे ॥ (वरुणेन व्यापारलक्ष्मीः) लग्न और लाभके स्वामी इकट्ठे होकर केन्द्र त्रिकोणमें बैठे तो व्यापार करनेसे ज्यादहसे ज्यादह धन बढे (केन्द्रत्रिकोणलाभेषु पूर्णम्) ऊपर लिखे योग केन्द्र त्रिकोण और लाभमें हों तो पूर्ण फल होवे ॥ (स्वामी शुभयुतदृष्टे श्लाघनीयम्) केन्द्र त्रिकोणमें पूर्ण लिखे योग होवें और उसका स्वामी भी साथ होवे तो तारीफ करनेके लायक अच्छा फल हो ॥ (शुभे शुभं त्रिस्थे सुखं दुःखं सर्वत्र योजनीयम्) ऊपर लिखे योग शुभ स्थानमें होवें तो शुभ फल करे और छठे आठवें बारहवें होवें तो सुखदुःख दोनों देवें ॥ (पुत्रेशो इन्दुना केन्द्रकोणे दत्तपुत्रसुखं व्ययेशेनाययुतम्) पुत्र घरका स्वामी चन्द्रमाको लेकर लाभमें अथवा नवम पञ्चम होवे और व्ययेश न मिला-होवे तथा उच्च और स्वक्षेत्री होवे तो अपने जीतेजी राज्य

धन सुख भोगकर अन्तमें दत्त पुत्रको देवे॥(पुत्रेशे लग्नेशेनायुते दत्तपुत्रयोगः केन्द्रे कोणे राजलक्ष्मी दास्यति त्रिस्थे सुतेशे लग्नेशेनायुते त्रिकेशेनापि) पञ्चम और लग्नके मालिक इकट्ठे होवें तो दत्तपुत्र योग जानना और यह दोनों केन्द्र त्रिकोणमें होवैं तो राजलक्ष्मी दत्तपुत्रको देवें और वह दोनों छठे आठवें बारहवें तथा उनका मालिक भी वहीं होवे तो दत्तपुत्र राज-लक्ष्मी जबरन ले लेवे ।

अथ व्यभिचारयोगः

लग्नेश लग्नमें व सप्तम हो और सप्तमेश शनि शुक्रकी राशिपर केन्द्रमें हो और चतुर्थ शुभग्रह हो तो यह योग प्रथम श्रेणीके व्यभिचारका है, सतमेश शुक्र शनि राहु करके युक्त हो और शुक्रपर मंगलकी दृष्टि हो तो यह योग व्यभिचारका है, जिसके अष्टम चन्द्रमा हो वह व्यभिचारी होता है, सप्तमेश और चन्द्र लग्नेश शनिसे पूर्णदृष्ट हो तो यह योग भी अव्वल दरजेके व्यभिचारका है, सप्तमेश सप्तम भवनमें शुक्र बुध केतु करके संयुक्त बैठा हो और लग्नेशसे दृष्ट हो और अष्टममें कोई ग्रह हो तो प्रथम श्रेणीके व्यभिचारका योग है, उसके दो स्त्री अवश्य हों, पञ्चममें धनके बृहस्पति हो और सप्तमेश करके युक्त हो तो ऐसे योगमें पैदा हुआ मनुष्य ब्रह्मचारी व बहुत सन्तान वाला होता है, जिसके पञ्चमेश और सप्तमेश दोनों इकट्ठे होकर पञ्चम घरमें बैठें उसके बहुपुत्र योग कहना, जिसके सप्तम सिंहके सूर्य हों उसकी जठराग्नि अत्यन्त प्रबल होगी, भोज-नका इच्छुक व सूपशास्त्री होगा ।

जिसके चौथे घर मीनका शुक्र हो और पञ्चम मेषका सूर्य हो तो उसके अक्षर अच्छे होते हैं यदि सूर्यके साथ शनि, और शुक्रके साथ मंगल हो तो हिन्दी फारसी दोनोंके अक्षर अत्युत्तम कहना, यदि शुक्रके

साथ चन्द्र और सूर्यके साथ बुध हो तो केवल हिन्दीके अक्षर अत्युत्तम कहना, फारसीमे अज्ञ है।

जिसके मेषका शनि सूर्यसहित पञ्चम बैठे व दशम बैठे और सप्तमेश छठा हो उसके पथरीका रोग कहना, शनिसहित यदि मंगल हों तो भी यही रोग कहना।

अथ निस्सन्तानयोगः

जिसके मेष और वृश्चिक राशिपर इकेला शुक्र किसी स्थानमें बैठा हो और विशेषतः पञ्चम घरमें हो तो उस पुरुषकी धातु निर्जीव होती है और जिसके मंगल शुक्रकी राशि याने वृष तुलाका हो तो स्त्रीके रजमें गर्भाधान शक्ति न कहना, और स्त्रीकी कुण्डलीमें इससे विलोम कहना और इकली कुण्डलीमें दोनों योग हों तो स्त्री पुरुष दोनोंका रज वीर्य शक्तिहीन कहना।

जिसके जन्म कुण्डलीमें शुक्र मंगलके क्षेत्रमें हो और मंगल शुक्रके क्षेत्रमें हो तो उस पुरुषका वीर्य निस्तुष होवे, स्त्रीका रक्त गर्भपिण्ड अच्छी तरहसे न बनावें, शुक्र मंगल एकत्र होवे व शुक्र कुज क्षेत्रमें होवे तो अन्य क्षेत्रमें गर्भपिण्ड बने, योगिराजका भी वीर्य परक्षेत्रमें पड़े गर्भ रहे स्त्री पुत्रवत् प्रीति होवे अति प्रिय होवे।

मंगल और चौथे घरका स्वामी जिस कुंडलीमें परस्पर संबंध किसी प्रकारका करते होवें तो माता तीन आवृत्ति जीती है और चौथे घरका स्वामी सूर्य हो तो माता १२ बारह वर्ष चन्द्र होवे तो २४ चोवीस वर्ष, मंगल होवे तो ३६ छत्तीस वर्ष, बुध हो तो ४८ वर्ष माताका सुख उसी योगमें होता है।

अथ अन्ध योग

द्वितीयेश और द्वादशेश दोनों इकट्ठे या पृथक् २ हों और सूर्य या चन्द्र अथवा दोनोंमेंसे किसीके साथ हों तो उसी नेत्रमें विकार कहना, सूर्यसे दिवांध और चन्द्रसे रात्र्यंध कहना, यदि शुक्र इनके साथ योगकरे तो नेत्रमें फुली, जाला, तिरछापन कहना, जो लग्नेश सूर्य या चन्द्र दोनों नेत्रपति सहित मय शुक्रके हों तो अन्ध योग हो, परन्तु देवी या औषधिसे नेत्रोंमें आराम हो सकता है। यदि इन सबका संगम छठे आठवें बारहवें घर हो तो जन्म अन्ध कहना।

बारहवें या सप्तम राहु हो तो ४२ वें वर्ष स्त्रीका वियोग कहना, गुरु बुध और दूसरे घरका स्वामी इकट्ठे होकर छठे आठवें बारहवें घर बैठे तो मूकता या कम बोलना कहे, पापग्रह या नीचेके हों तो मूकता हकलाना होता है।

अथ गोचरफलम्

मनुष्यके चन्द्रराशिसे जब गुरु प्रथम नवम पंचम या सप्तम आवे तो उस वर्षमें भार्याके आधीन रहकर उसीमें अथवा अगले वर्षमें पुत्रप्राप्ति होती है यह योग वर्षलग्नमें भी हो तो निश्चयसे पुत्रप्राप्ति होती है. इसी तरह चतुर्थ गुरु विवाहादि मङ्गलकार्य करावें, अष्टम गुरु तीर्थ करावें, द्वादश गुरु शुभ कार्य तीर्थादिमें खर्च करावें।

अथ मतभेद

श्लोक—द्वादशदशमचतुर्थे जन्मनि षष्ठाष्टमे तृतीये च।
व्याधिर्विदेशगमनं मित्रविरोधं सुरगुरुः कुरुते ॥१॥
द्वितीयः पञ्चमः सप्तनवमैकादशो गुरुः।
अन्नं विविधभोगांश्च रत्नानि कुरुते गुरुः ॥२॥

द्विजन्मनि पञ्चमसप्तमगाश्चतुरष्टमद्वादशधर्मयुताः ।
धनधान्यहिरण्यविनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः ॥३॥

अर्थ-बारहवें, दशवें, चतुर्थ, पहले, छठे, आठवें, तीसरे गुरु जन्मराशिसे हों तो रोग परदेशयात्रा मित्रसे विरोध कराते हैं ॥ १ ॥ दूसरे, पांचवें, सातवें नवें एकादश गुरु नानाभाँतिके सुख देते हैं ॥ २ ॥ जन्मराशिसे दूसरे, पहले, पांचवें, सांतवें, चौथे, आठवें बारहवें और नवें स्थानमें सूर्य राहु शनि और मङ्गल धनधान्यका विनाश करते हैं ॥३॥

अथ अन्धयोगः

कर्क लग्नका स्वामी चंद्रमा शनि भौमसे दृष्ट हो तो अन्धयोग करे, लग्नमें सूर्य हो और शनि भौमसे दृष्ट हो तो अन्धयोग करे, लग्नमें चंद्रमा हो और शनि भौमसे दृष्ट हो तो अन्धयोग करे, दूसरे घर सूर्य हों और शनि भौमसे दृष्ट हो तो ऐसे जन्मग्रहोंसे मनुष्य वाम नेत्रसे अंधा होता है, बारहवें घर सूर्य हों और शनि भौमसे दृष्ट हो तो ऐसे योगसे मनुष्य दक्षिण नेत्रसे अन्धा होता है, दूसरे घर चन्द्रमा हो और शनि भौमसे दृष्ट हो तो इस योगसे भी मनुष्य दक्षिण नेत्रसे अंधा होता है और जो बारहवें चन्द्रमा शनि भौमसे दृष्ट हो तो बाम नेत्रसे अंधा होता है ॥

अथ पतनयोगः

लग्नमें सूर्य या मंगल हो तो मनुष्य वाहनसे या किसी ऊंचे स्थानसे गिरता, जो सप्तम सूर्य मंगल हो तो भी ऊंचे स्थानसे गिरेगा. अष्टमेश षष्ठ हो तो भी पतन योग कहना, लग्न सप्तम अष्टम घरको या शनि भौम देखें तो इस योगसे मनुष्य ऊपरसे गिरता है, चतुर्थ षष्ठ अष्टम द्वादश चन्द्र हो तो जलमें डूबकर बच जाता है, अष्टमेश चन्द्रमा

जल राशिस्थ हो और जलग्रह करके युक्त हो तो ऐसे योगसे भी जलमें डूबकर मनुष्य बच जाता है, जिसकी जन्मकुण्डलीमें चतुर्थेश मूर्तिवर्ती हो वह पलकीमें बैठता है, जिसके मूर्त्तिमें गुरु हो वह हाथीपर अवश्य बैठता है, तृतीय गुरु हो या बारहवें मंगल हो अथवा चौथे या नवम राहु या शनि हों तो ऐसे योगसे मनुष्य कृपण याने कंजूस होता है।

जिसके तुलाके गुरु पञ्चम हो अथवा मेष राशिके गुरु ग्यारहवें घर हो तो इस योगसे मनुष्यके प्रथमपुत्र होय और पुत्र होकर मर जावे फिर आयंदा पुत्र न होय, जो कुंभ राशिका गुरु इकेला पञ्चम होय तो अपुत्र-योग करता है, व्यापार योगकी प्राप्तिमें शुक्रसे वस्त्रका व्यापार मंगलसे धान्यकाव्यापार शनिसे अफीमका व्यापार चन्द्रसे ढोर गाय बैलोंका व्यापार कहना।

अथ चोरप्रकरणम्

चतुर्थेश लग्नमें हो और शुभग्रहसे दृष्ट हो तो तत्काल नष्ट वस्तु मिले, लाभेश धनेश शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो और शुभ घरमें हो तो नष्ट वस्तुका लाभ कहना. लग्नमें चन्द्र हो तो प्राप्ति कहना और गमनागमन प्रश्नमें इससे जलदी आगमन कहना, तनुमें सूर्य अष्टम राहु हो तो नष्ट वस्तु नहीं मिलेगी, केवल अष्टम राहु हो वा केतु हो और लग्न खाली हो तो चोरके बेड़ी पड़े और पदार्थ मिले. चतुर्थेश पापाक्रान्त हो और चौथे घर पापी ग्रह हो वा चतुर्थेशको देखे तो अप्राप्ति कहना, सप्तमेशसे चोरकी जाति कहना, वा सप्तममें बली ग्रह हो तो उससे जाति कहना, संयुक्तग्रहसे उसके साथीकी जाति कहना, उच्चका वक्री सप्तमेश हो तो

चोर संख्या द्विगुण वा पंञ्चगुण कहना, चन्द्रके नवांशसे उस वस्तुके धरे जानेका स्थान कहना, मकरके नवांशमें हो तो पृथ्वीमें गढा है कुंभके नवांशसे घड़ेमें, कर्कके नवांशसे जलके भीतर मकर चन्द्रमासे वस्तुका स्थान कहना, चन्द्रमा जिस दिशाको जानेवाला है यानी जिस राशिमें जावेगा उसके तुल्य दिशा कहना ।

श्लोक-मूर्तिपो नष्टधनपो जायेशश्चौरपो गतः । चद्राकौं नष्टधनपौ तदेभ्योऽत्र विनिर्णयः ॥ १ ॥ द्यूनपेन सहैकत्र बली लग्नपतिर्भवेत् । सप्तमे वाथ लग्ने वा बली लग्नेश्वरोऽर्थदे ॥ २ ॥ होरास्थितः पूर्णतनुः शशांको जीवेन दृष्टो यदि वा सितेन । क्षिप्रं प्रणष्टस्य करोति लाभं लाभोपयातो बलवान् शुभश्चेत् ॥ ३ ॥ लग्ने लग्नेशजायेशो द्यूनपो वाऽथ लग्नपः । नष्टलाभकरो द्यूने लग्नपो नाप्यते धनम्॥४॥ लग्न त्रिलाभधर्मेषु सुतसप्तचतुर्थगौ । अन्योन्यदृष्टौ सूर्येन्दू हतभातिकरौ सुखात् ॥ ५ ॥ स्त्रीग्रहे द्यूनपे स्त्रीस्यात्स्वकीयान्तर्बहिःपरा । एवं पुंसांशद्रेष्काणे पुमांश्चैव विनिर्दिशेत् ॥ ६ ॥ कीटकर्कटमीनेषु चतुर्थे तोयसन्निधौ । मेषसिंहहये भूमौ हयस्येव विनिर्दिशेत् ॥ ७ ॥ मन्मथे च तुलाकुम्भे नानाकारग्रहे भुवि । क्षेत्रमध्ये तु कन्यायां मकरे वृषभे भुवि ॥ ८ ॥ वृषभच्छागयोर्गेहे संज्ञाध्यायेऽन्यदूहयेत् । शुक्रे चन्द्रे जलाधारे देववावसतिगुरौ ॥ ९ ॥ रवौ चतुष्पदस्थानसिष्टिकानिचयो बुधे । दग्धं स्थानं कुजे प्रोक्तं शनौ राहौ च बाह्यभूः ॥ १० ॥ अमीभिर्हिबुके स्थाने

नष्टभूमिं विलोकयेत् । विस्मृतं यं यन्मया वस्तु तत्प्राप्तिं यदि पृच्छति ॥ ११ ॥ वास्तुस्थानं तृतीयं तु ग्राहकः सुखवेश्मगः । शीघ्रगस्तु ग्रहस्तत्र यदा तल्लब्धिरुच्यते ॥ १२ ॥ सूर्यर्क्षतोऽष्टेन्द्रनखत्रिविंशे धंबंधमीनाष्टशरेऽथ षोढा । ओजे समे च तरुणे च नष्टे स्थाने स्थितस्तस्य फलं न लाभः ॥ १३ ॥ सूर्यभाद्दिनभं यावत् तस्य संज्ञानुरूप फलम् ॥ ८ । १४ । २० । २३ अन्धसंज्ञा स्वस्य स्थलपार्श्वे हृतं लाभं ११ । १७ । ५ बन्धसंज्ञं स्वस्थले स्थितम् १ । ३ । ७ । ९ । १३ । १५ । १९ । २१ । २५ । २७ । षोढासंज्ञं यत्नात् लाभः । २ । ४ । ६ । १ १२ । १६ । १८ । २२ । २४ । २६ । तरुणसंज्ञायेषु भ्रष्टेन लाभः ॥

चोरीके प्रकरणमें यह ग्रंथान्तरोंके श्लोक लिखे गये हैं परन्तु इनकी परीक्षा अभीतक हमने नहीं की है इस लिये इनका अर्थ नहीं लिखा गया है । इस खण्डमें वही बातें लिखी गयी हैं जो अनेक बार परीक्षित होनेसे सच्ची साबित हो चुकी हैं ॥

सभाचौर बतलानेकी तरकीब

जितने आदमी बैठे हों उनकी संख्यामें वर्त्तमान लग्नके अंक जोड़ना और उसमें चीजके नामाक्षर जोड़ना सबको दूने करना और फिर तीन जोड़ना पुरुष संख्याका भाग देना जो शेष बचे उसी संख्याके पुरुषने चीज चोरीकी है, शुक्ल पक्षमें आदिसे गिनना और कृष्णपक्षमें अंतसे गिनना ।

अथ संक्षिप्त ताजकफलम्

जन्म लग्न वर्ष लग्न एक आवे तो वह वर्ष कष्ट दायक कहना और वर्ष लग्नसे छठे आठवें बारहवें जन्म लग्न हो तो वह वर्ष कष्ट दायक

कहना, वा जन्म लग्नेश वर्ष लग्नेश ६-८-१२ वें पड़े तो वह वर्ष कष्टका देनेवाला होता है, वर्ष लग्नसे छठे स्थानमें सूर्य शुक्र हों तो दहिने पांवमें शस्त्र भय करता है, लग्नका स्वामी सूर्य और चन्द्रमा करके युक्त हो तो इस योगसे मनुष्यको दम और खाँसीकी बीमारी होती है, लग्नेश अस्तंगत हो अथवा लग्नेश चन्द्रमासे दृष्ट हो तो इस योगसे भी मनुष्यको शर्दी और खाँसीकी बीमारी होती है, जिसके जन्मकालमें अष्टमेश लग्नस्थ हो और शुक्र और शनि ग्यारहवें और बारहवें भावमें हो तो ऐसे योगवालेकी हैजेकी बीमारीसे मृत्यु होती है, ग्रंथान्तरोंमें ताजिक सम्बंधी बहुत उत्तमोत्तम योग लिखे हैं जो आजतक किसी छपे हुए ग्रंथमें देखनेमें नहीं आते जो कि उन श्लोकोंका मैंने कभी अनुभव नहीं किया है इस लिये ग्रंथ विस्तार भयसे वे सम्पूर्ण योगायोग इस ग्रंथमें नहीं लिखे जावेंगे तथापि दिग्दर्शनकी भाँति पाठक गणोंके अवलोकनार्थ कुछ श्लोक लिखे जाते हैं ॥

यथा—यदा छिद्रनाथस्तनुस्थानगो वा तथा लग्ननाथोऽरिभावे यदि स्यात् । तदा वर्षमध्ये नराणां हि मृत्युर्भवेत्तस्य चायुध्यतो दैवयोगात् ॥ १ ॥ चन्द्रो यदा मन्दयुतोऽष्टमस्थो लग्नाधिपेनैव युतश्च दृष्टः । तदा च रोगं कुरुते नराणां विषूचिकाभिश्च गदाद्यरिष्टम् ॥ २ ॥ वर्षाधिपे शशिसुते यदि मृत्युभावे सूर्यात्मजावनिसुते द्युनगे च पापे । चन्द्रेक्षिते प्रकुरुते मरणं नराणां कण्ठादिरोगवशतः प्रवदन्ति सन्तः ॥ ३ ॥ जन्मनि यदा रन्ध्रगतेऽर्कपुत्रे वर्षेशराशिर्यदि मृत्युभावे । सौरेण युक्ते कुरुते नराणां भुजङ्गमस्य स्पृशतेन रिष्टम् ॥ ४ ॥ मन्दो यदा चन्द्रपदे मृगाङ्कः

श्चेन्मन्दराशौ खलु पापयुक्ते । लग्नाधिपे मृत्युगते सवर्षे करोति रिष्टं च जलोदराँश्च ॥ मृत्युस्थितो जन्मनि भूमिपुत्रः वर्षे बलाढ्ये दशमे प्रपन्नः । चतुष्पदात्स्यात्पतनं तथैज्ये स्यादीक्षिते चेच्च हनंति रिष्टम् ॥ ६ ॥ वर्षेशे सुरपूजिते सुतगते नवमे च पुत्रात् सुखं । धीनाथे भृगुजे तथा बलयुते सप्तस्थिते भाग्यभुक् । कुर्याच्चेच्च कबूलकं शुभखगैः सौख्यं सुताद्वारतो ज्ञेयं वा सहमाधिपे शुभखगैर्युक्ते तथालोकिते ॥ ७ ॥ षष्ठाष्टमे जन्मकाले यदि स्याद्रविचन्द्रमाः पापायुक्ते तदा मृत्यू राजदोषान्न संशयः ॥ ८ ॥ सहजभावपती रिपुभावगो रिपुपतिः सहजे रिपुससंयुतः । तदीयवर्षगते स्वभ्रातृतो भवति शस्त्रहतेः शिरनाशनम् ॥ ९ ॥ क्रूरे विलग्ने च कलत्रगेहे व्ययस्थिते भूमिसुते विलग्ने । सन्तानहीनं प्रथमं स्त्रिया च विन्दत्सुखं युग्मकृतं च भार्या ॥१०॥ लग्नाधिपे भौमगते च रन्ध्रे रंध्राधिनाथे व्ययगे रिपुस्थे । करोति कष्टं रिपुणा विवादो भित्तादिपातेन करोतिरिष्टम् ॥ ॥ ११ ॥ कन्यालग्ने भास्करे मूर्तिसंस्थे जायाभावे चार्कजे पापयुक्ते । तस्मिन् वर्षे मानवानां हि कष्टं भार्यामृत्युर्निश्चितं तत्रयोगे ॥ १२ ॥ ताजिकरोमे—निधनभुवननाथे द्रव्यभावे नराणां व्ययभुवनसनाथो मृत्युभावे यदि स्यात् । तनुभुवनपतिः स्यान्निर्बले चापि वर्षे भुजगदशमृत्युश्शङ्करश्चापि रक्षेत् ॥ १३ ॥ मन्दे द्वितीये सुखगे हिमांशुः पापार्दिते कर्मगते कुपुत्रे । लग्नाधिपे मृत्युगते सवर्षे मृत्युं विशेभ्यः

प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥ १४ ॥ कर्मस्थिते सूर्यसुते दिनेशो रंध्रे स्थिते छिद्रपचन्द्रयुक्ते । जन्माधिपे शत्रुगतेऽत्र वर्षे करोति कष्टं लकुटप्रहारैः ॥ १५ ॥ लग्ने भौमे पापयुक्तेऽथ चन्द्रे पुत्रस्थाने जन्मपो मृत्युभावे । मन्दे युक्ते क्रूरदृष्टे सवर्षे विद्युत्पातात्मानवानां हि मृत्युः ॥ १६ ॥ स्वस्थानस्थे कर्मगे भूमिपुत्रे क्रूरैर्युक्ते वीक्षिते वा तदाब्दे । लग्नस्वामी रन्ध्रगे ऊर्ध्वपातान्नूनं रिष्टं मानवानां च तत्र ॥ १७ ॥ चन्द्रशो यदि केन्द्रसौम्यसहितो जन्मेशयुक्तो दृशो कर्मेश-श्चणु कर्मगो शुभयुते साम्राज्ययोगप्रदः । तद्योगे रवि-मण्डले रिपुगृहे सौरी च युक्तेक्षिते तत्काले मरणं ध्रुवं नृपजने शस्त्राभिघातप्रदः ॥ १८ ॥ मन्दपतिर्मदगे सबलो यदा खलखगैः सहितो न च वीक्षितः । मुनिवरैर्गदितं बहुलं सुखं युवतिगर्भभवं तदा ॥ १९ ॥ देवार्चितो जन्मनि यत्र राशौ वर्षे सराशिर्यदि पञ्चमस्थः । तत्र स्थिते वर्षपतौ बुधे वा भौमे मेऽथवा पुत्रसमुद्भवः स्यात् ॥ २० ॥ यद्रा-शिगो जन्मनि सूर्यपुत्रौ वर्षे च तद्राशिभवं विलग्नम् । सन्तानकष्टं च कुजः सुतस्थो विलोमगः पुत्रहरो निरुक्तः ॥ २१ ॥

अथ जन्मपत्रकी दक्षिणाके जाननेका प्रकार

पूरी जन्मपत्री होय उस समयकी तात्कालिक लग्न बनाना सूर्यसे लग्नके बीचमें जितने ग्रह हों उतनी मुद्राकी प्राप्ति कहना, प्रश्नलग्न गुरु तथा स्वस्वामिसे दृष्ट हो तो निश्चय यह योग होगा, लग्नसे पहले

दूसरे बारहवें घर राहु केतु शनि हो तो बिलकुल दक्षिणा न मिले, मकसूमसे मिल भी जाय मगर भरोसा नहीं. लग्न केन्द्रमें क्रूरग्रह हों तो निष्फल जानना, लग्नमें क्रूरग्रह हों अस्त होय क्रूरक्षेत्री होय तो उधार करे और लग्नमें सूर्यका होरा हो तो वह उधारभी न पटे, चन्द्रका होरा हो तो कालान्तरसे मिले, लग्नेश वक्र हो तो यजमान न मिले या नष्टबुद्धि पायाजावे, लग्नसे सूर्यके मध्य कोई ग्रह वक्री होय तो निर्णीत दक्षिणामें से कुछ रखलेवे. अतिचार ग्रह होवे तो मुश्किलसे प्राप्ति होवे, यजमान राश्येश अस्तंगत होय तो कुछ न मिले, अपनी राश्येश अस्त हो तो प्रारब्धमें प्राप्ति नहीं, लग्नेश क्रूराक्रान्त वा अस्तंगतसे युक्तहोय तो दक्षिणामें कोई भांजीमारे, टंटा बखेड़ा करनेको उद्यत होवे, लग्न सूर्यके बीचमें जितने ग्रह अस्त वक्री होवें उन्हें न गिनना मगर राहु केतु गिनना उत्तम मध्यम कनिष्ठ स्थानसे मुहर रुपया चौन्नी स्वतर्कसे मुद्रास्थानी जानना।

दूसरा प्रकार

("तन्नामवर्णसंख्याकैः युता नंदैहता शरैः।
मुँनिभिस्तु हरेद्भागं शेषं दक्षिणमुच्यते।
शेष पञ्चगुणं कृत्वा दशभिः शोधयेत्पुनः।")

दाताके नामाक्षर गिनना उननामाक्षरमें ९ मिलाना और सर्वयोगको ५ से गुणना उस गुणनफलमें ७ सातका भाग देना लब्धिसे कुछ काम नहीं शेषको पञ्चगुणा करना वही दक्षिणा मिलेगी।

अथ जलघटिस्थापनविधिः

श्लोक—कुम्भार्द्धाकृति शुद्धताम्रदशभिः पात्रं पलैर्निर्मितं शङ्कुर्ध्वोन्नति शंकुविस्तृतमिदं मासाङ्गुलैर्नापितम् । विद्धा हेमशलाकया सुसलिले उन्मज्य तस्मिन् घटी उन्मज्या खलु षष्टिवारपठितश्लोकेन सा पूर्यते ॥

अर्थ--दशपल तांबा लेकरके उसकी एक कटोरी कुंभार्द्ध (आधा-घड़ा) के आकारकी इस तरहसे बनाना कि ऊपरका व्यास इसका १२ अंगुल चौड़ा हो और वह कटोरी ६ अंगुल गहरी हो ऐसी कटोरीमें १$\frac{1}{3}$ मासे सोनेकी ४ अङ्गुल लम्बी सींकसे बीचमें छेद करना और जलके भरेपात्रमें इस कटोरीको डालदेना इस कटोरीके जलमें डूबनेमें ६० पल लगेंगे इसको जलघटी कहते हैं और घटीनाम घड़ीका है इसी लिये यह घड़ी १ घड़ी अर्थात् २४ पलको बतलानेवाली है, यहां कविने इस श्लोकके बनानेमें यह चातुर्य किया है कि इस श्लोकको धीरेधीरे ६० बार पढनेमें जितना समय लगेगा उतने समयमें कटोरी जलमें डूब जावेगी-सोनेकी सींकका प्रमाण इस श्लोकमें लिखा है यथा (माषमात्रत्र्यंशयुता स्वर्णवृत्तशलाकया । चतुर्भिरंगुलैरापः तया विद्धमितिस्फुटम्) प्रगट हो कि ५ रत्तीके बराबर १ माष होता है और ६४ माषका १ पल होता है ।

अथ छायासे इष्ट जाननेका प्रकार ।

श्लोक—परं दिनं दिनमानविहीनं सप्तभिराहतं पञ्चवि' भक्तम् ॥ आर्यभटेन विनिर्मितया भासा च भवेद्दिनमध्य-मच्छाया ॥ १ ॥ या यत्रकाले भवतीह छाया मध्याह्न-हीना स्फुटशंकुयुक्ता ॥ तया दिने षट्गुणितं विभाज्यं पूर्वापरार्द्धे गतगम्यनाड्या ॥ २ ॥

अर्थ–सबसे बड़े दिनमानमेंसे इष्ट दिनका दिनमान घटा देना और जो कुछ शेष बचे उसको ७ से गुणना और गुणन फलमें ५ का भाग देना जो कुछ लब्धि आवे उसका नाम मध्याह्नकालकी छाया है, इस मध्याह्न छायाको उस समयकी १२ अंगुल लम्बी शंकुकी छायामेंसे घटाना और उसमें शंकुकी लम्बाई मिलादेना और इसका भाग ६ से दिनमानको गुणना और उस गुणन फलमें इसका भाग देना जो कुछ आवे उतनेही घटी दिन दोपहर पहले चढा कहना और दोहपरके उपरान्त उतनेही घटी दिन शेष कहना ।

उदाहरण–जैसे परमदिनमान ३५ । २० है इसमेंसे इष्टदिनका ३० घटाया तो रहे ५ । २० इनको सातसे गुणा तो हुए ३७ । २० इनसे ५ का भाग दिया तो हुए ७।२८ यह मध्याह्न छाया है । अब मध्याह्न कालके उपरान्त किसीने १२ अंगुल शंकुसे छाया नापी तो १० अंगुल हुई, इसे १० अंगुलमेंसे छाया मध्याह्न छाया घटाई तो रहे २ । ३२ इनमें शंकुके १२ अंगुल जोड़े तो हुए १४ । ३२ इसका भाग उस दिनके दिनमान ६ से गुणेहुएमें देना अतएव भाज्यभाजक दोनोंके पल किये, इसलिये १४–३८ को ६० से गुणा तो हुए ८७२ । ० यह भाजक हुआ और दिनमान ३० को ६ से गुणा तो हुए १०८०० यह भाज्य हुआ इस भाज्यमें उक्त भाजकका भाग दिया तो १२ घ० १६ प० लब्धि आई, जो कि मध्याह्नके उपरान्त छाया नापी थी इसलिये १२ घ० १६ प० दिन बाकी है, अब इसको उस दिनके दिनमान ३० घड़ीमेंसे घटादिया तो मालूम हुआ कि इष्ट समयपर १७ घ० ४४ पल दिन चढा है ।

अथ इष्टकालपरसे पादछाया जाननेका प्रकार

श्लोक-द्युमानमग्निसंगुणं मतैष्यघटिकाहृतम् ॥
द्विभान्तरोनितं पदं प्रभा निजेष्टकालजा ॥

अर्थ-दिनमानकी त्रिगुण करना और इष्टघटीका भाग देना लब्धिको अलग स्थापन करना फिर दिनमानका व २७ का अन्तर करना जो अन्तर आवे उसका और अलग स्थापित हुए अंकका अन्तर करना जो अन्तर आवे उतनेही पाद छाया जानना । और भी दिवेष्टकाल जाननेके बहुतसे श्लोक हैं ।

श्लोक—वेदाब्धिरूपाऽश्वनिचैत्रमासे वैशाखभाद्रे शरवह्निरूपाः ॥ ज्येष्ठे तथा श्रावणऽयंशमेकं बाणं भुजारूपमषाढके च ॥ १ खबाणरूपं फाल्गुने ऊर्जमासे माघेषु मार्गे खरसेन्दुलिप्ताः ॥ शून्यं मुनीरूपतथा च पौषं ध्रुवाङ्क कथितो मुनीन्द्रैः ॥ २ ॥ सप्तांगुलं भवेच्छंकुछायाशंकुसमन्वितः । ध्रुवाङ्के दीयते भागं लब्धाङ्केघटिकापलः ॥ ३ ॥

अर्थ-कुवांर और चैत्रके १४४ ध्रुवांक है वैशाख और भादोंके १३५ ज्येष्ठ और श्रावणके १३० आषाढके १२५ फाल्गुन और कार्तिकके ४५० माघ और अगहनके १६० और पौषके १७० ध्रुवांक हैं, अब बराबर जमीनमें ७ अंगुलकी छडी खडी करके छाया अपना जितने अंगुल छाया हो उसमें ७ अंगुल जोड़ना और इस योग फलका भाग उक्त ध्रुवांकमें देना जो लब्धि आवे वही इष्टघटी पल है । इस तरह बहुतसे श्लोक छाया नापकर इष्ट जाननेके हैं परन्तु आज-

कलकी इंग्रेजी घड़ीके मुकाबलेमें ये सब विधि अशुद्ध हैं सबसे उत्तम इंग्रेजी घडीका टाइम है कि जिसमें कभी भी अंतर आना संभव नहीं है।

अथ निषेककुंडली निर्माणप्रकार

आजकल ज्योतिषी लोग जन्म कुंडलीके साथमें निषेक कुंडली भी बनाते हैं, यद्यपि यह विधि सर्वथा सत्य नहीं है तथापि पाठकोंके अवलोकनार्थ उक्त विधिका प्रकाशित करना उचित जान निषेककालके कुछ श्लोक नीचे लिखता हूँ। यथा—

जन्मलग्ने समेब्जेङ्गे जन्मेंदुसममत्रतु ग्लौसमं
जन्मलग्नं स्यात् तस्मात् कालात् ततो विदुः ॥
अथ आधानकाले चन्द्रवशात् प्रसवज्ञानमाह।

आधानं यदि दृश्यते स्थिरगते चंडीशचूडामणौ नारीणां प्रसवस्तदा खलु भवेद् युग्मांकपक्षे २९२० र्दिनः ॥ सप्ताशीत्यधिकैश्च पक्षसहितै २८७ स्तस्मिंश्चरक्षेत्रगे चन्द्राष्टाश्वि २८१ दिनै रसातलभुजै २७६ र्वाद्रिस्वभावे विधौ ॥ इति ॥ व्यंगस्पष्टविधोर्लवामनुहताखाष्टैर्यांशयुक्तारसाब्ध्यश्यव्याह्याश्च निषेकजन्मसमयांतर्वासरौघो भवेत् ॥ खांग्न्यंगेन लवान्वितोत्र तिथयोथाश्वातशेषाद्दयाद्धीनो जन्मदिने निषेकदिनपश्चैवं तिथिभ्यस्तिथिः इति ॥

इन सब श्लोकोंका सार यह है कि, आधान कालका चन्द्रमा और जन्मकालकी लग्न और जन्म कालका चन्द्रमा तथा आधान कालकी लग्न यह सदा राशि अंश कला विकलामें एक होती हैं। जैसे किसीके जन्मकालमें लग्न ८ । ४ । २७ । १५ और चन्द्रमा ५ । ९ । ४४ । २८ और सूर्य १ । १८ । ४३ । ३९ हैं अब इनसे आधान कुंडली बनानेके लिये नवम अथवा दशम मासमें ऐसा समय तजवीज करना

चाहिये कि, उस दिनका चन्द्रमा और जन्मकालकी लग्न और उस दिनकी लग्न व जन्मकालका चन्द्रमा एक हो जावे. अब देखनेसे मालूम हुआ कि सूर्योदयात् इष्टघटी ६ पल ५ और स्पष्ट रवि ४ । २२ । ५६ । ५६ । इस इष्टपर गणित करनेसे चन्द्रमा ८ । ४ । २७ । १५ और लग्न ५ । ९ । ४४ । २८ आई । बस यही निषेक कालका समय है परंतु यह विधि सर्वथा सत्य नहीं है सज्जनोंके मनोरंजनार्थ लिख दी है ।

अब वर्तमान कालके कुछ नरेंद्रोंकी जन्म कुंडलियां लिखी जाती हैं कि, जिनके अवलोकनसे राज्ययोग भाग्य योगादिका अनुमान पाठकोंको भली भाँति हो जावेगा ।

अथ कुंडलीचक्राणि

जन्मलग्न

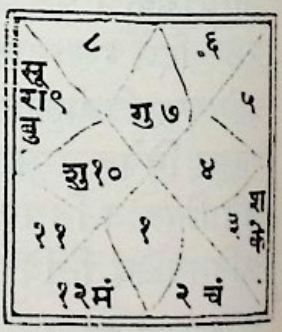

सं० ४५ जूलियन वर्ष तारीख २५ दिसम्बर शुक्रवार कृत्तिका नक्षत्र रात्रिको ११ बजकर ५९ मिनट ३८ सेकण्डपर हजरत ईसामसीह इंग्लिश धर्म संस्थापकका जन्म हुआ. लग्न स्पष्ट ६ । १ सायनरवि ९ । १ ।

यहूदिया प्रांतके बेतलहामनगरमें हजरत ईसामसीहका जन्म हुआ था जन्म होनेके ४० दिन उपरांत ये ईजिप्त (मिसर) नगरमें यहूदियोंके भयसे लेजाये गए थे, १२ वर्षकी उमरमें जैरुसलेमके मंदिरमें डाक्टरोंके साथ इनका शास्त्रार्थ हुआ वहां इन्होंकी विजय हुई, तबहींसे इन्होंकी कीर्ति बढने लगी,

२५ वर्षकी वयमें इन्होंको आचार्य पद प्राप्त हुआ था, २९ वर्षकी वयमें इन्होंका इंग्रेजीरीत्यनुसार नाम करण संस्कार हुआ और ये उस देशके दीवान पदपर आरूढ किए गए तबहीसे इनसे और मनुष्योंसे शत्रुता बढी इन्होंका स्वभाव बड़ा सौम्य और मृदु था, माता पिता इन्होंके बहुत कालतक जीते रहे. यहूदियोंके भयसे ये छिपे हुए लोगोंको उपदेश देते रहे, अंतमें ३२ वर्ष ३ महीने ११ दिनकी वयमें यहूदियोंकी कपट सलाहसे दो चोरों सहित ये शूलीपर चढाए गए और उसी शूलीपर इन्होंकी मृत्यु हुई, उस दिन रात्रिको चन्द्र ग्रहण हुआ था हजरत ईसामसीहका शरीर स्त्रीके आकारमें था, विंशोत्तरी मतानुसार इनका जन्म सूर्यकी महादशामें हुआ था और राहुकी महादशामें इनकी मृत्यु हुई, बाई बिलमें लिखा है कि, इन्होंने कई मृतक पुरुष जीवित किए थे और आमरण पर्यंत ये ब्रह्मचर्य धर्मसे रहे इनका कोई विवाह नहीं हुआ था।

जन्मलग्न

माघसुदी १३ गुरुवारको कंसराजाका जन्म।

सं० १८९८ कार्तिक वदी ११ मंगल वार ता. ९ नवंबर सन् १८४१ को प्रातः-काल १० बजकर ४८ मिनिटपर हुजूर राजराजेश्वर श्रीसप्तम एडवर्ड भारतेश्वरका जन्म रवि ६। २४ लग्न ८। ५।

सं० १९२८ प्रथम भाद्रपद वदी १४ मंगलवार ता० १५ अगस्त सन् १८७१ पुष्यनक्षत्र १० । ० समये श्रीमती महाराणी वर्त्तमान राज्य कर्त्ता चीनकस्य जन्म तस्य जन्मचंद्र कुंडलीयम् । रवि ३ । २९ ।

सम्वत् १९२५ ज्येष्ठवदी ११ चन्द्रवार १० । ० रेवती ५५ । ० ता. १८ मई सन् १८६८ को आलाहजरतने कोलस दूसरे शाहनशाह मोज्जम रूसजमाने हालका जन्म रवि १ । ५ तस्य जन्म चन्द्रकुंडली ॥

संम्वत् १८८७ भाद्रों वदी ३० बुधवार आश्लेषानक्षत्र १४ । ० ता० १८ अगस्त सन् १८३० आलाहजरत फ्रान्सिस जोसेफ वर्त्तमान शाहनशाह आस्ट्रीयाकस्य जन्म तस्य चंद्रकुंडली यम् रवि ४ । ३ ॥

सम्वत् १८९५ माघवदी १ चन्द्रवार ५५ । ० आर्द्रानक्षत्र ७ । ० ता० ३१ दिसम्बर सन् १८३८ को श्रीमान् इमाइललौवेट बहादुर बर्त्तमान फ्रांसनरेशका जन्म तस्य चन्द्रकुंडलीयम् रवि ८ । १७ ॥

सम्बत् १८८५ माघवदी २ बुधवार ५८ । ० आश्लेषा ३५ । ० ता० २१ जनवरी सन् १८१९ को आलाहजरत् दूसरे ओस्करबहादुर वर्त्तमान शाहस्वीडन और नोरवेका जन्म तस्य चन्द्रकुण्डलीयम् । रवि ९ । ९ ॥

सम्बत् १९१५ माघवदी ९ गुरुवार २९ । ० विशाखानक्षत्र २७ । ता० २५ । जनवरी सन् १८५९ को आलाहजरत दूसरे विलियम बहादुर वर्त्तमानशाहन्शाह जर्म्मनीका जन्म । तस्य चन्द्रकुण्डलीयम् रवि ९ । १४॥

सम्बत् १९४३ वैशाखसुदी १५ चन्द्रवार ६० । ० विशाखानक्षत्र ५८ । ० ता० १७ मई सन् १८८६ की आला हजरत तेखें-अलफोन्सोबहादुर वर्त्तमान शाह इस्पेनका जन्म तस्य चन्द्रकुण्डलीयम् रवि १ । ४ ॥

सम्बत् १९०७ चैत्रसुदी १२ चन्द्रवार ३० । ० मघानक्षत्र ५० । ० ता० २५ मार्च सन् १८५० को आलाहजरत मुजफरुद्दीन बहादुर वर्त्तमान शाह ईरानका जन्म तस्य चन्द्रकुंडलीयम् रवि ११ । १२ ॥

९

सम्बत् १९२६ कार्तिकसुदी ८ गुरुवार ४३ । ० धनिष्ठा ५९ । ० ता० ११ नवंबर सन् १८६९ को श्रीमान् विक्टरएमेन्युएल तीसरेवर्त्तमान शाह इटेलीका जन्म तस्य चन्द्रकुंडलीयम् रवि ६ । २६ ॥

संवत् १८९९ कुवांर वदी २ बुधवार ४५ । ० रेवती ४० । ता० ३१ सितम्बर सन् १८४२ को आलाहजरत दूसरे अब्दुलहमीदखां बहादुर वर्त्तमानसुलतानरूमका जन्म तस्य जन्मकुण्डलीयम् रवि ५ । ५ इष्ट ०।१० समये जन्म ।

संवत् १९०९ कार्तिकवदी ६ बुधवार १३ । ० पुनर्वसु २६ । ० ता० ३ नवंबर सन् १८५२ को आलाहजरत मिकादोबहादुर वर्त्तमान शाहन्शाह जापानका जन्म तस्य चन्द्रकुण्डलीयम् रवि ६ । १८ ।

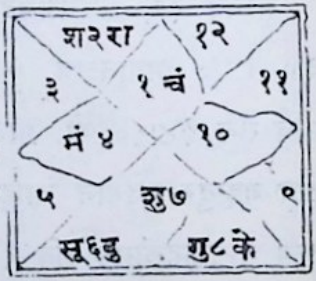

संवत् १९१० कुवांरवदी ४ बुधवार २१ । ० भरणी २७ । ० ता० २१ सितम्बर सन् १८५३ को श्रीमन्त खोललौनकोर्न बहादुर वर्त्तमानश्यामनरेशका जन्म तस्य चद्रकुंडलीयम् रवि ५ । ६ ॥

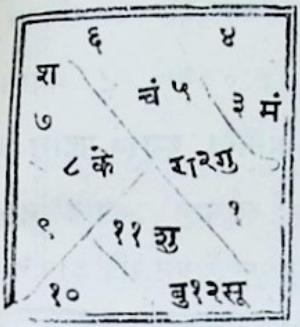

सम्वत् १८९२ चैत्र सुदी ११ गुरुवार मघानक्षत्र ५० । ता० ९ अप्रेल सन् १८३५ को आलाहजरत लेपोण्ड दूसरे बहादुर वर्त्तमान बेलजियम् नरेशका जन्म तस्य चंद्रकुण्डलीयम् रवि ११ । २७ ॥

संवत् १९२० कुवांरवदी १ चंद्रवार ९ । ९ रेवती ३४ । ० ता० २८ सितंबर सन् १८६३ को श्रीमंतकार्लो बहादुर वर्त्तमान पोर्तुगाल नरेशका जन्म तस्य चन्द्रकुण्डलीयम् ९ । १२ ।

सम्वत १९३१ द्वि० आषाढ सुदी १ मंगलवार ३८ । ० पुष्य ६० । ० ता० १४ जोलाई सन् १८७४ को आलाहजरत् अब्बास दूसरे बहादुर वर्त्तमान मिशर-नरेशका जन्म तस्य चन्द्रकुण्डलीयम् रवि २ । २९ ॥

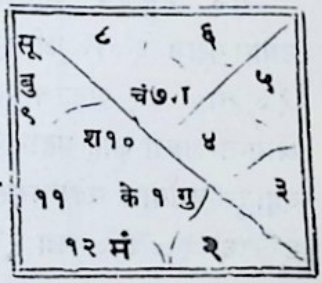

सं० १९०२ पौषवदी १० बुधवार १३।० स्वाति ५३ । ० ता० २४ दिसम्बर सन् १८४५ को श्रीमन्तजोर्जनरेश वर्त्तमान शाहन्शाह यूनानका जन्म तस्य चन्द्रकुण्डलीयम् रवि ८ । १० ॥

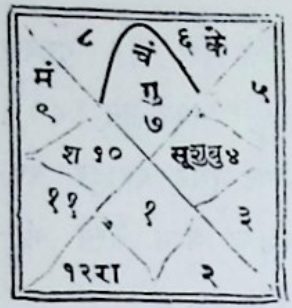

सं० १९३२ श्रावणसुदी ७ रविवार ३८।० स्वाति ५३। ० ता० ८ अगस्त सन् १८७५ को श्रीमन्त हुजूर महाराजा शमशेरजंग बहादुर वर्त्तमान नैपाल नरेशक जन्म तस्य चन्द्रकुण्डलीयम् रवि ३।२२॥

सं० १९३३ भादोंवदी ९ चन्द्रवार ११।० रोहिणीनक्षत्र ३४।० ता० १४ अगस्त सन् १८७६ को श्रीमन्त एलेकजेण्डर बहादुर वर्त्तमानशाहसरलियाका जन्म तस्य चन्द्रकुण्डलीयम् रवि ३।३९॥

सं० १९२३ आषाढ़सुदी ६ बुधवार ५।० हस्त नक्षत्र २४।० ता० १८ जोलाई सन् १८६६ को श्रीसूर्योदयात् इष्ट १।० समये हुजूर निजाम हैदरावाद दक्षिणका जन्म रवि ३।३ लग्न ३। ८॥

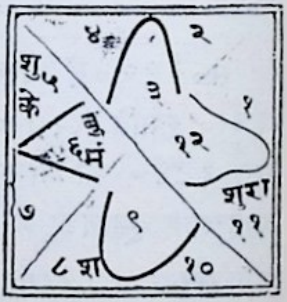

सं० १९३३ कार्तिकसुदी ४ शनिवार ज्येष्ठा नक्षत्र ६०।० श्रीसूर्योदयात् इष्ट ३९। १० ता० ३१ अक्टूबर सन् १८७६ समये श्रीमन्त आली जाह महाराजा माधोराव सेंधिया बहादुर वर्त्तमान गवालियर नरेशका जन्म रवि ६। ६। १७। ० लग्न २। १७॥

सं० १९१८ भादोंवदी ९ गुरुवार रोहिणी न० ८ । ० श्रीसूर्योदयात् इष्ट० । १५ समये राज राजेन्द्र श्रीमहाराजाधिराजसवाई सर माधो सिंह बहादुर वर्त्तमान जैपुरनरेशका जन्म रवि ४ । १३ लग्न ४ । १५ ॥

सं० १९१६ मार्गशीर्षकृष्ण २ शनिवार २८ । ७ रोहिणी ३५ । २० परिघयोग ३ । ३१ इष्ट ५८ । ५७ समये श्रीमन्तमहाराजाधिराज राज राजेश्वर सवाई श्रीशिवाजीराव हुल्करबहादुर इन्दौरका जन्म रवि ६ । २७ लग्न ६ । २२ ॥

सं० १९३६ माघसुदी १ बुधवार २१ । ० शतभिषा ५५ । ० इष्ट ३२ । १० समये श्रीमरुमहेन्द्र राजराजेश्वर महाराजाधिराज सरदारसिंह बहादुर वर्त्तमान जोधपुर नरेशस्य जन्म रवि १० । ० । २३ । १० । लग्न ४ । २४ ॥

सं० १९३० भादोंसुदी १३ गुरुवार श्रवण नक्षत्र ६० श्रीसूर्योदयात् इष्ट ५२ । ५४ समये कर्कलग्नोदये हिज हाईनेस महाराव सर उमेदसिंह बहादुर वर्त्तमान कोटानरेशका जन्म रवि ४ । १९ ॥

सं० १९०२ कार्तिक वदी ६ मंगलवार आर्द्रा नक्षत्र २० । ० को हिज हाईनेस करगेल सर प्रतापसिंह बहादुर वर्त्तमान ईडर-नरेशका जन्म ।

सम्वत् १९०६ मार्गशीर्ष वदी ९ गुरुवार ५१ । २२ मघा ५४। ५५ वृद्धियोग ३५ । ३५ इष्ट २ । ३५ समये एच. एच. अमीरुद्दोला वजीरुल मुल्क नव्वाब सर इब्राहीम अलीखां बहादुर सोलत जंग वर्त्तमान टोंकनरेशका जन्म रवि ६ । २३ लग्न ७ । १५ ॥

सं० १९१३ श्रावण सुदी ८ शनिवार ३१। ४७ विशाखा ३३ । २८ इष्ट २१। ५ समये हिज हाइनेस पवांर कुल कमल दिवाकर महाराज श्रीराजा रावत विनैसिंह साहब बहादुर वर्त्तमान राजगढ़ नरेशस्य जन्म रवि ३। २४। ५२ । ३४ । लग्न ७ । १७ ॥

इसके आगे कुछ कुण्डलियां संक्षिप्त इतिहास सहित लिखी जाती हैं जिनके अवलोकनसे पाठकोंको फलित ज्योतिषका विशेष परिज्ञान होगा ॥

सम्वत् १९१३ कार्तिकसुदी ८ बुधवार ४६ । ४१ श्रवण ३६ । ५६ गण्डयोग ३१। २६ श्रीसूर्योदयात् इष्टम् १ । ० समये श्रीयुत सेठ खेमराजजी श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेसाध्यक्ष बम्बई-का जन्म रवि ६ । २० । ५३ लग्न ६ । २६ । ४ । १ ॥

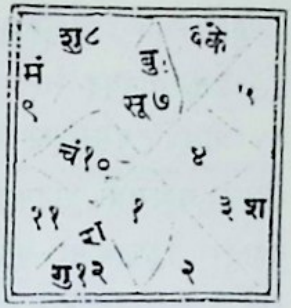

उक्त सेठ साहब बम्बईमें निवास करते हैं आपका स्वभाव मृदु और चित्त उदार है, इस भारत वर्षमें आपके तुल्य नागरी प्रेसका इतना बड़ा कारखाना और दूसरा नहीं है, ३० वर्षके उपरान्त आपके भाग्यकी अत्यन्त वृद्धि हुई है, आपके तीन पुत्र दो पुत्री मौजूद हैं। आप सनातन धर्मके अचल प्रतिपादक और विष्णुभक्तिमें पूर्ण परायण हैं।

सं० १८७९ भादोंवदी ५ बुधवार ५६ ।० उत्तराभाद्रपद १६ । २५ श्रीसूर्योदयात् इष्ट १३ । ० समये महाराज श्रीमहाराजा साहब श्रीशिवदानसिंहजी साहब बहादुर वैकुण्ठवासी सुठालिया नरेशस्य जन्म रवि ३ । २३ । लग्न ६ । २ ॥

१७ वर्षकी वयमें आप राजसिंहासनपर विराजे, ३१ वर्षकी वयमें आपके महाराज कुमारका जन्म हुआ, स्वभाव आपका अत्यन्त मृदु था। ४२ वर्षतक आपने राज्य किया, ५९ वर्षकी वयमें विंशोत्तरी दशायां चन्द्रमहादशामध्ये आपने स्वर्गवास किया।

सं० १९१० भादों वदी४ चन्द्रवार ५३। ४७ उत्तराभाद्रपद ११। २७ शूलयोगे ३८। १४ श्रीसूर्योदयात् इष्ट ४ । ४ समये महाराजश्री महाराजा साहब श्रीमाधोसिंहजी साहब बहादुर वैकुण्ठवासी सुठालियानरेशस्य जन्म रवि ४ । ६लग्न ४। २९ ॥

आप बड़े बुद्धिमान् प्रबंधकर्त्ता नीति विचक्षण सरदार हुए । बहुतसे सन्तानादि हुए उनमें केवल और सपुत्र एक मैं मौजूद हूँ, आपके चार विवाह हुए, माताका सुख आजन्म पर्य्यंत रहा । २८ वर्षकी उमरमें राज सिंहासनपर विराजे "श्लोक–भृत्यारिभवं राशीशो मारकस्थः कुजेक्षितः ॥ तद्दशांतर्गतो भौमः करोति निधनं ध्रुवम् ॥ इस श्लोकानुसार विंशोत्तरी दशाकी महादशा शुक्र तथा अन्तर्दशा भौमकीमें ३३ वर्षकी वयमें आपने वैकुंठवास किया ।

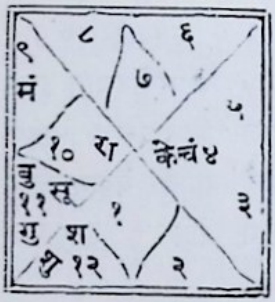

सं० १९३५ फागुन सुदी १२ बुधवार ४० । २१ पुष्य ३९ । ३३ शोभन योग २७ । ४६ ता० ५ मार्च सन् १८७९ श्रीसूर्योदयात् इष्ट ३६ । ५ समये सज्जनोंका परिचर्यापरायण मुझ शम्भुसिंह सुठालियाधीश इस क्षुद्र ग्रन्थके कर्त्ताका ।

जन्म हुआ । रवि १० । २२ । ४५ । ३५ लग्न ६० । १२ वर्षकी वयमें अत्यन्त बीमारी हुई । ८ वर्षकी वयमें पूज्य पिताका वैकुंठवास हुआ। १६ वर्षकी वयतक इंग्रेजी, फारसी, संस्कृत आदि विद्याओंका अध्ययन रहा । १७ वर्षकी वयमें प्रथम विवाह हुआ, १७ वर्ष ६ मासके वयमें भारतगवर्नमेन्टसे राज्यशासनके अधिकार प्राप्त हुये । शरीर सरोग रहता है, १९ वर्षकी वयमें माताका स्वर्गवास हुआ । ज्योतिष व फोटो-

ग्राफीका अभ्यास रहता है नेत्र समीप दृष्टि है अर्थात् " Short sighted " हूं मस्तिष्क निर्बलता और शिरभ्रमकी बाधा प्रायः रहती है, हारमोनियम सितार आदि बाजे बजानेका भी अभ्यास है ।

सं १८७६ ज्येष्ठसुदी १ चंद्रमा ता० २४ मई सन् १८१९ श्रीसूर्योदयात् इष्ट ०।४० समये श्रीमती राजराजेश्वरी भारतेश्वरी श्रीमहाराणी विक्टोरिया विजयीनीका जन्म रवि १।११ लग्न १ । १४॥

श्रीमतीका आख्यान जगत् प्रसिद्ध है इसलिये विशेष लिखनेकी आवश्यकता नहीं टेहरी निवासी पंडित महीधरशर्म्माने जो श्रीमतीकी कुण्डली मेरेपास भेजी है उसमें सम्वत् १८७७ ज्येष्ठसुदी ११ भौमवार हस्तनक्षत्र मिथुन लग्नमें श्रीमतीका जन्म होना लिखा है, अब नहीं मालूम होता कि इन दो इष्टोंमेंसे श्रीमतीका वास्तविक जन्मकाल कौनसा है गवर्नमेन्ट दफ्तरोंमें श्रीमतीका जन्म सम्वत् १८७६ में होना लिखा है अतएव इसी इष्टपर विचार किया गया तो मालूम हुआ कि श्रीमतीका परलोकवास शुक्रकी महादशामें हुआ है जो लग्नेश और षष्ठेश तथा पञ्चमेश द्वादशस्थान हैं इन सब कारणोंसे श्रीमतीकी वर्त्तमान जन्मकुण्डलीका फलित ठीक ठीक नहीं मिलता है बल्कि सम्वत् १८७७ के जन्मेष्टकालपर बनी हुई जन्मकुण्डलीका फलित बहुत ठीक मिलता है हमने इस विषयमें बहुत आन्दोलन किया परन्तु वास्तविक सिद्धान्त कुछ भी निर्द्धारित नहीं हुआ श्रीमतीके सम्वत् १८७७ के जन्मेष्ट कालके ग्रह ये हैं इनके देखनेसे पाठकोंको विदित होजायगा कि श्रीमतीका प्रत्यक्ष फलित किस जन्म कुंडलीसे मिलता है सं० १८७७ ज्येष्ठ शुक्ल एकादश्यां भौमे ५ । १५ हस्तभे ४५ । १५ वृषार्कगतांशाः १ । ५

मिथुनोदये श्रीमती राजराजेश्वरी महाराणी विक्टोरियाका मतांतरेण जन्म।

अथ मतांतरजन्मकुण्डली

इसी जन्मकुंडलीमें भाग्येश राजघरमें है और राज्येश भाग्यघरमें है ज्योतिष मतानुसार यह बहुत बड़ा राजयोग है पाराशरीमें लिखा है कि—

"भाग्यकर्माधिनेतारौ अन्योन्याश्रयसंस्थितौ।
राजयोगावितिप्रोक्तौ विख्यातो विजयी भवेत्॥"

इसी योगका माहात्म्य भावकुतूहलमें ऐसा लिखा है कि—

"यदा पुण्यस्वामी दशमभवने पुण्यभवने
बली कर्माधीशो भवति भवितामेव जनने।
समुद्रान्तं कीर्तिर्विजयगमने वैरिपटली
धनुर्ज्याटंकारैर्भजति चकिता भीतिपदवीम्॥"

अर्थ—जिनके नवमेश दशमस्थ हो और दशमेश नवमस्थ हो तो ऐसे योगवाले राजाकी कीर्ति आसमुद्रांत फैलती है और जब उस राजाकी चढाई शत्रुपर होती है तब धनुषके शब्दसे ही शत्रुसमूह चकित होकर भयभीत होते हैं।

सं० १९९२ फाल्गुन सुदी १३ मंगलवार ५६।१९ आश्लेषानक्षत्र ३२।१७ सुकर्मायोग ५५।२७ श्रीसूर्योदयात् इष्टम्०।१ समये आला हजरत मलिकमोअज्जम तीसरे आलेकजेन्डर भूतपूर्व शाहनशाह जाररूसेशस्य जन्म रवि १०।२१।

२३ वर्षकी उमरमें आपके पुत्रजन्म हुआ जो वर्त्तमान रूस नरेश हैं ३६ वर्षकी वयमें आप राजसिंहासनपर विराजे और १३ वर्ष राज्यकरके तारीख नवम्बर सन् १८९४ को ४९ वर्ष ७ महीना २२ दिनकी वयमें आपने परलोकवास किया ॥

सं० १८९५ श्रावणसुदी ७ रविवार घ० २ पल ८ स्वाति नक्षत्र ६० । ० श्रीसूर्योदयात् इष्ट १३ । ४५ समये हिजहाइनेस श्रीमती नव्वाब शाहजहां बेगम साहबा भूतपूर्व रईसा भूपालेशाया जन्म ।

१७ वर्षकी वयमें श्रीमतीका विवाह हुआ २० वर्षकी वयमें कन्या उत्पन्न हुई जो वर्त्तमान रईसा भूपाल हैं २९ वर्षकी वयमें पति का देहान्त हुआ और ३३ वर्षकी वयमें श्रीमतीने पुनर्विवाह किया ३० वर्षकी वयमें राजसिंहासनपर विराजी और तैंतीस वर्ष राज करके तारीख १६ जून सन् १९०१ को ६३ वर्षकी वय में आपने इस जहांनसे रहलत फरमाई श्रीमतीका स्वभाव बड़ा कोमल और उदार था आपको तामीरात (शिल्प) का बड़ा शौक था ॥

सं १९१६ चैत्रकृष्ण १३ भौमवार २१।० शततारका नक्षत्र ४९ । ० साध्ययोगे २३ । ० श्रीसूर्योदयात् इष्ट ४५ । २९ समये श्रीमन्त राजारावतवल बहादुरसिंह साहब बहादुर भूतपूर्व-राजगढ नरेशस्य जन्म रवि ११ । ९ ॥

आप २३ वर्षकी वयमें राजसिंहासन पर विराजे, छः विवाह आपके हुये थे श्रीमान्का स्वभाव कोमल उदार और विनोदप्रिय तथा मृगयाशील था श्रीमान्के कई सन्तान होकर नष्ट हो गये

अतएव आपके कोई पुत्र बली अहद नहीं था ता० १९ जनवरी सन् १९०२ को आपने १९ वर्ष राज्य करके ४२ वर्षकी वयमें वैकुण्ठवास किया उस वक्त विंशोत्तरी मतेन बुधमहादशामें शुक्रका अन्तर आपको था ॥

सं० १९०६ पौष सुदी ३ सोमवार उत्तराषाढ नक्षत्र ३४।० को सिंह लग्नोदये हिजहाइनेस महाराजाधिराज महारावल वेरी सामलजी बहादुर भूतपूर्व जेसलमेरनरेशस्य जन्म रवि ८ । ३ ॥

आपके तीन विवाह हुये थे १५ वर्षकी वयमें सिंहासन पर विराजे २४ वर्षकी उमरके उपरान्त शरीर रोगार्त रहा सन्तान कोई नहीं था ४१ वर्षकी वयमें ता० १० मार्च सन् १८९१ को परलोकवास किया।

सं० १९०४ क्वार वदी ६ गुरुवारको श्रीविक्रमाजीतजी साहब वर्तमान राज्यच्युत राघोगढ नरेशस्य जन्म रवि ५ । १३ १९ । ४५ ।

आपका शरीर स्थूल है दो विवाह हुये ५३ वर्षकी उमरतक आप कुँवर पदवीमें रहे और राजका काम करते थे ता० २९ जुलाई सन् १९०० को आपके पिताके परलोकवास होनेके बाद कछु ऐसे विघ्न उपस्थित हुये कि आप राजसे अधिकार हीन हो गये यह राज बहुत पुराना है और रेजीडेन्सी गवालियरके आधीन है आपके अर्श (बवासीर) की बीमारी अत्यन्त रहती है और कोई औरस सन्तान नहीं है।

सं० १८९० माघ बदी २ को कविराजा मुरारदानजी मेम्बरकौंसल जोधपुरका जन्म ।

सं० १९१७ फाल्गुन वदी १० को पंडित सुखदेव प्रसादजी सेक्रेटरी मुसाहिब आला जोधपुरका जन्म ।

सं० १९५४ माघ वदी ६ गुरुवार ५७ । १८ उत्तरा फाल्गुनी ४१ । ३९ शोभनयोगे २२ । ५४ श्रीसूर्योदयात् इष्ट ५३ । २ समये श्रीमहाराजकुमार श्रीसुमेरसिंहजी साहब बहादुर वर्तमान बली अहदराजजोधपुरकस्य जन्म रवि । ९ । ० । ३८ । ५८ ।

सं० १९०७ भाद्रपद शुक्ल ३ चंद्रवार ता० सितम्बर सन् १८५० को आधी रातके अनन्तर ४ घंटा ३७ मिनिट पर श्रीबाबू हरिश्चंद्रजी काशीस्वर्गवासीका सिंह लग्नोदये जन्म हुआ ।

बाबू हरिश्चंद्रजी बनारसवालेका नाम विद्वानोंसे छिपा नहीं है उक्त कुंडली आपहीकी है आपकी अवस्था जितनी गणित ज्योतिष पर थी

उतनी फलित ज्योतिष पर नहीं थी काव्य अलंकारका आपको पूर शौक है कि तरुणावस्थामेंही आपने इस संसारको त्याग परलोकका मार्ग लिया ।

सं० १९१२ कार सुदी ६ भौमवार ३६ । २४ मूलनक्षत्र २५ । १२ शोभन योग २७ । २९ इष्ट २५ । २५ समये सुप्रसिद्ध पंडित भीमसेन शर्मा इटावानिवासिनो जन्म ।

आप संस्कृतके पूर्ण विद्वान् हैं और स्वामीदयानंद सरस्वतीके पट्टशिष्य रहे आपने वेद उपनिषदादिके अनेक भाष्य रचे हैं और व्याकरण आपको अच्छा प्रखर है कई वर्षोंतक आपने " आर्य सिद्धांत " मासिक पत्र निकाला अब आर्य समाजसे आप अलग होकर सनातनमतका प्रतिपादन करते हैं सन्तानादिक आपके मौजूद हैं शरीर आपका यदा कदा रोगार्त रहता है आप इस देशमें भारतभूषण हैं द्रव्यका संचयणषभूमामूली है ।

सं० १९४६ भादों वदी ३० चन्द्रवार मघा नक्षत्र ४२ । २० दिनमान ३१ । २३ इष्ट २५।३ समये श्रीसेठ खेमराजजी श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेसाध्यक्ष बम्बईकस्य श्रीरंगनाथजी ज्येष्ठपुत्रः तस्य जन्म रवि ४।१०।४४।३२ ।

उक्त कुंडकीके ग्रह बहुत उत्तम हैं तस्य जन्म रवि राजयोग भाग्ययोग सुख योग सब अच्छे पडे हैं ।

सं० १९५० पौष सुदी १ रविवार २ । ४ पुनर्वसु नक्षत्र ४८ । ५४ ब्रह्मयोगे ६ । ४ दिनमानम् २७।२२ इष्टम् ३२।३९ समये श्रीसेठ खेमराजजी श्रीवेङ्कटेश्र प्रेसाध्यक्ष बम्बईकस्य श्रीनिवासजी कनिष्ठपुत्रः तस्य जन्म रवि ८ । १० । ३८ । ४३ । आपके भी ग्रहयोग बहुत अच्छे हैं ।

सं० १९२८ मार्गशीर्ष सुदी ८ भौमवार १८ । ३० उत्तराभाद्रपदे ५२ । ३३ व्यतीपात योगे २८।५४ विष्टि करणे श्रीसूर्योदयात् इष्टम् १८ । १५ समये जन्म रवि ८ । ५ लग्न० । १६ ।

इस पुरुषका वर्ण वैश्य रंग गौर था वस्त्रके व्यापारसे इसके अत्यन्त लाभ हुआ इसके एक पुत्र एक कन्या हुई और ३२ वर्षको वयमें प्लेगके रोगसे इस पुरुषकी मृत्यु हुई ।

सं० १९२३ माघसुदी ४ भृगुवार ३९।४० उत्तराभाद्रपदा ४४।४३ सिद्धिनाम योग श्रीसूर्योदयात् इष्टम् ५६।५२ समये जन्म रवि ९।२७।४९।५ लग्नं ९।२५।५४।२३

यह पुरुष शोभायमान और सभाचतुर तथा राजमान्य था इसने सुख भी भोगा कारागृहवास भी किया अन्तमें निस्संतान होकर अपने पिताके ही जीवनकालमें ३४ वर्षकी वयमें हैजेसे मर गया पाठकोंके अवलोनार्थ दोनों कुंडलियां हैजे और प्लेगसे मृत्युयोगवाली लिखी गई हैं ।

इति कुण्डलीचक्रप्रकरणं समाप्तम् ।

मौजूद पञ्चांगसे आगेके पञ्चांग बनानेकी विधि।

दो०–तिथीचार इकबारमें, घड़ी अठारह घाल।
तीनऋक्ष तेरह घड़ी, योगदोय पञ्चाल॥
पड़वांथी पांचोमिले, बीजथकी छठहोय।
बारससे पडवां मिले, शुद्ध पञ्चांग यह होय॥

अर्थ–वर्तमान पञ्चांगकी तिथिमें चार मिलाना और उसकी घड़ीमें अठारह मिलाना और उस दिनके नक्षत्रमें तीन मिलाना और नक्षत्र घटीमें तेरह मिलाना और उस दिनके योगमें दो मिलाना फिर योग घटीमें ४६ मिलाना ऐसा करनेसे आगामी चान्द्रवर्षके तिथि नक्षत्रादि मय घड़ियोंके स्थूलमानसे निकल आवेंगे पड़वांसे ५ निकलेगी दूजसे ६ निकलेगी और बारससे आगामी पड़वां प्रगट होगी, मतलब यह है कि चान्द्रवर्ष ३५८ दिनका होता है अतएव वर्त्तमान दिनसे ३५८ दिन व्यतीत होनेपर पूर्वोक्त विधिसे पञ्चांग मिल जायगा और सूर्यके अंशमें ७ दिनकी कसर रहेगी क्योंकि सौरवर्ष ३६५ दिनका होता है।

उदाहरण---सम्वत् १९६० के चंडू पंचांगमें चैत्र सुदी ८ रविवार २४।५९ पुनर्वसु नक्षत्र ४५।४७ अतिगण्ड योग २१।५१ रवि ११। २१ हैं अब आगेका पंचांग बनानेके लिये तिथि ८ में चार जोड़े तो तिथि १२ हुई और घड़ी २४में १८ मिलाए तो ४२ घटी हुई पुनर्वसु नक्षत्रमें ३ मिलानेसे मघा नक्षत्र आया और उसकी घड़ी ४५ में १३ मिलानेसे ५८ घटी हुई और अतिगण्ड योगमें २ मिलानेसे धृतिनाम योग आया अर्थात् आगामी वर्षकी तिथि १२ चन्द्रवार ४२ घड़ी मघा नक्षत्र ५८ घड़ी और धृति योग उस दिन होना चाहिये अब सम्वत् १९६१ का चण्डू पञ्चांग देखनेसे मालूम हुआ कि चैत्र सुदी १२ को चन्द्रवार है और तिथि घटी ४२। ३१ है और

मघा नक्षत्र ५८ । ३१ धृति योग और सूर्य ११ । १४ हैं पेश्तर कहा जा चुका है कि चान्द्रवर्षके गणित होनेसे रवि सूर्यमें ७ अंशोंकी कमी होवेगी सो ऐसाही हुआ कि ११ । २१ और ११ । १४ रविमें ७ का अन्तर होता है इसी तरह संपूर्ण आगामी पञ्चांग वर्त्तमान पञ्चांगसे बन सकता है ।

अथ यन्त्र बनानेका श्लोक

वांछाकृतार्धं कृतरूपहीनं धने गृहे षोडश सप्त चाष्टौ ॥ तिथौ दशाङ्के प्रथमे च कोष्ठे द्विसप्तषट्-त्र्यष्टकुवेदबाणाः ॥ १ ॥

अर्थ-सोलह कोठेका एक यन्त्र बतावे और जिस अंक संख्याका यन्त्र तैयार करना हो तो उस संख्याको आधी करना और उसमें एक घटाना जो कुछ रहे उसको यन्त्रके दूसरे घरमें रखना और उसमें से एक घटाकर शेषको नववें घरमें रखना उसमें से एक घटाकर शेषको सोलहवें घरमें रखना उसमें से एक कम करके शेषको सातवें घरमें रखना जो कुछ शेष बचे उसमें से एक कम करके आठवें रखना शेषबचें उसमें से एक कम करके पन्द्रहवें घरमें रखना उसमें से एक कम करके शेषको दशवें घरमें रखना उसमें से एक कम करके शेषको प्रथम घरमें रखना और फिर जितने घर बाकी बचेहों उन घरोंमें २-७-६--३--८--१--४ और ५ यह अंक क्रमानुसार रख देना ऐसा करनेसे वांछित यन्त्र बन जावेगा और क्रमानुसार प्रत्येक चार कोठोंकी संख्या सदा एक रहेगी चाहे किधरहीके चार कोठोंके अङ्कस्थ संख्या जोड़ी जावे एक दूसरेसे मिलती रहेगी ।

उदाहरण--जैसे किसीने ३४ का यंत्र बनाना चाहा तो १६ कोठेका यंत्र खींच लेना चाहिये अब ३४ के आधे १७ उसमें से गया १ तब

रहे १६ इनको यंत्रके दूसरे कोठेमें स्थापित करना चाहिये अब एक एक कम करके नववें, सोलहवें, सातवें, आठवें, पंद्रहवें, दशवें और पहले कोठेमें क्रमानुसार १५--१४--१३--१२--११--१० और ९ रखना चाहिये और खाली घर जो तीसरा चौथा, पांचवां, छठा, ग्यारहवां, वारहवां, तेरहवां और चौदहवां बचे इनमें २-७--६--३--८--१--४--५ क्रमानुसार रक्खे-गये तो ऐसा करनेसे यह यंत्र बना ।

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	८
४	५	११	१४

अथ यजमानके प्रति किसी ज्योतिषीका आशीर्वाद

श्लोक--इष्टं खचंन्द्रगुणितं शशिना समेतं पक्षाहतं युगहतं निहतं शरेण । तच्छेषकं शरकरेण वसुघ्न-मर्द्धं त्वं जीव हे नृपवरेन्द्र सुखी नितान्तम् ॥१॥

अर्थ-इस श्लोकमें ज्योतिषीने यजमानको १२० वर्षतक जीनेकी आशिष दी है, कोईसा भी इष्ट अंक ले लो उसको १० से गुणो और गुणनफलमें १ जोड़ो उसको दुगुना करो फिर उसे चतुर्गुण करो फिर गुणनफलको ५ से गुणो और जो कुछ आवे उसमें २५ का भागदो शेषको ८ से गुणो और जो अंक आवे उतनेही वर्षतक हे नृपवरेंद्र ! आप सुखपूर्वक जीवें ।

उदाहरण--जैसे किसीने अपने मनमें दो लिये उसको १० से गुणा तो २० हुए उसमें १ जोड़ा २१ हुए उसको २ से गुणा ४२ हुए इसको ४ गुणा १६६ हुए इनको ५ से गुणा ८४० हुए इनमें २५ का भाग दिया तो शेष १५ बचे इनको ८ से गुणा तो १२० हुए इसी तरह कोईसी इष्टसंख्या लीजावे उनका गणित करनेसे अन्तिम अंक १२० आवेगा यही ज्योतिषीका चातुर्य्य है ।

अथ संक्षिप्तसंवत्फलम्

जिस वर्षमें शनैश्चर मकर कुम्भके आवें और जहांतक ये सम्पूर्ण मकर राशि और पूर्वार्द्ध कुम्भ राशितक रहें उतने ही दिनोंतक मालवेमें अत्यन्त सुकाल रहेगा और गेहूँ चना इत्यादि वसन्तऋतुकी फसल बहुत अच्छी आवे जब शनि गुरुकी राशिपर आवें तो अकाल पड़े समस्त अन्न महँगे हों जब शनि अथवा गुरु वक्री होवे तो अन्नकी महर्घता करें और मंगल वक्री होवे तो ओले और पत्थर गिरें, जब मंगल सूर्यके क्षेत्रमें हो और सूर्य मङ्गलके क्षेत्रमें हो तो अग्निका अत्यन्त उपद्रव होवे कई मकानात अग्निके लगनेसे नष्ट हो जावें यह योग प्रत्यक्ष अनुभव सिद्धि होनेसे यहां लिखे गये हैं वैसे तो ग्रन्थोंमें अनेक योगायोग लिखे हुए हैं जिनका पारावार नहीं ।

अथ संक्षिप्तसिद्धान्तप्रकरणम्

सिद्धान्त गणित बहुत बड़ा है और अनेक ग्रन्थोंमें छप चुका है उसको पुन प्रकाशित करना पिष्टपेषण है हां अंग्रेजी रीत्यनुसार ज्योतिष संबन्धी जितना गणित जानना उचित है उतना यहां लिखना आवश्यक समझकर कुछ बातें लिखी जाती हैं ।

पृथ्वीके नकशेमें जो रेखाएँ उत्तरसे दक्षिणको जाती हैं उनका नाम देशांश है और जो रेखाएँ पूर्वसे पश्चिमको जाती हैं उनका नाम अक्षांश है अपने स्थानका समय जानकर किसी दूसरे स्थानका समय मालूम करना हो तो देशांशका संस्कार देनेसे अभीष्ट नगरका टाइम मालूम होता है जो स्थान अपने स्थानसे पूर्व दिशामें है वहां सूर्य यहांके कालसे

अधिक काल ठहरता है और जो देश पश्चिममें है उनमें अपने यहाँके समयसे थोड़ा दिन मान होता है पूर्व पश्चिम जाननेकी पहिचान यह है कि जो देशांश अपने स्थानके देशांशसे अधिक हो तो उस स्थानको सदा पूर्वमें समझना चाहिये और जो अपने स्थानके देशांशसे अभीष्ट स्थानके देशांश न्यून हो तो वह सदा पश्चिममें समझना चाहिये नक्शेमें दक्षिणोत्तर रेखाओंके आदि अन्तपर यह देशांश लिखे रहते हैं, जैसे—कलकत्ता ८२ देशांशपर स्थित है और बम्बईके देशांशसे अधिक है इस लिये मालूम हुआ कि बम्बईसे कलकत्ता पूर्वमें है। अब यदि कोई पूछे कि बम्बईमें दिनके ८ बजे हैं तो कलकत्तामें इस वक्त क्या टाईम होगा? ऐसे प्रश्नोंके उत्तर देनेके लिये यह रीति सदा ध्यानमें रखना चाहिये कि स्वस्थान और अभीष्ट स्थानके देशांशोंके अन्तरमें १५ का भाग देना लब्धिको घण्टा समझना चाहिये और शेषको ६० से गुणकर उसमें फिर १५ का भाग देना जो लब्धि आवै वे पल हैं अब स्वस्थान अभीष्ट स्थानसे पश्चिममें हो तो स्वस्थानके समयमें उक्त १५ के भागसे लब्ध घंटा मिनट जोड़ देनेसे अभीष्ट स्थानका समय मालूम हो जावेगा और जो स्वस्थान अभीष्ट स्थानसे पूर्वमें हो तो उक्त घण्टा मिनट स्वस्थानके समयमेंसे घटानेसे जो शेष रहे वही अभीष्ट स्थानका समय है।

उदाहरण—कलकत्तेका देशांश ८२ है और बम्बईका ७३ है दोनोंका अन्तर ९ है इनमें १५ का भाग दिया लब्धि ० आई शेष ९ को ६० से गुणा तो हुए ५४० इसमें १५ का भाग देनेसे ३६ मिनट आये अब कलकत्तेसे बम्बई पश्चिममें है इसलिये ८ घंटेमें ३६ मिनट जोड़े तो मालूम हुआ कि जिस वक्त बम्बईमें ८ बजेंगे तब कलकत्तेमें ८ बजकर ३६ मिनट व्यतीत होंगे, १५ के भाग देनेका कारण यह है कि ३६०

देशांशोंको सूर्य एक दिन रात अर्थात् २४ घण्टेमें तै करते हैं तो १५ अंश चलनेमें सूर्यको १ घण्टा लगा अब १५ अंशमें तो चलनेमें सूर्यको १ घण्टा लगता है तो इतने अंश चलनेमें सूर्यको कितना समय लगेगा इस त्रैराशिक अनुपातसे १५ भाजक होवेगा इसी लिये दो स्थानोंके देशांतरमें १५ को भाग दिया जाता है एक घण्टेमें ६० मिनट होते हैं इसलिये ६० मिनटमें १५ का भाग देनेसे मालूम हुआ कि ४ मिनटमें सूर्य १ अंश चलते हैं।

दूसरा उदाहरण

प्रश्न जहां हम जहाजमें थे वहां सबेरेके ७ बजे थे और लन्दनमें उस समय रातके ११ बजेथे तो बताओ हम लन्दनसे किस दिशा कितने देशांशके फासले पर थे ?।

उत्तर--ऐसे सवालोंमें सदा मध्याह्नकालसे गणना करना चाहिये अब मध्याह्नकालसे रात्रिके ग्यारह बजेतक ११ घंटे हुए और सबेरेकी ७ बजेतक १९ घंटे हुए ११ से १९ अधिक है इस लिये मालूम हुआ कि जहाज लन्दनसे पूर्वमें है क्योंकि पश्चिमके घंटेसे पूर्वका घंटा सदा आगे रहता है ! अब फासला जाननेके लिये यह देखना चाहिये कि लन्दनके घंटे और अपने स्थानके समयमें कितना अंतर है तो देखनेसे मालूम हुआ कि अपना घंटा लन्दनके घण्टेसे ८ घण्टा आगे है और यह पहिले कहचुके हैं कि एक घण्टेमें सूर्य १५ देशांश चलते हैं अतएव ८ घण्टाको १५ से गुणनेसे १२० देशांश आया बस मालूम होगया कि हम लन्दनसे पूर्व दिशामें १२० देशांशकी दूरीपर हैं यही उत्तर है।

तीसरा उदाहरण--लन्दन नगरमें दिनके ११ बजे हैं और हम जहांपर मौजूद हैं वहां कोई घण्टा नहीं है परन्तु हमारे स्थानके पासही

एक दूसरा शहर है जो हमारे स्थानसे ६० देशांशके फासलेपर पश्चिममें है और शहरमें रातके १ बजे हैं तो बताओ जहां हैं वह स्थान लन्दनसे किस दिशा है और वहां क्या टाइम है ? ।

उत्तर--मध्याह्नसे दिनके ११ बजेतक २३ घण्टे होते हैं और रातके १ बजेतक १३ घण्टे होते हैं तो उस शहरसे लन्दनका घण्टा १० घण्टा आगे है अतएव मालूम हुआ कि लन्दन उस शहरसे १५० देशांशके फासले पर पूर्वमें है और प्रश्नकर्त्ता उस शहरको ६० देशांशके फासले पर पश्चिममें बतलाता है इस वास्ते ६० में १५ का भाग देनेसे ४ घण्टे हुए इन ४ को १० घण्टेमें से घटाये तो ६ रहे इन ६ को १५ गुणा- किये तो ९ काये अतएव मालूम हुआ कि लन्दनसे ९० देशांशके फासलेपर पश्चिममें प्रश्नकर्त्ता है इन ६ घण्टेको लन्दनके टाइम ११ बजे दिनकेमें से घटाये तो प्रातःकालके ५ बजे उत्तर आया बस मालुम हुआ कि प्रश्नकर्ताके स्थानमें उस समय प्रातःकालके ५ बजे हैं।

शिष्य--महाराज ! चन्द्रग्रहण होता है तब स्पर्शकालसे लगा मोक्षकालतक पूर्व पश्चिम निवासी लोक कितने कितने दरजे (देशांश) वाले देखते हैं इसकी कोई रीति होवे तो कहें ? ।

गुरु-जितनी रात गये ग्रहण लगे और जितनी देरतक रहे दोनों कालको जोडकर उस कालके दरजे (देशांश) करलेना उतने दरजे (देशांश) पश्चिमवाले देखेंगे और जितनी रात गये ग्रहण लगे उतनी रातको १२ घण्टेमें से घटा देना जो रात बाकी बचे उन घण्टोंके दरजे (देशांश) करना उतने पूर्व दरजेवाले देखेंगे ।

उदाहरण--जैसे रातके ९ बजे ग्रहण लगा है और १ घण्टेतक रहा तो कहो कितने कितने पूर्व पश्चिम दरजे (देशांश) वाले देखेंगे

अब देखो रातके ९ बजे ग्रहण हुआ तो ३ घण्टे रात गई और १ घंटे तक रहा ऐसे ३ और १ चार घंटे हुए इन ४ को १५ से गुणा तो६० दरजे (देशांश) पश्चिमकी दूरीवाले देखेंगे और ३ घण्टेको १२ घंटेमेंसे घटाय तो बाकी ९ घंटे रात रही इन ९ को १५ से गुणा तो १३५ दरजे (देशांश) पूर्वकी दूरीवाले देखेंगे।

शिष्य–हर एक महीनेमें सूर्य्य कितने कितने अंश चलते हैं और दिन छोटे बड़े क्यों होते हैं ऋतु भेद होनेका कारण क्या है ?।

गुरु–सायन मेषादिसे याने मार्चकी २२ तारीखसे सूर्य्य उत्तरको जाते हैं पहिले महीनेमें १२ अंश दूसरे महीनेमें ८ और तीसरे महीनेमें४ अंश पांचवें महीनेमें ८ अंश और छठे महीनेमें १२ अंश इस तरह पीछे विषुवत् रेखापर आ जाते हैं फिर पीछे सितम्बरकी २२ तारीखसे अक्टूबरकी २२ तारीखतक एक महीना हुआ उसमें १२ अंश फिर नवम्बरकी २२ तारीखतक ८ अंश और दिसम्बरको २२ तारीख तक ४ अंश इसक्रमसे दक्षिण परमक्रांति २४ अंश जाते हैं और जिस क्रमसे जाते हैं उसी क्रमसे पीछे मार्चकी २२ तारीखको विषुवत् रेखापर आते हैं। अब देखो सूर्य्यके उत्तर दक्षिण जानेके सबबसेही वसन्तादि छः ऋतु होते हैं और दिनरातभी बड़े छोटे होते हैं जब सूर्य्य उत्तर गोलमें जाते हैं तब विषुवत्रेखासे उत्तरवालोंको दिन बड़ा और रात छोटी होती है और दक्षिणवालोंको रात बड़ी दिन छोटा होता है उत्तरवालोंको यहांतक दिन बड़ा होता है कि उत्तर ६६ अक्षांशसे लेकर ध्रुवतक जो लोक हैं उनको कहीं ८ दिनका दिन होता है याने आठदिनतक सूर्यको देखते हैं कहीं १५ दिनका कहीं एक महीनेका और उत्तर ध्रुवपर ६ महीनेका दिन होता है इसी क्रमसे दक्षिणगोलमें कहीं ८

दिनकी रात कहीं १५ दिनकी कहीं १ महीनेकी रात होती है और दक्षिण ध्रुवपर ६ महीनेकी रात होती है। जब सूर्य दक्षिणगोलमें जाते हैं तब दक्षिण वालोंको दिन बड़ा रात छोटी होती है और उत्तरमें रात बड़ी दिन छोटा होता है, दक्षिणमेंभी एक दिनके दिनसे ६ महीनेका दिन होता है तब उत्तरमें इसी क्रमसे ६ महीनेतककी रात होती है, ये बातें अँग्रेजीगोलमें प्रत्यक्ष नजर आती हैं और समझी हैं।

शिष्य—वाह वाह महाराज ! मैंने यह बात पुराणोंमें सुनीथी कि देवताओंके ६ महीनेका दिन और ६ महीनेकी रात होती है परन्तु आपने एकमहीनेके दिनसे लगाकर छः महीनेका दिन पृथ्वीपरही बतलाया यह नई बात है।

अब यह बात कहें कि सूर्य पहिले महीनेमें १२ अंश दूसरेमें ८ और तीसरेमहीनेमें ४ अंश चलते हैं तो पहिलेमें दूसरेमें तीसरेमें एक अंशके भोगनेको कितने कितने दिन लगेंगे ?।

गुरु—पहिलेमहीनेमें १ अंश भोगनेको अढ़ाईदिन लगते हैं दूसरेमें ३॥। दिन और तीसरेमें ७॥ दिन लगते हैं इसी तरह उत्तर दक्षिण जाने आनेमें यही रीति जानना चाहिये।

शिष्य—सिद्धांतशिरोमणिमें बांसकी पिंचीका गोल बांधा है और अँग्रेजीमें काष्ठका भूगोल बनाया है इन दोनोंमें विशेष कौन है ?।

गुरु—सिद्धांतकी पिंचीके भूगोलमें तो क्रांतिक्षेत्र और अक्षक्षेत्र इन्होंकी जीवासे भुज कोटि कर्ण दिखानेके वास्ते हैं जैसे द्वादश अंगुलका शंकु कोटी है पलभा भुज है अक्ष कर्ण है यह पहिला

अक्षक्षेत्र है क्रांतिक्षेत्र और अक्षक्षेत्र मिलकर सैकड़ों क्षेत्र बनते हैं, पिंची का गोल जितने अक्षांशका बांधते हैं वहींका होता है और जगहका नहीं बनता। अब अँग्रेजीके काष्ठके गोलपर तो सब बातें प्रत्यक्ष नजर आती हैं देखो–पृथ्वीके मुख्य ५ भाग समुद्रके मुख्य ५ भाग विषुवत्‌रेखा क्रांतिवृत्त याम्योत्तर वृत्तक्रांति सायन निरयन राशिके चिह्न सब बनाये हैं और लंकाका क्षितिज वृत्त जिसे उन्मंडल बोलते हैं इस चतुराईसे बनाया है कि उत्तर दक्षिण गोलमें जिस स्थानका गोल बनाना चाहो बन जाता है उसके बनानेकी यह रीति है कि जिस जगहका गोल बनानेका है उस जगहके उत्तर दक्षिण अक्षांश देख लो जितने अक्षांश जिधर होवें उधरके ध्रुवको याम्योत्तर वृत्तपर उतना ही ऊँचा कर दो तो उस स्थानका गोल बन जावेगा फिर उसपर दिनमान रात्रिमान नत उन्नत इत्यादि देखलो।

शिष्य–महाराज ! प्रथम आपने कहा था कि विषुवत्‌रेखासे दक्षिणोत्तर दोनों तरफ ६६ अंशसे लेकर ध्रुवतक महीनोंके दिन होते हैं इसके जाननेकी क्या रीति है ?।

गुरु–प्रश्नकर्त्ता कहे कि उत्तरदक्षिण ६६ अक्षांशसे ऊपर अमुक अक्षांशपर कितने महीनेका दिन होगा जितने अक्षांश बतावे उनको ९० अंशमें घटाकर जो बाकी बचे उतनी गतक्रांति समझना याने सूर्य इतने अंशपर है अब आगे देखना कि यहांसे २४ अंशतक जानेको कितने दिन लगेंगे जितने दिन कांति देखनेसे आवे उन दिनोंको दूनाकर महीने कर लेना जितने महीनेका दिन होवे उस अक्षांशपर उतने महीनेके दिन का एकदिन कहना।

उदाहरण–जैसे प्रश्नकर्ता कहे कि उत्तर ७० अक्षांशके ऊपर कितने महीनेका दिन होगा अब ७० अंशको ९०में घटानेसे २० बचे

तो समझना कि २० क्रांति गत हुई पहिले महीनेकी १२ दूसरेकी ८ से बीस अंश उत्तरपर सूर्य ठहरे हैं अब २० से आगे २४ अंशतक जानेको एक महीना लगेगा क्योंकि तीसरे महीनेमें ४ अंश चलते हैं इसी तरह २४ से बीसतक पीछे फिर आनेको १ महीना लगेगा इस कारण ७० अक्षांशपर २ महीनेका दिन होवेगा ऐसे और भी उदाहरण समझ रखना ।

शिष्य–महाराज ! २ महीने ४ महीने ६ महीनेका दिन कौन कौन अक्षांशपर होता है ? ।

गुरु–इसके जाननेकी यह रीति है कि जितने महीनेका प्रश्न हो उसका आधा करना और उसमें देखना कि सूर्य परमक्रांतिसे लौटकर जिस गतिसे चलते हैं उस गतिसे इस अवधिको तै करनेमें सूर्यके कितने क्रांति अंश व्यतीत होंगे जो आवे उन अंशोंको ६६ अंशमें मिलाना जो योगफल हो उतनेही महीनोंका दिनमान उस स्थानपर होगा ।

उदाहरण–जैसे ३ महीनेका दिन कौन अक्षांशपर होवेगा तो तीन महीनेका आधा १॥ महीना हुआ । अब देखना चाहिये कि परमक्रांति से वापिस लौटनेकी गतिसे सूर्य १॥ महीनेमें कितने अंश चलते हैं तो मालूम हुआ कि परम क्रांतिसे लौटकर सूर्य प्रथम महीनेमें ४ अंश उससे आगेके महीनेमें ८ अंश फिर उससे आगेकेमें १२ अंश ऐसे पीछे विषुवत् रेखापर आ जाते हैं । अब इस गतिसे १॥ महीनेमें सूर्यके ८ अंश होते हैं इन ८ को ६६ मों मिलानेसे ७४ हुए बस मालूम हुआ कि ७४ अक्षांशपर ३ महीनेका दिन होवेगा ।

शिष्य–६६ अंशसे ऊपर साधारणसे उत्तर दक्षिण गोलमें दिनरात मालूम होजावे ऐसी कौनसी रीति है ? ।

गुरु—उत्तर दक्षिण क्रांति जितने अंश होवे उन अंशको ९० अंशमेंसे घटाना जो बाकी बचे उन अंशोंसे लेकर उत्तर ध्रुवतक दिन जानना और दक्षिणमें उतनेही अंशसे लेकर दक्षिण ध्रुवतक रात समझना और दक्षिण क्रांति होवे तो दक्षिणमें दिन उत्तरमें रात समझना।

उदाहरण जैसे १० क्रांति उत्तर है तो दिनरात कहो अब इन १० अंशको ९० मेंसे घटाये तो ८० अंश बचे ८० से लगाकर उत्तर ध्रुवतक १० अंशके बीच दिन होता है और दक्षिणमें ८० से लगाकर दक्षिण ध्रुवतक रात होती है इसी तरह दक्षिण १० क्रांति होवे हो दक्षिणमें दिन और उत्तरमें रात समझना।

शिष्य—घण्टेके सवालोंसे लन्दन नगरसे अथवा और कोई स्थानसे पूर्व पश्चिम दरजे विषुवत् रेखापर निकलेंगे परन्तु अक्षांश जाननेकी कोई रीति होवे तो कहें ?।

गुरु—क्रांतिनतांश व उन्नतांश जानकर अक्षांश जाननेकी यह रीति है कि क्रांति और नत तक दिशाके होवें तो दोनोंका अन्तर करना जो बाकी बचे वे अक्षांश क्रांतिसे भिन्न भिन्न दिशाके जानना अर्थात् क्रांति उत्तर होवे तो दक्षिणके जानना और क्रांति दक्षिण होवे तो उत्तरके जानना और अन्तर करनेके समय यह भी याद रखना चाहिये कि जो नत क्रांतिमें घटे तो जिस दिशाकी क्रांति है उसी दिशाके अक्षांश जानना जब क्रांति और नत भिन्न दिशाके होवे तो दोनोंका जोड करना जो जोड आवे वेही क्रांतिकी दिशाके अक्षांश जानना याने क्रांति उत्तर है और नत दक्षिण है तो दोनोंका योग उत्तर अक्षांश होंगे।

उदाहरण—जैसे क्रांति २० उत्तर है और नत भी ५० उत्तर है तो अक्षांश क्या होंगे ? यहाँ क्रांति और नत एक दिशाके हैं

इसवास्ते अन्तर किया तो ३० बाकी बचे यही दक्षिण अक्षांश हुए ।

उदाहरण—२ रा जैसे क्रांति २० उत्तर और नत २५ दक्षिण हैं तो अक्षांश क्या होंगे? यहाँ भिन्न दिशा है इस वास्ते दोनोंका योग किया तो ४५ उत्तर अक्षांश हुए ।

उदाहरण—३ जैसे क्रांति २० उत्तर और नत भी १५ उत्तर हैं अक्षांश क्या होंगे ? यहाँ अन्तर करनेसे ५ अक्षांश हुए परन्तु यहां नत क्रांतिमें घटे हैं इसवास्ते ५ अक्षांश उत्तरके हुए दक्षिण क्रांति होवे तो भी यही रीति करना ।

इस अध्यायमें क्रांति नत इत्यादि विषय प्रकरण वश लिखे गये हैं जो कि यह विषय अभ्यासाधीन है इस लिये समक्ष पृथ्वीका गोला देखे विनां पाठकोंके ध्यानमें नहीं आवेगा अब इस गणिताध्यायको मै यहीं समाप्त करता हूं और संक्षिप्त शनिचार फल लिखना आरंभ करता हूँ ।

अथ शनिचारफलम्

यद्यपि शनिचार फल कई ग्रन्थोंमें लिखा हुआ है परन्तु उसका फलित प्रत्यक्ष नहीं मिलता है हमको एक पुराने ग्रन्थमें शनिचार फल मिला है जो प्रत्यक्ष अनुभव सिद्ध होनेसे बहुत सत्य है अतएव विचारसिकोंके विनोदार्थ उक्तफल नीचे लिखा जाता है ।

अथ मेषस्थशनिफलम्

मेषराशिपर शनि आवे तब समस्त धान्यका विनाश होवे चांदी, तिल, तैल, कथीर, जुवार, धोलावस्त्र, कपास, रूई, बैल इतनी वस्तुका विनाश हो मारवाड, मेवाड, मालवा इन देशोंमें छत्रभंग हो, प्रजा सुखी रहे गंगापार सुख, चोरोंकी नास्ति ।

अथ वृषराशिस्थशनिफलम्

वृषराशिपर शनि आवे तब विरोध हो. सर्वदेश खुशी, चौपायोंमें पीड़ा रोगोत्पत्ति, धान्य व चौपाये महँगे हों।

अथ मिथुनराशिस्थशनिफलम्

जब मिथुनराशि आवे तब भूकम्प हो, तिलतैल, लोह. नून, गुड, मंजीठ सस्ते हों, सर्वधान्य सस्ते हों, हाथी, घोड़े, चौपाये सस्ते हों और अजमेर, मारवाड़, चित्रकोट, जेसलमेर, बूंदी, गवालियर इत्यादिदेश सुखी और राजा सुखपूर्वक राज्य करें।

अथ कर्कराशिस्थशनिफलम्

जब शनि कर्कराशिपर आवे तब प्रजामें रोग हो चोर और म्लेच्छोंकी वृद्धि हो, मध्यदेशमें धान्य सस्ता रहे और गुजरात, सौराष्ट्र (काठियावाड़, द्वारका, वल्लभी जूनागढ, भावनगर, गिरिनारपर्वतके समीपवर्ती स्थान) में और समुद्रकिनारे महर्घता हो; घृत, गुड़, शक्कर ये सस्ते रहें। विवाह बहुत होवें, मेवाड़, मारवाड़में राजविग्रह हो।

अथ सिंहस्थशनिफलम्

सिंहराशिपर शनि आवे तब चौपाये महँगे हों, गुड़, तैल, महँगे हों, छत्रभंग हो, सर्वदेश भयभीत हो, धान्यसंग्रह हो, घृत, रस कस, हींग लवण, रक्तवस्त्र, महँगे हों।

अथ कन्यास्थशनिफलम्

जब कन्याराशिपर शनि आवे तो मेघ अल्प हो, काश्मीर व मध्यदेशमें हानि हो, विग्रह हो, रसकस महँगे हों और सुभिक्ष हो।

अथ तुलास्थशनिफलम्

तुलाराशिपर शनि आवे तब अग्निभय हो, अन्न महँगे हों, सर्वत्र विपत्ति पडे, धान्य उत्पन्न न हों, मेघ अल्प हों, प्रजा नैरोग्य रहे, धान्य-संग्रह करनेसे लाभ हो, मुलतानदेशमें सुख रहे ।

अथ वृश्चिकस्थशनिफलम्

वृश्चिकराशिपर शनि आवे तो प्रजा भयभीत हो, भूकम्प हो, गुजरातका क्षय हो, मध्यदेशमें उत्पात, अग्निभय, राजविग्रह और मारवाड़में विपत्ति हो ।

अथ धनस्थशनिफलम्

धनराशिपर शनि आवे तो सम्पूर्ण चराचरमें दुर्भिक्ष फैलजावे, पिता पुत्रको बेचे, भर्ता स्त्रीको बेचे, दोमास उपरान्त अन्नकी अत्यन्त कमी आवे, विग्रह हो, चौपाये महँगे हों !

अथ मकरस्थशनिफलम्

मकर राजिपर शनि आवे तब मेघ अत्यन्त हो धान्य बहुत निपजे, और सम्पूर्ण धान्य सस्ते हों, धातु सोना चांदी सर्व रसकस घृत तैल सस्ते रहें, कोंकण (बम्बई प्रांत) दक्षिण, गौड़ (उत्तरीयबंगाला) चँदेरी (नर्मदा किनारा) मालवा और समुद्र किनारा इनमें सुख हो और मेहनती मजदूर बहुत महँगे मिलें ।

अथ कुम्भस्थशनिफलम्

शनि कुंभाराशिपर आवे तब मेघ अत्यन्त हो, सर्व धान्य उत्पन्न हो राजा प्रजा सुखी हों, रसकस सर्व सस्ते रहें, चौपायोंमें पीड़ा हो, मँजीठ मोती ऊन वस्त्र और लाल वस्त्र तथा गेहूँ चना ये महँगे रहें, दक्षिण दिशामें म्लेच्छोंका युद्ध हो ।

अथ मीनस्थशनिफलम्

मीनराशिपर शनि आवे तब दुर्भिक्ष हो, घृत, तैल नून महँगे हों, मनुष्योंमें रोगोत्पत्ति और पूर्व, पश्चिमके सम्पूर्ण देशोंमें अत्यन्त विग्रह और उत्पात हों। इति शनिचारफलं समाप्तम्।

अथ दुर्भिक्षयोगाः

जिस वर्षमें एकराशिपर शनि, राहु, मंगल, सूर्य्य, गुरु, आदि नवग्रह होंय तो उस वर्षमें दुर्भिक्ष, छत्रभंग, राजविग्रह हो वनस्पति फले बिना समयमें मेघ बरसे ॥ १ ॥

जिस वर्षमें १३ महीनेहों और सूर्यकी राशिके आगे मंगल रहे सूर्य पीछे रहे यह योग वर्षाऋतुमें होवे तो दुर्भिक्ष पड़े धान्य संग्रह करनेसे लाभ हो ॥ २ ॥

जिस वर्षमें राहु केतुका उदय हो तो भूकम्प हो तारा टूटे,पूँछल तारा ऊगे, उस वर्षमें दुर्भिक्ष पड़े राजविग्रह छत्र भंग हो ॥ ३ ॥

जिस वर्षमें चैत्रमास ज्येष्ठमासमें मेघ बरसे और श्रावण भाद्रपदमें शीतपड़े वायुचले उस वर्षमें मनुष्य व चौपायोंमें कष्ट राजविग्रह हो धान्य संग्रह करनेसे लाभ हो ॥ ४ ॥

जिस वर्षमें रात्रिको काग बोले दिनको शियाल बोले गाय स्त्री जोड़ले जने विपरीत उपजे उस वर्षमें दुर्भिक्ष पड़े, मनुष्य चौपायोंमें कष्टहो अन्न तृण कम निपजे ॥ ५ ॥

जिस वर्षमें आषाढ़की पूर्णिमा क्षयहो उस वर्षमें दुर्भिक्षपड़े राजविग्रहहो सियालू उनालू धान्य कमनिपजे सब कुवोंका पानी सूखजावे बड़े बड़े कुवोंमें जलमिले ॥ ६ ॥

जिस वर्षमें कर्क संक्रांति शनि, रवि या मंगलवारी होय और वर्षका राजा रवि शनि या भौम होय तो उस वर्षमें दुर्भिक्ष पड़े मनुष्योंमें पीड़ा, खुजली लोहू विकार हो ॥ ७ ॥

जिस वर्षमें दिवालीके दिन स्वाति नक्षत्र हो और शनि, रवि, मंगल वार होय आयुष्मान् योग होय तो दुर्भिक्ष पड़े, रसकस महँगेहों राज-विग्रह हो प्रजा खुशी रहे ॥ ८ ॥

जिस वर्षमें माघसुदी ५ के दिन शनि मंगलवार हो शुभवार न हो तो काल पड़े पृथ्वी चलायमान हो देश ऊजडहो ॥ ९ ॥

जिस वर्षमें सूर्य, चन्द्रमाका ग्रहण एकमासमें हो दुर्भिक्ष पड़े मनुष्योंमें रोग बहुत हों विग्रह बहुतहो ॥ १० ॥

जिस वर्षमें मीनराशिपर शनि कर्कराशिपर गुरु तुलाराशिपर भौम हों उस वर्षमें दुर्भिक्ष राजविग्रह छत्रभंग हो पृथ्वी चलायमान हो ॥ ११ ॥

जिस वर्षमें कार्त्तिककी पड़वा बुधवारी हो तो दुर्भिक्ष पड़े धान्य, घृत तैल, गुड़, रूई, कपास, सब किराना महँगा हो ॥ १२ ॥

जिस वर्षमें आषाढसुदी ९ के दिन बद्दल न हो सूर्य चन्द्र निर्मल उगे निर्मल अस्तहो तो काल पड़े राजविग्रह प्रजा दुखी ॥ १३ ॥

जिस वर्षमें उत्तराभाद्रपद, रेवती, भरणी, मूल, मघा इन नक्षत्रोंपर गुरु हो और विशाखा, स्वाति, पूर्वाषाढपर भौमहो उस वर्षमें राजविग्रह मृगीरोग हो पृथ्वीपर विग्रह हो ॥ १४ ॥

जिस वर्षमें पौष, माघ फाल्गुनमें शीत थोड़ा पड़े और चैत्र व ज्येष्ठमें मेघ वर्षे तो धान्यका दुर्भिक्ष पड़े राजविग्रह हो ॥ १४ ॥

जिस वर्षमें चोटिल पूँछल तारा ऊगे उस वर्षमें अकाल पड़े मनुष्य चौपायोंमें कष्ट रोगोत्पत्ति हो ॥ १६ ॥

जिस वर्षमें आषाढ वदी ८ के दिन कृत्तिका मृगनक्षत्र हो तो काल पड़े धान्य संग्रह करनेसे लाभ हो ॥ १७ ॥

जिस वर्षमें सूर्यका नक्षत्र स्त्री नक्षत्र नपुंसक नक्षत्रसे लगे तो मेह थोड़ा बरसे धान्य महँगा होय ॥ १८ ॥

जिस वर्षमें अमावास्या भौमवारी हो सोमवती एकभी न हो तो काल पड़े मनुष्य बिकें प्रजा खुशी राजविग्रह हो ॥ १९ ॥

जिस वर्षमें ज्येष्ठसुदी १० तक मेघ न बर्षे तो सब देशोंमें काल पड़े मनुष्य चौपाये खुशी रहें ॥ २० ॥

जिस वर्षमें शनि, गुरु राहु आदि नवग्रह इकट्ठे होयँ तो छत्रभंग हो राजविग्रह दुर्भिक्ष पडे ॥ २१ ॥

जिस वर्षमें आषाढ़में धुन्ध पड़े बद्दल शीतल होय खाली गर्जना होय पृथ्वी हले तो दुर्भिक्ष पड़े धान्य बहुत महँगा होय ॥ २२ ॥

जिस वर्षमें श्रावण, भाद्रपदमें शनि, गुरु, मंगल वक्री हो तो काल पड़े रसकस महँगा होय ॥ २३ ॥

जिस वर्षमें ज्येष्ठकी अमावास्याके दिन सूर्यास्त देखना और दूजके दिन चन्द्रमाका उदय देखना जो चन्द्रमा सूर्यसे बायां अस्त हो तो काल पड़े मनुष्य मरे जो सूर्यसे दाहिना अस्त हो तो समय अच्छा हो जो सूर्यके मस्तकपर अस्त हो तो समय मध्यम होवे ॥ २४ ॥

जिस वर्षमें गाय भैंस रूप कुरूप जने और पौषके महीनामें बिना बद्दलके बिजली चमके तो अकाल पड़े पृथ्वी चल विचल हो ॥ २५ ॥

जिस वर्षमें श्रावण, भाद्रपदमें कोई ग्रह उदय न हो अस्त न हो तो सर्वधान्य संग्रह करना, रसकस महँगा होय ॥ २६ ॥

जिस वर्षमें श्रावण, भाद्रपदमें वायु चले मोटे बद्दल हों पानी नहीं बरसे तो काल पड़े तो सर्वदेश ऊजड़हो सर्वधान्य संग्रह करनेसे लाभ हो ॥ २७ ॥

जिस वर्षमें रोहिणी पर्वतपर पड़े राजा मंत्री, शनि मंगल हो तो दुर्भिक्ष पड़े मनुष्य मरे राजा मरे ॥ २८ ॥

जिस वर्षमें माघकी पड़वांका क्षय हो तथा बुध, शनि, भौमवारी होय तो वह वर्ष मामूली हो धान्य संग्रह करनेसे लाभ हो ॥ २९ ॥

जिस वर्षमें आषाढसुदी ११ का क्षय हो तथा उस दिन रवि, शनि, भौमवार हो तो उस वर्षमें काढका चालो बहुतहो याने सर्पोंसे पीड़ा, टीड़ी, चूहा बहुत नुकसान करें धान्य महँगा होय वर्षा मध्यम हो ॥ ३० ॥

जिस वर्षमें बारहों संक्रांति १५ मुहूर्ती हो तथा क्रूरवारी होय तो सर्वधान्य संग्रहकरना पैसे बराबर धान्य हो समय भयंकर हो राजाप्रजामें पीड़ा हो ॥ ३१ ॥

जिस वर्षमें समयका राजा अस्तहो तथा शनि, राहु, मंगल, संयुक्त हो तो निश्चय काल पडे समय मध्यम हो धान्यसंग्रह करनेसे लाभ हो राजाप्रजामें रोग हो ॥ ३२ ॥

जिस वर्षमें पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक, मार्गशीर्ष इतने महीनेमें तारे फिरें तारामंडल फिरता दीखे तथा अग्नि सरीखा दीखे तो पृथ्वीपर प्रलयकाल पड़े बड़ा दुकाल पड़े मनुष्यको मनुष्य बेचे तथा खावे उत्तम पुरुष मध्यम हो ॥ ३३ ॥

जिस वर्षमें चैत्र, वैशाख, कार्तिक, आश्विन, आषाढ़की पूर्णिमासीके दिन चन्द्रमाके बिम्बको रोहिणीको तारे वेधिकर निकले तो बड़ा दुकाल पड़े छत्रभंग हो राजविग्रह हो सर्वपृथ्वी रुण्डहोय संग्राम हो हाहाकार होय ॥ ३४ ॥

जिस वर्षमें आषाढ, चैत्र, फाल्गुन, कार्तिक महीनेमें एक मासमें ही सूर्य चन्द्रमाका ग्रहण हो और २० विश्वा संपूर्ण हो तो भयभ्रांत काल पडे धान्यसंग्रह करनेसे लाभ बहुत हो ॥ ३५ ॥

जिस वर्षमें धन, मीन, सिंह, कन्या, राशिऊपर क्रूरग्रह बैठे होंय तो दुर्भिक्ष पडे किरानो महँगे हों सर्पोंसे पीडाहो चौपायोंमें पीडा मेघ कम वर्षे ॥ ३६ ॥

जिस वर्षमें रेवती, शतभिषा, आश्लेषा, मूल इन नक्षत्रोंपर गुरु शनि राहु हो तो दुर्भिक्ष पड़े दोनों शाखाका विनाश हो कुवोंकी शाखा जाय चौपायें मरें छत्रभंग हो ॥ ३७ ॥

जिस वर्षमें शीतकालमें शीत न पड़े और गर्मीके दिनोंमें शीत पड़े चैत्रमें मेह वर्षे तो दुर्भिक्ष पडे प्रजा सब खुशी मनुष्य बहुत मरें ॥ ३८ ॥

जिस वर्षका राजा मन्त्री अस्तहोय तथा वक्र हो तथा अतिचार हो तो वह वर्ष मध्यम हो धान्य महँगा होय राजा प्रजा दुखी ॥ ३९ ॥

जिस वर्षमें वर्षका राजा क्रूरग्रहसे युक्त हो तो महाविपत्ति पड़े छत्र भंग हो मनुष्य पर्वतोंपर जाकर रहें ॥ ४० ॥

जिस वर्षको राजा मन्त्री कुतवाल तीनों क्रूरग्रह हों तो धान्य महँगा हो रसकस महँगा हो ॥ ४१ ॥

जिस वर्षका क्रूरसम्वत्सर नाम हो और वर्षका राजा मन्त्री भी क्रूर हो तो वर्ष नेष्ट हो राजा प्रजा दुखी व्यापारी दुखी ॥ ४२ ॥

जिस वर्षमें तेरह महीने हों और एक महीनेमें दो तिथी टूटें तो अकाल पड़े राजविग्रह बहुत हो लोग पर्वतपर वसें चौपायोंका नाश हो और अन्न औषधि समान हो ॥ ४३ ॥

जिस वर्षमें सुदीकी पंचमी शुभवारी न हो सोमवती अमावस्या न हो तो समय महामध्यम हो टीडी आवे मनुष्य दुखी हों ॥ ४४ ॥

जिस वर्षमें तीन ग्रहण हों तो पूर्वदिशा और मेवाड़में विपत्ति पडे सर्व पृथ्वी चलाचल हो ॥ ४५ ॥

जिस वर्षमें रोहिणीको तारा बेधकरे तो घोर काल पड़े मनुष्यको मनुष्य खावें ॥ ४६ ॥

जिस वर्षमें शनि राहु मंगल एक राशिपर हों तो वर्ष भयंकर हो काल पड़े मनुष्य पुत्र पुत्री बेंचे ॥ ४७ ॥

जिस वर्षमें पांच ग्रह एक राशि ऊपर आवे गुरु शनि अस्त हों तो मृगीरोग हो धान्य महँगा हो राजा प्रजामें पीड़ा हो चौपायोंमें पीड़ा हो डाढ चालो हो ॥ ४८ ॥

जिस वर्षमें श्रावणमें नैर्ऋत्यकोणमें अगस्त ऊगें और रातको ठंढी पवन चले तो समय खराब हो राजविग्रह हो फल फूलका नाश हो स्त्री चौपायोंमें गर्भपात हो धान्यका नाश हो ॥ ४९ ॥

जिस वर्षमें गुरु, शनि, राहु, भौम एक नक्षत्रपर आवें तो छत्र पड़े राजविग्रह हो हिन्दू मुसल्मानोंमें लड़ाई हो ॥ ५० ॥

जिस वर्षमें तारे बहुत टूटे विना बद्दल विजली चमकै तो बड़ा काल पड़े राजा मरे ॥ ५१ ॥

जिस वर्षमें समयका राजा सम्वत्सरकी राशिको न देखे और क्रूर ग्रह संयुक्त हो तो चौमासेमें पवन चले मेघ अल्प हो दोनों शाखाका विनाश हो ॥ ५२ ॥

जिस वर्षमें सिंहराशिके गुरु हो कुम्भराशिपर राहु, मंगल हो तो निश्चय कालपड़े राजविग्रह हो ॥ ५३ ॥

जिस वर्षमें दो श्रावण व दो भादों हों तो महँगा हो लोग दुखी पीला आदि वस्तु खाकर जीवें ॥ ५४ ॥

जिस वर्षमें मीनराशिपर राहु, शनि हो तो मृगीरोग हो पीड़ा हो धान्य अल्प निपजे राजविग्रह हो ॥ ५५ ॥

जिस वर्षमें एक महीनामें तीन ग्रह वक्र हों शनि, मंगल, गुरु, शुक्र तो दुकाल पड़े राजविग्रह होय युद्ध होय ॥ ५६ ॥

जिस वर्षमें समयको राजा अस्त हो मन्त्री वक्र और कुतवाल क्रूर हो या इनसे युक्त हो तो छत्रपडे अन्नजलकी नास्ति हो ॥ ५७ ॥

जिस वर्षमें तारामंडल फिरें चन्द्रमासे इकट्ठे तारा हों तो काल पडे धान्य नहीं मिले ॥ ५८ ॥

जिस वर्षमें चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठमें मेघवर्षे पौष माघमें तपन गर्मी हो और चौमासेमें पवन चले तो काल पड़े श्रावण भाद्रपदमें कुवोंमें पानी भर आवे ॥ ५९ ॥

जिस वर्षमें धुन्ध बहुत पडे राखीको श्रवण नक्षत्र न होय अक्षय तृतीयाको रोहिणी न हो पौषवदी ३० को मूल न हो तो दुकाल पडे ॥ ६० ॥ इति दुर्भिक्षयोगः ।

उक्तयोग हमारे परीक्षा किये हुए नहीं हैं एक बहुत पुराने हस्तलिखित ग्रन्थसे उद्धृत किये गए हैं। अब आगे वृष्टिके योग लिखे जाते हैं जो किसी अन्य ग्रन्थमें अभीतक प्रकाशित नहीं हुए हैं।

अथ वृष्टियोगः

शनि	सूर्य	मंगल	गुरु	शुक्र	बुध	चन्द्र
चंड	वायु	अग्नि	सौम्य	नीर	जल	अमृत
कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ
वि	स्वा	चि	ह	उ	पू	म
अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र
भ	अ	रे	उ	पू	श	ध

यह चक्र नगरपतिजयचर्यामें लिखा है सब ग्रह अपने अपने नक्षत्रों पर देखकर चक्रमें नक्षत्रोंपर लिखे जावें तब इसका विचार

होता है जैसे सात कोठोंका यह चक्र है पहिलेका नाम चण्ड २ वायु ३ अग्नि ४ सौम्य ५ नीर ६ जल ७ अमृत इस चक्रके वाम भागके तीन कोठे जलके हैं और दक्षिण भागके तीन कोठे अन्धहवा और तपनके हैं और बीचका कोठा जिसका नाम सौम्य है वह हवा जल तपनका देनेवाला है जिस वक्त अश्लेषा, मघा, श्रवण, धनिष्ठा इन चारों नक्षत्रोंमें सब ग्रह हों तो १८ दिनकी झिड़ लगे और झिड़ उस दिनसे शुरू होती है जिस दिन चन्द्रमा इन नक्षत्रोंपर आता है और जब सब ग्रह पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, अभिजित्, शततारका नक्षत्र पर होते हैं तो १२ दिनकी झिड़ लगती है और जब पुनर्वसु, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ, पूर्वाभाद्रपदमें सब ग्रह होते हैं तो ६ दिनकी झिढ लगती है इसी तरह आर्द्रा, हस्त, पूर्वाषाढ, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रोंमें सब ग्रह होते हैं तो ३ दिनकी झिड़ लगती है मृगशिर, चित्रा, मूल, रेवतीमें सब ग्रह होवें तो ज्यादासे ज्यादा तपन पडती है रोहिणी, स्वाति, ज्येष्ठा, अश्विनीमें सब ग्रह हों तो हवा ज्यादे चलती है और कृत्तिका, विशाखा, अनुराधा, भरणीमें सब ग्रह हों तो अन्ध ज्यादेसे ज्यादे चलें वृक्ष टूट टूट कर पडे अब यह देखना कि सब ग्रह इकट्ठे होकर एक जगह आना दुशवार है परन्तु दो, तीन, चार ग्रहोंका संयोग भी फलदाई होता है। मगर पापग्रहका संयोग तपन हवा ज्यादे और छूछे वादल देनेवाले हैं और शुभ ग्रह शुभ ग्रहका संयोग ठंडी हवा, बद्दल छाया व फुहारोंके देनेवाले होते हैं और एक पापीग्रह व एक शुभग्रह तथा चन्द्रमा सौम्य नीर जल अमृत नाडीमें हो तो थोडा जल वर्षता है और दो पापग्रह दो शुभग्रह और चन्द्रमा उक्त चार कोठोंमें इकट्ठे हों तो जल ज्यादा वर्षता है और चन्द्रमा ग्रहोंके शरीक रहता है तबतक जलका संयोग पूरा रहता है इसमें भी राजाओंके

समक्ष सरतिया कहदेनेके लायक यह योग है मंगल, गुरु, बुध, शुक्र और चन्द्र अमृत नाड़ीमें हो तो मूसलधार पानी पड़े और जलनाड़ीमें हो तो रह रहकर पानी बरसे, नीर नाड़ीमें हो तो बारीक बारीक बूंदेंपड़े, और सौम्य नाडीमें हो तो खुले और वरसे और यह ग्रह अग्नि हवा और अंधनाड़ीमें हो तो भी जल वरसावें।

अतिवातं च निर्वातमत्युष्णं शीतशीतलम्।
अत्यभ्रं च निरभ्रं च षड्विधं मेघलक्षणम्॥

अर्थ-जल बरसनेके ये ६ लक्षण हैं अर्थात् बिलकुल हवा बन्द होजाना या बहुत हवा चलने लगना तो वारिश होती है बहुत बादल छाजावें अथवा बिलकुल बादल न रहे तो वारिश होती है बहुत गर्म पड़नेलगे अथवा बिलकुल गर्म मिटजावे तो वारिश होती है। वृष्टिके योग बहुतसे ग्रंथोंमें प्रकाशित होगए हैं अतएव उन आविष्कृत योगोंको पुनः लिखकर मैं यह ग्रंथ बढाना नहीं चाहता पाठकगण मयूरचित्रकादि ग्रंथोंमें उन योगोंको देखलेंगे। गत दो तीन वर्षोंमें जब जब महती वृष्टि हुई है तब तब मैंने उस समयके ग्रह योगोंको लिखलिये हैं अतएव गुणी जनोंके विनोदार्थ उक्त योगोंको नीचे प्रकाशित करता हूँ पाठकवृंद इनसे वृष्टि योगोंका अनुभव करलेंगे।

भादों वदी ११ चन्द्रकार सं० १९५७ को बहुत भारी वृष्टि हुई उस दिनके ग्रह योग ये थे रवि ४। ३ भौम २। १४ बुध ३। २० गुरु ७। ११ शुक्र २। २१ शनि ९। २ और चन्द्रमा मृगशिर उपरांत रोहिणी नक्षत्रपर था।

सं० १९५८ प्रथम श्रावण शुक्ल ४ शुक्रवारको बहुत वृष्टि हुई उस दिनके ग्रह योग ये थे रवि ३। ३ भौम ५। १० बुध २ २० गुरु ८।

१५ शुशु । ३ । २६ शनि ८ । १८ और चन्द्रमा मघा नक्षत्रपर था ।

सं० १९५८ द्वितीय श्रावण वदी ३ शनिवारको बिजली गिरी और वृष्टि उत्तम हुई उस दिनके ग्रह योग ये थे रवि ४ । ० मंगल ५ । २७ बुध ३ । २१ गुरु ८ । पे३ शुक्र ४ । २९ शनि ८ । १६ और चन्द्रमा पूर्वा नक्षत्रपर था ।

सं० १९५८ द्वितीय श्रावण वदी १० शुक्रवारसे वृष्टि शुरू हुई जो ८ दिन तक लगातार बराबर होती रही यह वृष्टि जबतक चन्द्रमा रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा नक्षत्रों पर रहा तब तक होती रही शेष सब ग्रहोंके योग पूर्ववत् थे इस श्रावणके शुक्ल पक्षमें भी बहुत वृष्टि होती रही ।

सं० १९६० आषाढ सुदी ५ चन्द्रवारको १ इञ्च ८१ सेन्ट वारिश हुई उस दिनके ग्रह योग ये थे रवि २ । १३ मंगल ५ । १६ बुध १ । २५ गुरु ११ । १ शुक्र ३ । २९ शनि ९ । १२ और चन्द्रमा मघा नक्षत्रपर था ।

सं० १९६० भादोंसुदी १० मंगलवारको १ इञ्च ९७ सेन्ट वारिश हुई उस दिनके ग्रहयोग ये थे रवि ४ । १३ मंगल ६ । २४ बुध ५ । ९ गुरु १० । २८ शुक्र ५ । ५ शनि ९ । ८ और चन्द्रमा मूल नक्षत्रपर था ।

इस शताब्दीमें सम्वत् १९१८ व सं० ९१२२ इन दो वर्षोंमें बहुत बडी वृष्टि हुई कि नदीकी बाढसे कई गांव बहगए ।

सं० १९१८ की वर्षा ऋतुमें गुरु सिंहके शनि सिंहके मे दोनों मघा नक्षत्रपर थे और इसी मघा नक्षत्रपर मंगल बुध और शुक्र तथा चंन्द्रमा भी शामिल होगये थे ।

सं० १९२२ की वर्षा ऋतुमें गुरु धनके शनि तुलाके तथा बुध शुक्र सूर्य मंगल इनका परस्पर संयोग किसीका नहीं हुआ ।

सं० १९५४ ज्येष्ठ सुदी १२ शनिवार मुताबिक ता० १२ जून सन् १९९७ दिनको ४॥ बजे इस भारतवर्षमें बड़ा प्रबल भूकम्प हुआ कलकत्तेमें इसके कारणसे कई मकानात गिरगए उस दिनके ग्रह योग ये हैं रवि १ । २८ ॥ मंगल ३ । १९ बुध १ । ५ गुरु शुक्र० । १५ शनि वक्री ७ । ० और चन्द्रमा विशाखा नक्षत्र पर था—इसी तरह पाठकगण प्रत्येक दैवी घटनाका ज्योतिषके योगायोगसे अनुभव करते रहेंगे तो फलित ज्योतिषका उत्तम ज्ञानोपचय उन्होंको होगा ।

अथ परिशिष्टप्रकरणम्

जो जो विषय प्रत्यक्षफल दाता तथा अन्य विषयक इस भागमें लिखनेसे रहगये हैं उन्होंको इस परिशिष्ट प्रकरणमें लिखकर समाप्त करताहूं ।

जिस वर्षकुण्डलीमें लग्नसे नवम या पञ्चम घरमें गुरु हो और जन्म राशिसे पञ्चम, नवम, प्रथम गुरु हो तो उस वर्षमें भार्य्याके गर्भ रहता है और पुत्रकाही जन्म होता है ये योग मेरा परीक्षा किया हुवा है ।

जिस वर्ष कुण्डलीमें सप्तम या अष्टम मंगल हो तो उस वर्षमें मनुष्यका अपयश होता है और मूत्रेन्द्रिय तथा शिरमें बाधा होती है ।

जिसवर्ष लग्नकी कुण्डलीमें ११ या दूसरे घर स्वक्षेत्री शनि हो तो उस वर्षमें अफीमके व्यापारसे लाभ होता है ।

जिस वर्षमें जन्म राशिसे सप्तम, नवम, षष्ठ, एकादश, पञ्चम गुरु हो और वर्षकुण्डलीमें सप्तमेश पञ्चमघरमें हो अथवा मूर्त्ति (लग्न) में हो तो उसवर्षमें निश्चय विवाह होता है ।

वर्षकुण्डलीमें नवम, द्वादश या अष्टम गुरु हो तो उस वर्षमें तीर्थयात्रा होती है ।

जिस वर्ष लग्नमें चतुर्थ घरपर स्वक्षेत्री चन्द्र या शुक्र हो तो उस वर्षमें नवीन घर बनता है–याने तामीरात इसयोगसे चलती है ।

वर्षकुण्डलीमें पञ्चमभाव शनि, राहुसे युत वा दृष्ट हो तो उस वर्षमें मनुष्यकी कमर दुखती है–उक्त पुत्रयोगमें तरुणावस्था दंपतिकी होना चाहिये जो ये योग वृद्धावस्थामें या पत्नीरहित पुरुषके आवें तो उसके ज्ञानकी वृद्धि हो ।

जन्म वर्षमें चतुर्थेश अस्त होकर शत्रुक्षेत्री हो उसवर्ष मकानमें आग लगे ।

जन्म लग्नसे अष्टम लग्न वर्षलग्न हो उसपर मंगल बैठा हो और जन्म-लग्नेश वर्षकुण्डलीमें छठे घर हो और वर्षलग्नेश अस्त हो तो इसयोगसे उसी वर्षमें मनुष्यकी मृत्यु होती है ।

अब जन्मकुण्डलीमें देखनेके योग लिखताहूं

जिसकी जन्मकुण्डलीमें कुम्भके गुरु अकेले बारहवें घर हो, या मीनके गुरु, राहु युत द्वादशघरमें हों अथवा मकरस्थ गुरु भौमसे युत अष्टम घरमें हो तो इसयोगवाला पुरुष संस्कृत व्याकरणमें निपुण होता है, जिसकी जन्म कुंडलीमें केन्द्र ग्रहोंसे रहित खाली हो तो वह पुरुष २५ वर्षके उपरांत सुखी, धनवान् होता है जिसके सप्तमेश तीसरे घर हो उस पुरुषकी भार्या रोगवती और उदररोगकी सदा शिकायत करती रहती है । जिसके सप्तमेश शनि हो उसकी भार्या रूपवती होती है । जिसके चौथे या सातवें शनि हो उसको भाँग पीनेका शौक रहता है । जिसके अष्टमघर शनि हो उसके पुत्र आठवरसकी उमरका होकर मरजाता है, कोई ग्रह (कन्याका बुधको छोड़कर) स्वक्षेत्री अष्टममें हो तो उस पुरुषके सन्तान नहीं होती परंतु उसी कुण्डलीमें जो पञ्चमेश उच्चक्षेत्री तो सन्तान होती है । जिसके पंचम बुध हो उसकी भार्याके

गर्भपात होता है। जिसके पंचमेश अस्तंगत हो उसके पुत्रसंतान होकर मरते रहते हैं। जिसके लग्नेश सूर्य युत हो उसको निद्रा थोडी आती है। जिसके दशम घरमें केतु हो उसकी आठ बरसकी उमरमें पिता मरता है और ऐसे योगवाला गंगामें स्नान अवश्य करता है जिसका जन्म मकर, कुंभ, मेष, वृश्चिक, मिथुन, कन्यामें होता है उसका स्वभाव क्रोधी होता है, जिसका जन्म सूर्योदयके समय होता है वह भाग्यवान् क्रोधी और आधासीसीका रोगवाला होता है। धन लग्नमें जिसका जन्म होता है वह शांत स्वभाव होता है। जिसका जन्म गुरुवारको होता है वह धूर्त स्वार्थसाधक तेज बुद्धिवाला होता है। जिसका जन्म बुधवारको हो उसकी सौम्य प्रकृति होती है। जिसका जन्म शनिवारको होता है। मैले कपडोंका धारण करनेवाला मंद बुद्धिका होता है। रविवारको जन्मनेवाला बुद्धिमान् सुस्वभाव होता है। चन्द्रवारको जन्मनेवाला कुछ मंद बुद्धि उत्तम स्वभाववाला होता है। भौमको जन्मनेवाला बुद्धिमान् शांत स्वभाववाला होता है। भद्रा, व्यतीपात और वैधृति इनमें जिसका जन्म होता है। वह पुरुष दीर्घजीवी होता है। संपूर्ण बारह लग्नोंमें मीन मेष ये बहुत छोटी लग्नें हैं अतएव इनमें जिन्होंका जन्म होता है उन्होंका कद छोटा होता है और कर्क वृश्चिक, सिंह मकर ये बडी लग्नें हैं अत एव इन लग्नोंमें जिसका जन्म होता है वह ऊँचे कदका होता है। जिनका जन्म गुरु और शुक्रकी लग्नोंमें होता है वे तरुणाईमें भी वृद्ध पुरुष सरीखी वृत्ति रखते हैं और जिनका जन्म मङ्गलकी लग्नोंमें होता है उनका पुरुषार्थ बुढापेमें भी तरुणतुल्य होता है। जिन पुरुषोंके जन्म लग्नेश सूर्य और चन्द्रसे युक्त हो तो वह पुरुष कास श्वास (दमा और खांसी) के रोगसे पीडित रहते हैं जिनके सिंह

राशिका मङ्गल लग्नमें हो उनके शरीरमें अग्निसे कष्ट पहुँचता है जन्म लग्नेश, शुक्र शनि युत और भौमसे दृष्ट होकर छठे घर बैठे तो ऐसे पुरुषको दिमागको कमजोरी, शिर भ्रमको बाधा सदा बनी रहती है। जिस पढे हुए पुरुषके लग्नमें शुक्र हो तो वह कलाकौशल्य, यन्त्र निर्माण आदिमें कुशल होता है। और उसके अक्षर अच्छे होते हैं जिस स्त्रीका जन्म कर्क लग्नमें होता है उसके नेत्र अतीव सुन्दर होते हैं, जिस पुरुषके तृतीयेश द्वितीय स्थानमें बैठा हो और मिथुनका जन्म चन्द्र हो तो इस योगसे वह आदमी परगुदा भंजन करता है और इसमें उसमें उसकी रुचि प्रायः रहती है जिसके जन्मकालमें अष्टमेश या अष्टम घर भौमसे युत वा दृष्ट हो तो ऐसे योगसे जातकको अतिसार सम्बन्धी गुदा सम्बन्धी बाधा होती है जिस घरमें राहु बैठे वह घर जिस अंगका सूचक है उसी अंगमें वातका असर कहना एकादशेश लग्नमें, सप्तम, तृतीय घरमें हो अथवा लग्नेश करके युक्त केन्द्रमें बैठा हो इस योगसे मनुष्यको व्यापारमें लाभ होता है॥

प्रश्न—आपने अङ्गविचारमें गुह्येन्द्री और मूत्रेन्द्रीका एक ही भाव बतलाया सो क्या ये दोनों इन्द्री एक ही हैं जो एकही भाव लाया।

उत्तर--इस देहमें ऐसे बहुतसे अवयव हैं जिनका परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है अतएव एक अंगमें पीड़ा पहुँचनेसे दूसरे अङ्गमें भी बाधा पहुंच जाती है जैसे किसीके मस्तकमें अत्यन्त दर्द हो तो उसको देखनेमें व शब्दके सुननेमें भी तकलीफ होती है और मूत्रेन्द्री गुह्येन्द्री का तो परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है जब आप मल त्याग करने जाते हैं तो उसी समय मूत्र त्याग भी क्यों करते हैं क्योंकि इन्द्रियां तो दोनों अलग अलग हैं, मूत्रवाहिनी और मलवाहिनी दोनों नाडियां

परस्पर मिली हुई हैं और भी बहुतसे एसे अंग हैं जिनके परस्पर घनिष्ठ सन्बध हैं उन अंगोंके बतलानेके लिये ज्योतिषमें एकही भाव रक्खा है फलित बुद्धिपूर्वक कहना चाहिये जैसे दशम भाव पिता और राज्य दोनोंका है अब जो दशम भाव किसीका सुध-रगया तो वहां पिताकी वृद्धि कहना चाहिये कि राज्यकी वृद्धि यहां पिता सुख होनेसे राज्यकी वृद्धि नहीं हो सकती क्योंकि पिताके मरणोपरान्त पुत्रको राज्य मिलता है यहां दोनोंके सुखमें परस्पर विरोध है इस भावमें दशमेशसे राज्यका फल कहना और दशमस्थग्रह तथा दशमघरके देखनेवाले ग्रहसे पिताका फल कहना पंचम भाव विद्या और पुत्र दोनोंका है यहां ऐसा नहीं हो सकता कि जो सन्तानहीन हो वह विद्याहीनभी हो तथा जो बहुत पुत्रवान् है वह बडाविद्वान्भी हो इसजगह पंचमेशसे पुत्रका सुख और पञ्चमस्थग्रहसे विद्याका सुख कहना चाहिये इस तरह बहुतसे भाव हैं अभ्यासकरनेसे सबसंदेह निवृत्त होजावेंगे ।

प्रश्न मारकेश कौन कौन हैं ? ।

उत्तर–द्वितीयेश, सप्तमेश, अष्टमेश, द्वादशेश, षष्ठेश और दश-मेश ये ग्रह मारक होते हैं इनमें एकमारक निश्चित करना बहुत कठिन है ग्रन्थोंमें १२ राशियोंके अलग अलग मारकेश लिखे हैं उन्हें नीचे लिखता हूं ।

श्लो०–मन्दसौम्यसिताः पापाः शुभौ गुरुदिवाकरौ ।
न शुभं योगमात्रेण प्रभवेच्छनिजीवयोः ॥ १ ॥
परन्तु तेन जीवस्य पापत्वमपि सिध्यति ।
कविस्साक्षान्न हन्ता स्यान्मारकत्वेन लक्षितः ॥ २ ॥
मन्दादयो निहन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः ।
शुभाशुभफलान्येवं ज्ञातव्यानि क्रियाभुवः ॥ ३ ॥

अर्थ-जिसका मेषलग्नमें जन्म होता है उसको बुध, शनि और शुक्र अरिष्टदायक हैं गुरु और रवि शुभफलकारक हैं गुरु और शनिका समयोग शुभदायक नहीं है और शुक्र मारकेश होकरभी मेषलग्नवालेको नहीं मारेगा परंतु शनि वगैरह पापग्रह जातकको मारेंगे ॥ १-३ ॥

जीवशुक्रेन्दवः पापाः शुभौ शनिदिवाकरौ ।
राजयोगकरस्साक्षादेक एवांशुमत्सुतः ॥ ४ ॥
जीवादयो ग्रहाः पापाः घ्नन्ति मारकलक्षणाः ।
बुधैस्तत्तत्फलान्येवं ज्ञेयानि वृषजन्मनः ॥ ५ ॥

अर्थ-वृषलग्नवालेको गुरु, शुक्र, चन्द्र अशुभग्रह हैं शनि, रवि शुभग्रह हैं शनि इकेला राजयोगकारक है गुरु वगैरह अशुभग्रह इस लग्नवालेकी मृत्यु करेंगे ॥ ४ ॥ ५ ॥

श्लो०-भौमजीवारुणाः पापाः एक एव शुभः कविः ।
शनैश्चरेण जीवस्य योगे मेषभुवा यथा ॥ ६ ॥
कुजभान्विन्दवः पापाः एक एव शुभः कविः ।
राजयोगकरौ शुक्रसोमपुत्रौ शुभान्वितौ ॥ ७ ॥
शनिर्जीवसमायोगात्फलं मेषभुवो यथा ।
शनिस्साक्षान्न हन्ता स्यान्मारकत्वेन लक्षितः ॥ ८ ॥
भौमादयो निहन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः ।
शुभाशुभफलान्येवं ज्ञेयानि युगजन्मनः ॥ ९ ॥

अर्थ-मिथुनलग्नवालेको मंगल, गुरु अशुभ हैं शुक्र शुभ हैं शनि और गुरुका समायोग अशुभदायक है रवि और चन्द्रभी अशुभ हैं शुक्र और शुभग्रहयुक्त बुध दोनों राजयोगकारक हैं, मारकेश होकर भी शनैश्चर नहीं मारेगा मंगल वगैरह ग्रहोंकी दशामें मृत्यु होवेगी ॥ ६-९ ॥

श्लो०—शुक्रमन्दबुधाः पापा विदुर्धिषणभूसुतौ।
राजयोगकरस्साक्षादेक एव धरासुतः॥ १०॥
भवेतां राजयोगस्य कारकौ गुरुभूमिजौ।
रविस्साक्षान्न हन्ता स्यान्मारकत्वेन लक्षितः॥ ११॥
शुक्रादयो निहन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः।
कुलीरसम्भवस्यैवं फलान्यूह्यानि सूरिभिः॥ १२॥

अर्थ—कर्कलग्नवालेको शुक्र, शनि और बुध अशुभ हैं मंगल राजयोगदायक है और गुरु मंगलका समायोग अत्यन्त राजकारक है रवि मारकेश होकर भी कर्कलग्नवालेको नहीं मारेगा शुक्र वगैरह पापग्रह अपनी दशामें मारेंगे॥ १०—१२॥

श्लो०—मन्दसौम्यसिताः पापाः कुज एव शुभावहः।
प्रभवेद्योगमात्रेण न शुभं गुरुशुक्रयोः॥ १३॥
गुरुयुक्तो यदा भौमो विशेषफलदायकः।
बुधस्साक्षान्न हन्ता स्यान्मारकत्वेन लक्षितः॥ १४॥
घ्नन्ति सौम्यादयः पापा मारकत्वेन लक्षिताः।
एवं फलानि ज्ञेयानि सिंहजस्य मनीषिभिः॥ १५॥

अर्थ—सिंहलग्नवालेको शनि, शुक्र, बुध अशुभ हैं मंगल शुभ है। शुक्र, गुरुका समायोग फलदायक नहीं है परन्तु भौम और गुरुका समायोग फलदायक है बुध मारनेवाला है शनि मारकेश होकर भी नहीं मारेगा॥ १३—१५॥

श्लो०—जीवशुक्रेन्दवः पापा एको भृगुसुतश्शुभः।
राजयोगकरस्सौम्यो भृगुपुत्रसमन्वितः॥ १६॥
निहन्ति कविरन्यैर्युग्मारकाख्याः कुजादयः।
घ्नन्ति पापाः शुभान्यूह्यान्येवं कन्याभुवो बुधैः॥१७॥

अर्थ–कन्यालग्नवालेको शुक्र, चन्द्र, गुरु, मंगल अशुभ है बुध और शुक्रका समायोग राजयोग कारक है। सूर्य अकेला नहीं मारेगा, मंगल वगैरह उक्त पापग्रह मारेंगे ॥ १६ ॥ १७ ॥

श्लो०–जीवार्कमहिजाः पापाः शनैश्चरबुधौ शुभौ ।
राजयोगकरस्साक्षादेक एवांशुमत्सुतः ॥ १८ ॥
भवेतां राजयोगस्य कारका इन्दुतत्सुतौ ।
कुजः साक्षान्न हन्ता स्यान्मारकत्वेन लक्षितः ॥ १९ ॥
जीवादयो न हन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः ।
शुभाशुभफलान्येवं ज्ञातव्यानि तुलाभुवः ॥ २० ॥

अर्थ–तुलालग्नवालेको गुरु, रवि, मंगल अशुभ हैं, बुध, शनि शुभ है, शनि अकेला और चन्द्र बुध संयुक्त राजयोगकारक हैं, मंगल मारकेश होकरभी तुलालग्नवालेको नहीं मारेगा ॥१८–२०॥

श्लो०–बुधशुक्रार्कतनयाः पापास्सुरगुरुश्शुभः ।
सूर्याचन्द्रमसावेव भवेतां योगकारकौ ॥ २१ ॥
जीवो न हन्ता सौम्याद्या हन्तारो मारकाह्वयाः ।
तत्तत्फलानि विज्ञेयान्येवं वृश्चिकजन्मनः ॥ २२ ॥

अर्थ–वृश्चिकलग्नवालेको बुध, शुक्र, शनि, अशुभ हैं। गुरु शुभ है, रवि और चन्द्र राजयोगकारक हैं, गुरु मारकेश होकर भी नहीं मारेगा, बुध वगैरह मारेंगे ॥२१॥२२

श्लो०–एक एव कविः पापः शुभौ भौमदिवाकरौ ।
योगो भास्करसौम्याभ्यां स्यान्न हन्तांशुमत्सुतः ॥२३॥
घ्नन्ति शुक्रादयः पापाः हन्तृलक्षणलक्षिताः ।
ज्ञातव्यानि फलान्येवं चापजस्य मनीषिभिः ॥ २४ ॥

अर्थ–धनलग्नवालेको शुक्र अशुभ है रवि, मंगल शुभ हैं रवि और बुधका समायोग राजयोगकारक है शनि मारकेश होकर भी नहीं मारेगा शुक्र वगैरह अन्यग्रह मारेंगे ॥ २३ ॥ २४ ॥

श्लो०—कुजजीवेन्दवः पापाः शुभौ भार्गवचन्द्रजौ ।
राजयोगकरः साक्षादेक एव भृगोस्सुतः ॥ २५ ॥
चन्द्रात्मजेन संयुक्तो विशेषफलदायकः ।
स्वयञ्चैव न हन्ता स्यान्मन्दो भौमादयः परे ॥ २६ ॥
निहन्तारः पापिनस्ते मारकत्वेन लक्षिताः ।
ज्ञातव्यानि बुधैरेवं फलानि मृगजन्मनः ॥ २७ ॥

अर्थ–मकर लग्नवाले को मंगल गुरु और चन्द्र अशुभ हैं शुक्र बुध शुभ हैं शुक्र अकेला राजकारक है जो यह बुधयुक्त हो तो और भी उत्तम है शनि मारकेश होकर भी नहीं मारेगा मंगल वगैरह अन्य ग्रह मारेंगे ॥ २५--२७ ॥

श्लो०–कुजजीवेन्दवः पापा एको दैत्यगुरुश्शुभः ।
राजयोगकरो भौमः कविर्ह्येको बृहस्पतिः ॥ २८ ॥
न हन्ता घ्नन्ति भौमाद्या मारकत्वेन निश्चिताः ।
ज्ञातव्यानि बुधैरेवं फलानि घटजन्मनः ॥ २९ ॥

अर्थ–कुम्भ लग्नवालेको मंगल गुरु चन्द्र अशुभ हैं, शुक्र शुभ है, शुक्र और मंगलका समायोग राजयोगकारक है । गुरु मारकेश होकर भी नहीं मारेगा, मंगल वगैरह अन्य ग्रह मारेंगे ।

श्लो०–मन्दशुक्रांशुमत्सौम्याः पापा भौमविधू शुभौ ।
महीसुतगुरू योगकारिणौ नैव भूसुतः ॥ ३० ॥
मारका मारकाभिख्या मन्दाद्या घ्नंति पापिनः ।
इत्यूह्यानि बुधैस्सम्यक्फलानि झषजन्मनः ॥ ३१ ॥

अर्थ–मीन लग्नवालेको शनि, शुक्र, रवि और बुध अशुभ हैं मंगल और चन्द्र शुभ हैं, गुरु और मंगलका समायोग राजयोगकारक

है, मंगल मारकेश होकर भी नहीं मारेगा शनि वगैरह अन्य ग्रह मारेंगे ॥ ३० ॥ ३१ ॥

विंशोत्तरी दशामें जब उक्त मारकेश ग्रहोकी दशा आती है तब मनुष्यकी मृत्यु होती है, लघुपाराशरी देखनेसे इसका पूरा हाल मालूम हो जावेगा "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस बंबईकी छपी हुई लघुपाराशरी भाषाटीका मँगाकर देखियेगा ।

प्रश्न—दशम घरका स्वामी आपने मारकेश क्यों बताया दशम घर राज्यका है वह मारक नहीं होता इसमें कुछ युक्ति हो तो कहियेगा ?

उत्तर–कार्यका लय कारणमें होता है, दशम घर पिताका है और पिता इस शरीरका कारण है कार्यका कारणमें लय होना न्यायसे सिद्ध है अतएव दशमेशकी दशा मारकेश किसीतरह असंगत नहीं है, हमने कई बार परीक्षा की है दशमेशकीदशामें प्रायः मृत्यु होती है और बृहत्पाराशरीमें भी लिखा है कि दशम घरसे आयुका चिन्तन करना ।

प्रश्न--क्या कुण्डली देखकर यह कह सकता है कि ये स्त्रीकी है वा पुरुषकी ? ।

उत्तर--स्त्री पुरुषका ज्ञान तथा जीवित मृतककी कुण्डली बतानेके कई श्लोक हैं परन्तु वे सब खिलोनेकी भांति हैं ग्रहोंकी स्थितिपरसे जो फल निर्णीत है सो पक्कारंग है जो कभी नहीं उड़ता और ये जो नामाक्षरको द्विगुण करना अमुक अंककाभाग देना आदि फलकथनकी विधि है सो कच्चे रंगकी भांति शीघ्र उड़जानेवाली है, स्त्री पुरुष ज्ञानके कई श्लोक हैं जिनमें एक श्लोक ठीक मिलता है वह यह है— ' रविराहू लग्नभांकैरेकीकृत्वा युगोद्धृतम् " अर्थात् रवि जिस राशिपर है वह अंक और राहुका अंक तथा लग्नका अंक ये जन्म कुण्डलीके जोड़ना और तीनोंके योगमें ४ का भाग देना, एक या तीन बचे तो पुरुषकी कुंडली है शून्य

या दो बचेतो स्त्रीकी जन्मकुंडली है जो ऐसा करनेसे फल न मिले तो फिर गुरुकी राशिका अंक जो जन्म कुंडलीमें हो उसको भी इसीमें शामिलकर देना और चारका भाग देकर शेषसे फल कहना विषम बचे तो स्त्रीकी कुंडली कहना । जीवित मृतककी कुंडली बतानेके लिये यह श्लोक कहते हैं—

श्लो०—भानुराहुशशीअंकं प्रश्नलग्नं च संयुतम् ।
अष्टभिः स्वामिना गुण्यं लग्ननाथविभाजितम् ॥ १ ॥
" अंकेन जीवितं शेषे शून्यं मृत्युर्न संशयः " ।

अर्थात्—जन्मके सूर्यकी राशि, जन्मराहुकी राशि और जन्मके चन्द्रकी राशि और प्रश्न लग्नका अंक इन चारोंको इकट्ठे जोड़कर जन्मलग्नसे अष्ट मेश जो ग्रह हो उस ग्रहकी संख्यासे इसे गुणना और जन्मलग्नेशका भाग देना जो कोई अंक शेष बचे तो कुंडलीवाला जीवित है जो शून्य शेष बचे तो कुंडली मृतककी है परंतु ऐसे श्लोकोंका फल मिलता नहीं है विनोदार्थ लिखदिये हैं इसी तरह सभाचौर कहनेके कई श्लोक हैं जैसे--

इष्टो दशघ्नोऽर्कयुतः शरघ्नो बाणेन्दुयुक्तः शरपक्ष-भक्तः । लब्ध्यास्त्रिगुणितं दलितं च शेषं सभासु चौरं प्रवदन्ति संतः ॥ इष्टमंकं द्विगुणितं चैकेन च समन्वितम् । त्रिभिश्चैव हरेद्भागं शेषं च फलमादिशेत् । विषमे जीवचिन्ता स्यात् समे धातुः प्रकीर्तितः । शून्यं मूले विजानीयादाचार्य्यैः कथितं हि तत् ।

परंतु ये सत्य नहीं है इनके सत्य होनेकी कोई युक्ति है ।

प्रश्न—आजकलके जो ग्रन्थ ज्योतिषके प्रचलित हैं उनमें कौन कौनसे उत्तम हैं और वे कहां मिलते हैं ? ।

उत्तर-वर्त्तमानकालिक ज्योतिषके ये ग्रन्थ उत्तम हैं यथाबृहज्जातक, नीलकण्ठी, षट्पञ्चाशिका, भुवनदीपक, जातकाभरण, नरपतिजयचर्य्या, भावकुतूहल, होरारत्न, लघुपाराशरी, हायनरत्न, सर्वार्थचिन्तामणि, केशवीजातक, जातकसंग्रह, यवनजातक, जातकालंकार, मयूरचित्रक, श्याम संग्रह, संकेतनिधि, ज्ञानप्रदीप, आदि समस्तग्रंथ सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीके "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें छपे हुए हैं जो उक्तयन्त्रालयमें मिलते हैं, आजकल भारत वर्षमें "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसकी समानताका और दूसरा हिंदीका प्रेस नहीं है मैंने स्वयं उक्त प्रेस देखा है जहां अनेक उत्तमोत्तम संस्कृत तथा अँग्रेजीके विद्वान् मौजूद हैं जो सौ २ दो २ सौ रुपया मासिक वेतन सेठजीसे पाते हैं, सेठजी जैसे सत्पुरुषोंसे इस भारत वर्षका गौरव बनारहे हैं और सत्य तो यह है कि सेठजी इसदेशमें भारतेन्दु हैं हमें अभिलाषा है कि, इस देशके सम्पूर्ण महापुरुष उक्तप्रेसकी अवश्य गुणज्ञता करेंगे ।

उक्त ज्योतिषके ग्रंथोंमें केशवीजातकोक्त ग्रहोंका बल श्लाघनीय है, आयुष्यकी अवधि लघुपाराशरीमें अच्छी कही है, उसका फलमिलता है, ताजकमें नीलकण्ठीग्रंथका फलित सर्वोपरि है, जातकोंमें बृहाज्जतक पुराना होनेपरभी उसका फलित आजभी बिलकुल नवीन है. प्रश्नमें ज्ञानप्रदीप षट्पंचाशिका भुवनदीपक उत्तम हैं इनके अलावा मेरे पुस्तकालयमें केरलप्रश्नरत्न आदि मूलग्रंथ हस्तलिखित मौजूदहैं जो बहुत उत्तम हैं ।

इति श्रीपँवारवंशावंतसश्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते "ज्योतिषकल्पद्रुमग्रंथे" स्वानुभूतज्योतिषाख्यो द्वितीयो भागः समाप्तः ॥ : ॥

श्रीगणेशाय नमः

ज्योतिषकल्पद्रुम

तृतीय भाग

अर्थात्

सिद्धान्तप्रकरणम्

प्रश्न--पृथ्वीका आकार कैसा है और वह चर है अथवा स्थिर है सब प्रमाण कहियेगा ?।

उत्तर--पृथ्वीका आकार गोल है यह केवल अंग्रेजोंकाही सिद्धान्त नहीं है बरन् ब्रह्मसिद्धान्तमें भी भूगोलको कपित्थाकार लिखा है।

शंका--पृथ्वी गोल है तो हमको चपटी नजर क्यों आती है ?।

समाधान--खरबूजा देखनेमें गोल होता है परन्तु जो उसकी फांके अलग अलग कीजावें तो वे फांके देखनेमें सीधी दृष्टि पड़ेंगी और जब सब फाकोंको जोड़कर देखोगे तो खरबूजा नजर आवेगा इसी तरहसे पृथ्वी गोल है; परन्तु हम संपूर्ण भूगोलको नहीं देख सकते हैं, केवल खण्डमात्र उसका हमारे नजर आता है, अतएव वह चपटा दिखाई देता है, यदि पृथ्वीकी परिधिके सौ भाग करे तो विषुवत्‌रेखापर एक भागकी चौडाई २४८ मीलकी होती है और मनुष्यकी दृष्टि तो दो मील भी नहीं पहुँच सकती है और वह भाग तो २४८ मील तक सीधाही देख पड़ेगा फिर दूसरा भी ऐसाही दिखलाई देवेगा, पृथ्वी बहुत बड़ी है और मनुष्य बहुत छोटा है, इसी कारण गोल पृथ्वी समान देख पड़ती है सिद्धान्त शिरोमणिमें लिखा है कि—

समो यतः स्यात्परिधेः शतांशः पृथ्वी च पृथ्वी नितरां तनीयान् । नरश्च तत्पृष्ठगतस्य कृत्स्ना समेव तस्य प्रतिभात्यतः सा ॥

अर्थ-पृथ्वी बहुत बड़ी है और उसकी परिधिका शतांश चपटा नजर आता है और मनुष्य अपनी दृष्टिसे केवल शतांश भागही देख-सकता है इसलिये पृथ्वी चपटी दिखाई देती है इति ।

पृथ्वी गोल होनेमें बहुतसे प्रमाण हैं और अंग्रेजी भूगोलमें इसके बहु-तसे प्रमाण लिखे हुए हैं परन्तु यहां हमको केवल अपने पुराने महर्षियों-काही सिद्धान्त देखना है अतएव अंग्रेजी ग्रन्थोक्त विषय नहीं लिखागय है. ग्रहलाघवके चतुर्थ अधिकारमें लिखा है कि-" छादयत्यर्कमिन्दुर्व्विधुं भूमिभा " अर्थात् चन्द्र ग्रहणके समय पृथ्वीकी छाया चन्द्रमाको ढांक-नेवाली होती है इति । और यह प्रत्यक्ष है कि जब चन्द्रमाका ग्रहण होता है तब चन्द्रमा ग्रास सदा गोल दिखाई देता है इससे सिद्ध है कि पृथ्वी गोल है जैसा पदार्थ होता है वैसाही उसका प्रतिबिंब पड़ता है जब पृथ्वी गोल है तबही उसका प्रतिबिंब चन्द्रमापर गोल पड़ता है । संस्कृतमें पृथ्वीके नाम धरा, अचला, गौः इत्यादि हैं 'गच्छतीति गौः" अर्थात् जो चलती है सो गौः भूमि है इस शब्दसे पृथ्वीका चलना विदित हुआ, दूसरा नाम पृथ्वीका अचला है अचलाका अर्थ नहीं चल-नेका है इस शब्दके अर्थसे यह विदित हुआ कि, पृथ्वी स्थिर है यहां इन दोनों अर्थोंमें परस्पर विरोध आया इससे विदित होता है कि, पूर्व-कालमें बहुतसे लोग पृथ्वीको अचल मानते थे और बहुतसे चलायमान मानते थे इसीसे पृथ्वीका नाम गौ और अचला लिखा है परन्तु जब श्रीभास्कराचार्यने सिद्धान्तशिरोमणि ग्रंथ रचा तो यह सब संदेह निवृत्त होगये ।

आर्यभट्टीये-अनुलोमगतिर्नौस्थः पश्यत्यजलं विलोमगं यद्वत् । अचलानि भान्ति तद्वत् सप-श्चिमगानि लङ्कायामिति ॥

अर्थ--जैसे नौकामें बैठा हुआ मनुष्य किनारेकी स्थिर वस्तुओंको दूसरी ओरसे चलते हुए देखता है ऐसेही मनुष्योंको सूर्यादि नक्षत्र जो स्थिर हैं पश्चिमकी ओरको चलते हुए दीखते हैं और पृथ्वी स्थिर प्रतीत होती है परन्तु वास्तवमें भूमि ही चलती है।

आर्यभट्टः–भपञ्जरः स्थिरो भूरेवावृत्यावृत्य प्रतिदैवसिकौ उदयास्तमयौ सम्पादयति ग्रहनक्षत्राणामिति।

अर्थ--सूर्यादि सब नक्षत्र स्थिर हैं पृथ्वी ही बार बार अपनी धुरीपर घूमकर प्रति दिवस इनके उदय और अस्तका सम्पादन करती है।

ततोऽपराशाभिमुखं भपञ्जरे सखेचरे शीघ्रतरे भ्रमत्यपि। तदल्पगत्येन्द्रदिशं नभश्चराश्चरन्ति नीचोच्चतरात्मवर्त्मसु।

अर्थ--यद्यपि सब तारागण अपने अपने ग्रहोंके साथ शीघ्र गतिसे पूर्वसे पश्चिमको घूमते दिखलाई देते हैं; परन्तु वस्तुतः सब ग्रह अल्पगतिसे अपनी २ कक्षामें पश्चिमसे पूर्वको चलते हैं।

भपञ्जरः खेचरचक्रयुक्तो भ्रमत्यजस्रं प्रवहानिलेन। यान्तो भचक्रे लघुपूर्ववगत्या खेटास्तु तस्यापरशीघ्रगत्या।

अर्थ--प्रवहशक्ति Force of iucritia के कारण सब तारागण सहित ग्रहोंके सदा घूमते रहते हैं ये सब लघुगतिसे पूर्वकी ओरको घूमते हैं परन्तु शीघ्रगतिसे पश्चिमको जाते हुए दिख-

लाई देते हैं इस विलोमगति (अर्थात् ग्रहोंके पश्चिमकी ओर जाते हुए दीखने) का कारण भूमिका अपनी धूरीपर घूमना है जैसे रेलगाड़ीमें बैठा हुआ मनुष्य सडकके किनारेको उल्टी ओरको दौडते हुए देखता है ।

अथ यदेनं प्रातरुदेतीति मन्यन्ते रात्रेरेव तदन्त-मित्वा अथात्मानं विपर्यस्यते अहरेवास्तात् कुरुते रात्रिं परस्तात् । स वा एष न कदाचन निम्रो-चति ॥ नह वै कदाचन निम्रोचति । ऐतरेयब्राह्मण ।

अर्थ- सूर्य न कभी छिपता है और न निकलता है जब वह रात्रिके अन्तको प्राप्त होकर बदलता है अर्थात् भूमिके घूमनेके कारण पश्चिमसे फिर पूर्वमें दिखलाई देता है और पृथ्वीके इस भागमें दिन और दूसरे भागमें रात्रि करता है तब लोग सूर्यका उदय मानते हैं इसी प्रकार जब दिनके अन्तको प्राप्त होकर सूर्य पश्चिममें दिखलाई देता है और भूमिके इस भागमें रात्रि और दूसरे भागमें दिन करता है तब लोग सूर्यका अस्त मानते हैं वास्तवमें न वह कभी छिपता है न निकलता है ।

इस विषयमें बहुधा मनुष्य कई प्रकारकी शंका किया करते हैं जैसे—

प्रश्न--यदि पृथ्वी चलती है तो हिलती क्यों नहीं ?

उत्तर--न हिलनेका तो कारण स्पष्ट है देखो-गाड़ी जब ऊंची नीची जगहमें चलेगी तो साफ सड़ककी अपेक्षा अधिक हिलेगी और सड़ककी अपेक्षा पानीपर नौकामें कम हालने लगती है और विमानमें जो हवामें चलता है नौकासे भी बहुत कम हाल लगती है तो ऐसी जगहमें चलनेसे कि जहां हवा भी नहीं है पृथ्वी कैसी हिल सकती है ? ।

प्रश्न--अच्छा, यदि पृथ्वी चलती है तो सब नगर ग्राम जहांके तहां क्यों बने रहते हैं हट क्यों नहीं जाते ?।

उत्तर--वाह अच्छी शंका की, चलने फिरनेको तो हम तुम भी चलते फिरते हैं तो क्यों हमारी तुम्हारी आंख नाक जो मुखपर है पीठपर आजाती है, यदि भूमिका कुछ भाग चलता और कुछ न चलता तो अवश्य नगर और ग्राम हटजाते परन्तु यह भूगोल तो सब चलता है फिर नगर और ग्राम वहीं बने रहेंगे कि जहां वे स्थित हैं। जैसे यदि एक गेंदपर कुछ बिन्दु बनादियेजायँ और वह गेंद घुमादीजाय तो वे बिन्दु वहीं बनेरहेंगे जहां हमने बनाये थे।

प्रश्न--यह तो मैं समझा, परन्तु पृथ्वी चलती हुई प्रतीत क्यों नहीं होती ?

उत्तर--' कुलालचक्रभ्रमिवामगत्या यान्तो न कीटा इव भान्ति यान्तः" (सिद्धांन्तशिरोमणि)

अर्थ- जैसे कुम्हारके घूमते हुए चाक (चक्र) पर बैठे हुए कीड़े उसकी गतिको नहीं जान सकते ऐसेही मनुष्योंको पृथ्वी चलती हुई नहीं प्रतीत होती।

प्रश्न--जो कबूतर सबेरेको उड़ते हैं दोहपरको आते हैं तो व घर पर न आना चाहिये क्योंकि वे आकाशमें उड़ेंगे इतने पृथ्वी बहुत दूर चली जावेगी और पक्षियोंको बसेरेके समय उन्होंका घर नहीं मिलेगा।

उत्तर-पृथ्वी अपने ऊपरके जल और ४९ मील वायुमण्डलको लपेटे हुए घूमती है इससे कबूतरादि जो वायुके भीतर हैं और समुद्र जो कि वायुके भीतर है इनकी अस्तव्यस्तताकी शंका व्यर्थ है पृथ्वीके आकर्षण शक्तिके इलाकेसे कोई बाहर नहीं जा सकता कोई भी पक्षी ऐसा नहीं कि जो सीधा आकाशको उड़जावे जो पृथ्वीमें आकर्षणशक्ति न हो

तो जो चीजें अपने ऊपर उछालते हैं वे नीचे क्यों आपड़ती हैं ऊपरही चली जावें इसलिये सिद्धान्तशिरोमणिमें लिखा है--

आकृष्टशक्तिश्च मही तया यत् स्वस्थं गुरु स्वाभिमुखं स्वशक्त्या । आकृष्यते तत्पततीव भाति समे समन्तात् क्व पतत्वियं खे ।

अर्थ--पृथ्वीमें आकर्षणशक्ति है इसलिये आकाशस्थ गुरु पदार्थोंको वह अपनी ओर खैंचती रहती है ऊपर फेंकनेसे जो पदार्थ नीचे गिरता है वह खुद बखुद नहीं पड़ता जो आकाश और पृथ्वी समान होते याने पृथ्वीमें आकर्षणशक्ति न होती तो वह पदार्थ पृथ्वीपर क्यों पड़ता । सिद्धान्तशिरोमणिमें और भी लिखा है--

यो यत्र तिष्ठत्यवनीं तलस्थामात्मानमस्या उपरि स्थितं च। स मन्यतेऽतः कुचतुर्थसंस्थां मिथश्च ते तिर्यगिवामनन्ति ॥ अधः शिरस्त्वं कुदलान्तरस्था छाया मनुष्या इव नीरनीरे । अनाकुलास्तिर्यगधः स्थिताश्च तिष्ठन्ति ते तत्र वयं यथाऽत्र ।

अर्थ--संसारमें जो जहां रहता है सो तहां पृथ्वीको अपने नीचे देखता है आप ऊपर है ऐसाही मानता है इस हेतुसे पृथ्वीके चौथे भागपर रहनेवाले आपसमें ये तिरछे हैं ऐसे मानते हैं आधेपर रहनेवाले आपसमें ये नीचे शिर ऊपर पांव हैं जैसे पानीमेंके छाया मनुष्य सरीखे मानते हैं परन्तु जो जहां रहता है सो तहां है हम यहां जैसे हैं वेभी वहाँ ऐसेही रहते हैं।

यजुर्वेदके अध्याय ३ मंत्र ६ में भी यही लिखा है कि, यह भूगोल सूर्यके चारोंओर घूमता है । "आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः" ।

अर्थ--(अयम्) यह (गौः) पृथ्वीलोक (मातरम्) जलको (असत्) प्राप्त होकर अर्थात् जलके सहित (पृश्निः) अन्तरिक्षमें (आक्रमीत्) आक्रमण करता है अर्थात् अपनी धुरीपर घूमता है (च) और (पितरम्) सूर्यके भी (पुरःप्रयन्) चारों ओर घूमता है।

इसी तरह ऋग्वेदके अष्टक ८ अध्याय २ वर्ग १० मन्त्र १ में लिखा है (या गौः वर्त्तनिं पर्य्येति विवस्वते।)

अर्थ--(या गौः) यह पृथ्वी (वर्त्तनिम्) अपनी कक्षामें (विवस्वते) सूर्यके (पर्येति) चारों ओर घूमती है।

सिद्धान्तशिरोमणिमें पृथ्वीकी लम्बाई चौड़ाई इस तरह लिखी है।

प्रोक्तो योजनसंख्यया तु परिधिः सप्ताङ्गनन्दाब्धयः।
तद्व्यासः कुभुजङ्गसायकभुवोऽथ प्रोच्यते योजनैः।

अर्थ--पृथ्वीकी परिधि ४९६७ योजन अर्थात् ५ मीलका योजन माने तो २४८३९ मील और व्यास १५८१ योजन--७९०१ मील होता है परन्तु ५ मीलका १ योजन माने तो योरपवासियों और यहांके ज्योतिषशास्त्रमें समता आ जाती है।

अब देखिये कि जो बातें आपने अंग्रेजी भूगोलमें पढी हैं वे ही बातें अपने पुराने शास्त्रोंमें महर्षियोंने लिखी हैं कि, जिनको आज लक्षावधि वर्ष व्यतीत होगये हैं।

प्रश्न--श्रीमद्भागवतमें लिखा है कि--"अण्डमध्यगतः सूर्योद्यावाभूम्योर्यदंतरम्। सूर्याण्डगोलयोर्मध्ये कोट्यःस्युः पञ्चविंशतिः" श्रीमद्भागवत स्कन्ध ५ अध्याय २० श्लोक ४३ अर्थात् सम्पूर्ण पृथ्वी ५० कोटि

योजन है और आपके कथनानुसार ४९६७ योजन परिधि होती है भागवतमें और ज्योतिषमें इतना विरोध क्यों है ?।

उत्तर-श्रीमद्भागवतमें जो योजन संख्या लिखी है यह पृथ्वीका विस्तार नहीं है बल्कि सूर्य और पृथ्वीके बीचके अवकाशका विस्तार कहा है। सिद्धांतशिरोमणिमें लिखा है कि--

कोटिघ्नैर्नखनन्दषट्कनखभूभूभृद्भुजङ्गेन्दुभिर्ज्योतिः शास्त्रविदो वदन्ति नभसः कक्षामिमां योजनैः। तद्ब्रह्माण्डकटाहसम्पुटतटे केचिज्जगुर्वेष्टनं केचित्प्रोचुरदृश्यदृश्यकगिरिं पौराणिकाः सूरयः।

अर्थ--१८७१२०६९२००००००० योजनको ज्योतिःशास्त्रके जाननेवाले सारी सृष्टिका एक छोटा भाग मानते हैं बहुतसे इसको पृथ्वीकी परिधिका मान समझते हैं और पौराणिक विद्वान् इसको केवल एक लोकालोक नामक पर्वतकी उँचाई बतलाते हैं। देखिये ईश्वरकृत ब्रह्माण्डके सामने ५० कोटि योजन कोई चीज नहीं है अंग्रेज लोगोंने जो २४८५६ मीलकी परिधि और ७९१२ मीलका व्यास लिखा है सो इस मनुष्यलोकका विस्तार वर्णन किया है सम्पूर्ण ब्रह्माण्डका यह क्षेत्रफल नहीं है इस ब्रह्माण्डमें ऐसे अनेक लोक हैं अंग्रेजमहाशय यह बात खुद स्वीकार करते हैं कि, यह पृथ्वी बहुत छोटा ग्रह है इससे बड़े कई ग्रह आकाशमें हैं जिनमें मनुष्य बसते हैं और उनमें सब प्रकारकी सृष्टि रचना मौजूद हैं अपने शास्त्रोंमे ईश्वरको अनन्त कोटि ब्रह्माण्डाधीश लिखा है सो बहुत सत्य है ये जो आकाशमें तारागण दिखाई देते हैं ये सब लोक हैं जो इस पृथ्वीसे किसी भांति कम नहीं हैं

पुराने शास्त्रोंमें और यूरोपनिवासियोंके सिद्धान्तमें विशेष अन्तर नहीं है नक्षत्रका नाम संस्कृतमें वसु है मनुष्यके वसनेसे इनका नाम वसु पड़ा है और यही वे लोक हैं जो पुराणोंमें चन्द्रलोक सूर्य्यलोक इत्यादिक नामोंसे कथन किये गये हैं।

प्रश्न--पृथ्वी किसके आधारसे है ?

उत्तर--पृथ्वी निराधारही भगवानने सृजी है सिद्धान्तशिरोमणिमें भी नान्याधार ही लिखी है.

शंका--पुराणोंमें तो लिखा है कि, पृथ्वी शेषके आधारसे धरी है और आप यहां निराधार बतलाते हो इतने विरोधका क्या कारण है ?

समाधान--शेषका अर्थ सर्प भ्रमसे लेलिया गया है वास्तविक शेषका अर्थ बाकी है जो जन्म मरण और उत्पत्ति प्रलयसे शेष याने पृथक् रहता है अर्थात् परमेश्वर उसीके आधारपर यह सृष्टि स्थित है सिद्धान्तशिरोमणिमें लिखा है कि—

मूर्तो धर्ता चेद्धरित्र्यास्तदन्यस्तस्याप्यन्योऽस्यैवमत्रानवस्था। अन्ते कल्प्या चेत् स्वशक्तिः किमाद्ये किं नो भूमिरिति।

अर्थ--पृथ्वी बोझल है आकाशमें नहीं रह सकती इस वास्ते उसको धरनेवाला दूसरा होना इस हेतुसे शेषको कल्पना करना सो वह भी बोझल ऊपर पृथ्वी ऐसे दोनों भी नहीं रह सकते सो इनको तीसरा उनको चौथा ऐसा अंत नहीं लगनेका इस लिये अंतवाला अपनीही शक्तिसे खड़ा है ऐसी कल्पना करनीही पड़ेगी इससे पहिले पृथ्वीमें ही शक्ति है ऐसे क्यों नहीं कहना जिससे अनवस्थाप्रसंग दूर हो।

ग्रहोंका नक्शा

	चं.	व्यासमील	अक्षके आस-पास फिरनेका काल	सूर्यसे दूरी मील	सूर्यके आस-पास एक प्रद-क्षिणा होनेका काल	क्रांतिवृत्तसे दूसरे ग्रहों-की कक्षा-का झुकाव
सूर्य		८,८२०००	२५ दिन ८ घं.			
बुध		३,१४०	२४ घं. ५ मि.	३,७००००००	८८ दिन	७° ०
शुक्र		७,८००	२३ घं. २१ मि.	६,८००००००	२२५ दिन	३° २३
पृथ्वी	१	७,९२६	२४ घं. ० दि.	९,५००००००	३६५¼ दि.	
मंगल		४,१००	२४ घं. ३७ मि.	१४,२००००००	६८७ दिन	१° ५१
फ्लोरा		अनिश्चित	अनिश्चित	२०,९००००००	१,१९३ दिन	५° ५३
वेस्टा		२,५०१	तथा	२२,४००००००	१,३२५ दिन	७° ८
एरिम्		अनिश्चित	तथा	२२,६००००००	१,३४१ दिन	५° २८
मेटीस		तथा	तथा	२२,६००००००	१,३४५ दिन	५° ३४
हिबी		अनिश्चित	अनिश्चित	२३,००००००००	१,३७९ दिन	१४° ४७
आस्ट्रि.		तथा	तथा	२४,५००००००	१,५११ दिन	५° १९
जूनो		७९१	तथा	२५,४००००००	१,५९४ दिन	१४° ४०
सीरीस		५६३१	तथा	२६,३०००००००	१,६८२ दिन	१०° ३७
पालेस		अनिश्चित	तथा	२६,३००००००	१,६८६ दिन	३४° ३७
बृहस्प.	४	८७०००	९ घं. ५६ मि.	४९,००००००००	४.३३३ दिन	१° १८
शनि	८	७९१६०	१० घं. २९ मि.	९०,००००००००	१०,७५९ दिन	२° २९
थुरेनस्	६	३४५००	९ घं. ३० मि.	१,८०००००००००	३०,६८७ दिन	०° ४६
नेप्च्यू.	२	४१५००	अनिश्चित	२,८५,००००००००	६०,१२७ दिन	१° ४६
चन्द्र		२१८०	२७ दिन ८ घं.	२,४००००	२७½ दिन	५° ९

याम्योदक्पुरयोः पलान्तरहतं भूवेष्टनं भांशहृत्।
तद्भक्तस्य पुरान्तराध्वन इह ज्ञेयं समं योजनम्॥
(सिद्धान्तशिरोमणि)

अर्थ -विषुवत्‌रेखासे जो नगर दक्षिणमें हों और उत्तरमें हों उन नगरोंके अक्षांशों (Latitude का अन्तर करना और उस अन्तरसे भूमिकी परिधिके योजन गुणना और गुणनफलमें ३६० का भाग देना जो लब्धि आवे उतने ही योजनोंका अन्तर उन दोनों नगरोंके मध्यमें है अन्तर अक्षांशका उन नगरोंका करना जो विषुवत् रेखासे एक दक्षिणमें है और दूसरा उत्तरमें है पृथ्वीके भ्रमण विषयमें और भी सिद्धांन्त शिरोमणिमें लिखा है–

मध्ये समन्ताद्दण्डस्य भूगोलो व्योम्नि तिष्ठति।
बिभ्राणः परमां शक्तिं ब्रह्मणो धारणात्मिकाम्॥
(सूर्य्यसिद्धान्त)

भपञ्जरस्य भ्रमणावलोकादाधारशून्या कुरिति प्रतीतिः।

अर्थ -भपंजर याने नक्षत्रचक्र यह पृथ्वीको वेष्टन करके फिरतासरीखा दीखता है इससे पृथ्वी निराधार मालूम होती है क्योंकि आधार होता तो चक्र अटकजाता और फिर नहीं सकता।

अक्षांश जाननेकी रीति

यन्त्रवेधविधिना ध्रुवोन्नतिर्या नतिश्च भवतोक्षलम्बकौ।

अर्थ--तुरीय यंत्रसे ध्रुवको वेधना सो ध्रुवके उन्नतांश जितने आवें उतने अक्षांश जानना।

अथ देशांश जाननेकी विधि

यल्लङ्कोज्जयिनीपुरोपरिकुरुक्षेत्रादिदेशान्स्पृशत् । सूत्रं मेरुगनं बुधैर्निगदितं सा मध्यरेखा भुवः ।

अर्थ–विषुवत्‌रेखा वह मध्यरेखा है जो लंका उज्जैन कुरुक्षेत्र आदि स्थानोंको स्पर्श करती हुई पृथ्वीके मध्यमें होकर गई है और लंकासे सुमेरुपर्वततक इस रेखाकी सीमा है इस रेखाके पूर्व पश्चिम देशके अन्तर देशांश कहे जाते हैं । सिद्धान्तशिरोमणिमें लिखा है कि–

प्राग्भूविभागे गणितोत्थकालादनन्तरं प्रग्रहणं विधोः स्यात् । आदौ हि पश्चाद्विवरे तयोर्या भवन्ति देशान्तरनाडिकास्ताः ॥ तद्धं स्फुटं षष्टिहृतं कुवृत्तं भवन्ति देशान्तरयोजनानि ।

अर्थ–ग्रहणादि गणित विषुवत् रेखापर बसनेवाले स्थानोंका कहा गया है जो स्थान इस रेखासे पूर्वमें है वहां गणित कालके पीछे चन्द्रग्रहण होवेगा और पश्चिमस्थानोंमें गणित कालसे पहले ग्रहण होवेगा सो दोनोंके बीच जितनी घड़ी आवेगी उतनी देशान्तर घड़ी हैं उन घडीसे स्पष्ट परिधि गुणना और ६० का भाग देना तो देशान्तर योजन आते हैं ।

परिधि जाननेका प्रकार

लम्बज्यागुणितो भवेत्कुपरिधिः स्पष्टस्त्रिभज्याहृतः ।

अर्थ–लंबांश जीवासे मध्यपरिधि गुणके त्रिज्यासे भाग लेना तो स्पष्ट परिधि आवेगी परन्तु यह रीति चन्द्रग्रहणके समय देशांतर जाननेकी है परन्तु आजकलके अंग्रेजी नकशोंमें अक्षांश सब स्पष्ट लिखे रहते हैं जिनके समझनेमें कुछ भी झगड़ा नहीं है ।

पृथ्वीके स्थिर माननेवाले यदि विचारेगें तो मालूम होगा कि, पृथ्वीके स्थिर माननेमें कितनी कठिनाई नजर आती है क्योंकि संपूर्ण नक्षत्र-चक्रके फिरनेमें बड़ा गुरुत्व है और एकही ग्रह पश्चिम और पूर्व दोनों ओर फिरे यह असंभव है अब पृथ्वीका फिरना माननेसे बहुत लाघव होता है सो सुनियेगा। सूर्य्य पृथ्वीसे साढे चार करोड़ कोसकी दूरीपर है औ उसका कक्षा व्यास नौ करोड कोस है इसके त्रिगुणसे भी कुछ ऊपर अधिक मिलानेसे निकट कक्षा तीस करोड़ कोसकी आई इतनी कक्षा ६० घडीमें फिरता है तो एक घडीमें पचासलाख कोस फिरना पडेगा यह केवल सूर्य्यका हिसाब है इसके सिवाय मंगल वगैरह और भी ग्रह हैं इनके फिरनेमें बहुत विस्तार बढेगा एक नक्षत्रको एक घडीमें ३११८६७८२००००००० इतने योजन फिरना पडेगा तब कहीं उन्होंकी परिक्रमा पूरी होगी इस लिये इस रीतिमें बडाही गुरुत्व है और पृथ्वीके फिरनेमें बहुत ही लाघव है. क्योंकि पृथ्वीकी परिधि कुल १२४२८ कोसकी है यह ६० घड़ीके फिरनेमें घडी एकमें २०८ कोस फिरना पड़ेगा ये भी विषुवत् रेखापरके मध्यका हिसाब है दोनों बगलोंमें परिधिकी न्यूनता है क्योंकि किसी गोल चीजकी जो चौडाई मध्यमें होती है वह शिरोंपर नहीं होती जो यह शंका कीजाय कि, पृथ्वी सूर्य्य-केही आसपास क्यों फिरती है ? उसका समाधान यह है कि, भगवान्ने सब पदार्थोंमें आकर्षणशक्ति रक्खी है बडा पदार्थ छोटेको अपनी ओर खेंचता है छोटा बडेको नहीं खेंच सकता क्योंकि छोटेमें आकर्षणशक्ति कम होती है जैसे तराजूमें एक ओर सेरका पत्थर रखा जावे और दूसरी ओर दशसेरका पत्थर रखजावे तो सेरके पत्थरको दशसेरका पत्थर अपनी ओर खींचलेगा इसी तरह सब ग्रहोंमें सूर्य्य बडा है अतएव सबको अपनी ओर खींचता है।

प्रश्न–जो सूर्य्य सबको अपनी ओर खींचता है तो वे लोक सूर्य्यपर क्यों नहीं गिर पड़ते ? ।

उत्तर–ईश्वरने पृथ्वीमें विक्षेप शक्ति भी दी है जैसे गेंदको आकाशमें उछालनेसे वह पीछी पृथ्वीपर गिरती है इसका नाम आकर्षण शक्ति है और धरतीसे जो गेंद आकाशको जाती है इसका नाम विक्षेप शक्ति है सूर्य्यके आकर्षणसे पृथ्वी अपनी कक्षाको छोड़कर बाहर नहीं जा सकती और विक्षेपशक्तिसे सूर्य्यपर पड भी नहीं सकती । प्रत्युत पृथ्वी सूर्य्यके आसपासही फिरती रहती है इस लिये सबसे बडा जो सूर्य्य है उसीके आसपास पृथ्वी सब ग्रह और फिरते हैं और संपूर्ण विषयोंमें लाघव मुख्य है । वैयाकरण महाभाष्यके कर्त्ताने महाभाष्यमें लिखा है कि:-

" लघ्वर्थं उपदिश्यते " अर्थात् लघु बातका उपदेश करता हूं इसीलिये पृथ्वीका फिरना मानना ठीक है ।

प्रश्न–ओ आपने कहा कि पृथ्वीकी छाया पड़नेसे चन्द्रग्रहण होता है इसमें यह शंका है कि,पृथ्वीकी छायासे जो चन्द्र ग्रहण होता हो तो वह ग्रहण पृथ्वीनिवासियोंको नहीं दीखना चाहिये बल्कि अन्यलोकवालोंको दीखना चाहिये ।

उत्तर–पृथ्वी और सूर्यके बीचमें चन्द्रमा है और चन्द्रमा सूर्यके प्रकाशसे चमकता है और पृथ्वीके चारों ओर चन्द्रमा घूमता है इस लिये जब घूमता हुआ चन्द्रमा पृथ्वी और सूर्यके बीचमें आता है तब सूर्यको ढांकता है और सूर्यग्रहण होता है और जब चन्द्रमा पृथ्वीके इस ओर

और सूर्य उस ओर होता है तब पृथ्वी सूर्य चन्द्रमाके बीचमें आकर सूर्यके प्रकाशको चन्द्रमापर अपनी छायासे नहीं जाने देती बस जितने चन्द्रभागपर पृथ्वी सूर्यके प्रकाशको जानेसे रोकती है उतना भाग ग्रस्त जान पडता है और यह दशा पृथ्वीनिवासियोंको भले प्रकार दीख सकती है क्या आप अपने मकानकी छाया अपने मकानमेंसे नहीं देख सकते हैं ? ।

प्रश्न-नत क्या है और उन्नत क्या है ?

उत्तर-सूर्यादि सब ग्रह अपने अपने मार्गमें चलते हुए अपनी चारों तरफकी क्षितिजसे जितने ऊंचे होवें उसे उन्नत और अपने शिरसे जितने झुके होवे उसे नत कहते हैं । जैसे सूर्य अपनी पूर्वक्षितिजसे उदय होकर ३० अंश ऊपर चढा है इन ३० अंशोंका नाम ऊन्नत है फिर ३० अंशोंको ९० अंशोंमें घटा देनेसे शेष ६० अंश रहे इन अंशोंको नतांश कहते हैं क्योंकि अपने खमध्यसे अंश झुका है इसी तरह नतांश ६० मालूम होवे तो उन्नतांश मालूम हो जाते हैं । जैसे नतांश ४५ अंश हैं अंशको ९० में घटानेसे शेष ४५ उन्नतांश होवेंगे क्योंकि नतांश और उन्नतांशका योग ९० होता है फारसीमें नतको बअद अजसिमतुरास, उन्नतको इरतफ अंग्रेजीमें जेनिथ डिस्टेन्स, एट ए लेटि त्यूट, बोलते हैं (Zenith distance at a latitude)

विषुवत्‌रेखाका वर्णन

जिस रेखापर सूर्यके आनेसे दिन रात बराबर हो उस रेखाका नाम विषुवत् रेखा है यह भूगोलके मध्यसे निकली है फारसीमें इस रेखाका नाम खतेइस्तवा है और अंग्रेजीमें Eguatar ईक्वेटर बोलते हैं । श्रीभास्कराचार्य्यने विषवत् रेखापर चार और याम्योत्तर पर दो इस तरह छः स्थान गणितके वास्ते माने हैं उनके नाम ये हैं-लंका, यम कोटि, रोमकस्थान, सिद्धपुर इतने विषुवत् रेखापर और उत्तर तथा दक्षिण ध्रुव ये

दोनों दक्षिणोत्तर वृत्तपर निर्द्धारित किये गये हैं। इन छः स्थानोंमें परस्पर नब्बे नब्बे अंशोंका अन्तर है और इन दिनोंमें सिद्धपुर अमेरिकाको कहना चाहिये।

विमण्डलवृत्तका वर्णन

जिस वृत्तमें चन्द्रमा चलता है उसका नाम विमण्डल वृत्त है सूर्यको छोड़कर और सब ग्रहोंके दो दो वृत्त होते हैं एक कक्षा वृत्त दूसरा विमण्डल वृत्तको फारसीमें मदार कमरी और अंग्रेजीमें Orbit of moon ओरबिट ऑफ मून कहते हैं।

उन्मण्डलका वर्णन

लंकाके क्षितिज वृत्तका नाम उन्मण्डल है सब धरतीपर छोटे बड़े दिन होनेका कारण वही वृत्त है उन्मण्डलको फारसीमें उफुक खते इस्तवा और अंग्रेजीमें Hrizon of equatar होराइजन ऑफ इक्वेटर बोलते हैं।

याम्योत्तर वृत्तका वर्णन

एक वृत्त अपने शिरपर होता हुआ दक्षिणोत्तर ध्रुवमें प्रवेश करता है उसका नाम याम्योत्तर वृत्त है और प्रति दिवस जब सूर्य उसपर आते हैं तो दिनमान रात्रिमानके दो दो भाग बराबर हो जाते हैं इस वृत्तको फारसीमें दायरे शमालवजनूब कहते हैं और अंग्रेजीमें Redian रेडिअन बोलते हैं।

क्रांतिवृत्तका वर्णन

क्रांतिवृत्त वह महावृत्त है जिसमें सूर्यपर यथार्थमें पृथ्वी अपनी वार्षिकपरिक्रमा पूरी करती है उसके बारह विभाग हैं जिनमेंसे प्रत्येकको राशि कहते हैं। उनके नाम ये हैं—उत्तरी राशि—मेष, वृषभ, मिथुन,

कर्क, सिंह और कन्या और दक्षिणी राशि–तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, और मीन इनमेंसे ५ राशि हररातको दिखाई देती हैं और छटी-राशि सूर्यके प्रकाशसे छिप जाती हैं बाकी ६ राशि पृथ्वीकी आडमें हो जाती है क्रांतिवृत्त बिषुवद्रेखाको सम्पातके दो बिन्दुओंमें वक्रकोणसे काटता है और वे रेखा जो विषुवत् रेखाके दोनों ओर क्रांतिवृत्तकी सीमा है अयनवृत्त कहलाती है हरएक ग्रहकी कक्षामें दो स्थान रहते हैं–एक उच्च स्थान दूसरा नीच स्थान। जब ग्रह अपने उच्च स्थानमें जाता है तो उसका बिम्ब छोटा दृष्टि आता है और गति कम हो जाती है, जब नीच स्थानपर जाता है तो बिम्ब बडा और गति बढ जाती है, इसी प्रकार जब सूर्य अपनी क्रांतिवृत्तमें फिरते हुए उच्चस्थानपर जाते हैं तब सब पृथ्वीवालोंसे बहुत दूर रहते हैं हजारों कोसका अथवा मीलका अन्तर पड़ जाता है। जब नीचस्थानमें जाते हैं तब सब पृथ्वीवालोंसे समीप रहते हैं उच्चस्थानसे ७ राशि नीचका होता है।

प्रश्न–इसी लिये फलित ज्योतिषमें नीच ग्रहका फल अशुभ बतलाया गया है। क्या नीचग्रह भी किसी स्थानपर शुभ फल देता है?

उत्तर–हां कुण्डलीमें इन स्थानोंपर शुभ फलभी देता है।

लाभे धने भ्रातृकसौख्यधर्मे नीचग्रहाश्चेत् स्थित-राजयोगः। लग्ने व्यये छिद्रगते हि तुङ्गे नृपालये जातवेदरिद्री ॥ द्वित्रिसंस्था ग्रहा नीचा धर्म-खाये नृपो भवेत्। उच्चे षष्ठे भवेद्दासो निधनांत्ये च भिक्षुकः ॥

अर्थ–ग्यारहवें, दूसरे, तीसरे चौथे, नवें, दशवें इनमें नीचग्रह पडे तो राजयोगकारक होता है और लग्नमें, छठे, आठवें, बारहवें इनमें उच्च का ग्रह पडे तो भी दरिद्र योग कारक होता है।

प्रश्न–उदय अस्त और मध्याह्न इन कालोंमें सूर्य पृथ्वीसे किस समयमें दूर रहते हैं ?

उत्तर–सूर्य पृथ्वीसे उदयके समयमें और अस्तके समयमें पृथ्वीके व्यासार्द्ध तुल्य दूर रहते हैं और मध्याह्नके समयमें समीप रहते हैं।

भूपृष्ठकी स्वाभाविक रचना

भूपृष्ठका संपूर्ण क्षेत्रफल १९७०००००० वर्गमील है जिसमेंसे थल ५१५००००० वर्गमील अर्थात् संपूर्ण पृष्ठकी चौथाईसे कुछ अधिक है और जल १४५५००००० वर्गमील अर्थात् संपूर्णकी प्रायः तीन चौथाईके बराबर है।

पृथ्वीसे चन्द्रमा सब ग्रहोंमें अत्यन्त समीप है इसी लिये पृथ्वीके पदार्थोंपर चन्द्रमाका प्रभाव अत्यन्त पडता है, यहां तक कि समुद्रकी लहरोंका घटना बढ़ना चन्द्रमाहीके वृद्धि ह्रासपर निर्भर है और फलित में भी चन्द्रमाका प्रभाव अत्यन्त बतलाया है।

इन्दुः सर्वत्र बीजाभो लग्नस्तु कुसुमप्रभम्। फलेन सदृशोंऽशश्च भावः स्वादु समः स्मृतः॥ (भु० दी०)

अर्थ–कार्य है सो वृक्षस्वरूप है उस कार्यरूपी वृक्षका बीज चन्द्रमा है उस वृक्षका फल लग्न है और फल लग्नका नवांश है और इस फलका स्वाद द्वादश भाव है।

सूर्यके समीप रहनेवाले ग्रह बुध शुक्र हैं जब बुध सूर्यसे २८।० अंशके फासलेपर रहता है तबतक देखनेमें आता है और इससे अधिक समीप होनेपर देखनेमें नहीं आता शुक्र सूर्यसे ४८ अंशके फासले तक दिखलाई देता है इससे समीप होनेपर देखनेमें नहीं आता और सूर्यके उदयअस्तके पहले और पश्चात् ३॥ घंटेसे अधिक कालतक यह दिखलाई नहीं देता जब यह सूर्यके पश्चिम हो तब सूर्यके उदयके पहले और जब सूर्यके पूर्वमें हो तब सूर्यके अनन्तर देख पड़ता है संपूर्ण ग्रहोंमें सूर्य बहुत बड़ा है इसलिये उसके पास जो ग्रह होता है उसकी गतिको सूर्य्य शीघ्र कर देता है क्योंकि सूर्य्यका आकर्षण उस ग्रहपर समीप होनेसे ज्यादे पड़ता है यह बात पञ्चांग देखनेसे स्पष्ट मालूम हो जावेगी कि जो ग्रह सूर्य्ययुक्त व अस्तगत होता है उसकी गति मामूली गतिसे बहुत अधिक हो जाती है। इसी तरह बृहस्पतिके साथ होनेसे भी ग्रहकी कुछ गति बढ जाती है क्योंकि सूर्यके उपरांत फिर शेष ग्रहोंमें बृहस्पति हो बड़ा है नेपच्यून वगैरह और जो अंग्रेजी ग्रह हैं ये पृथ्वीसे बहुत दूर हैं और इनकी इतनी मन्दगति है कि, मनुष्यकी संपूर्ण अवस्थामें भी इनकी एक परिक्रमा पूरी नहीं होती है इसी लिये फलितमें ये ग्रह नहीं लिये गये हैं।

प्रश्न—इस सृष्टिको उत्पन्न हुए कितने वर्ष हुए ?

उत्तर—आर्योंके सिद्धान्तानुसार सं० १९६१ चैत्रसुदी १ प्रतिपदा शुक्रवारको १९७२९४९००४ एक अरब सत्तानबे करोड़ उन्तीस लाख, उनचास हजार, चार वर्ष होते हैं ये गणित सूर्यसिद्धांत आदि पुरातनग्रंथोक्त लिखा गया है हिन्दुओंमें सब छोटे बड़े इस संकल्पको भली भाँति जानते हैं जो हरएक कार्य्यके प्रारंभमें पढा जाता है "वैवस्वत

मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमें युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे आर्यावर्त्तान्तर्गते' अर्थात् आर्यावर्त देशमें यह सातवां वैवस्वत मन्वन्तर है जिसका यह अट्ठाईसवां कलियुग और कलियुगमें भी प्रथमचरण अर्थात् पहिला चतुर्थांश व्यतीत हो रहा है और एक मन्वन्तर ३०६७२०००० वर्षोंका होता है ऐसे ६ मन्वन्तर बीत चुके हैं अतएव इस अवधिको छः गुणा करनेसे १८४०३२०००० वर्ष होते हैं और प्रत्येक मन्वन्तर के अन्तमें एक सतयुगके प्रमाण संधिके वर्ष शामिल किये जाते हैं और १४ मन्वन्तरोंमें १५ संधि होती है इस लिये ६ मन्वन्तरोंके खतम होने-पर ७ संधियां शामिल करना चाहिये अतएव ७ संधियोंके वर्ष १२०९६००० गत हुए इनको ६ गत मन्वन्तरोंके वर्षोंमें जोड़नेसे १८५२४-१६०९० वर्ष हुऐ अब २७ चतुर्युगी व्यतीत हो चुकी है इनके वर्ष ११६६४०००० उपरोक्त अंकमें जोडनेसे १९६९०५६००० वर्ष होते हैं और २८ वीं चतुर्युगीमें ३ युग बीतकर ४ था कलियुग विद्य-मान है इस लिये गत ३ युगोंके वर्ष ३८८८००० उक्त अंकमें मिलानेसे १९७२९४४००० वर्ष हुये और कलियुगके प्रारम्भसे शालिवाहन शके तक ३१७९ वर्ष व्यतीत हुए हैं और शालिवाहनके गत वर्ष १८२५ हुए हैं इन १८२५ को ३१७९ में जोडनेसे कलियुगके गत वर्ष ५००४ होते हैं इन कलियुगके गत वर्षको १९७२४४००० में शामिल किया तो १९७२९४९००४ वर्ष हुए बस इतने ही वर्ष सृष्टिको उत्पन्न हुए हुए हैं।

शंका—आपने यह कैसे जाना कि वर्त्तमान कलियुगके शालिवाहन शाकेतक इतने वर्ष गये हैं? क्योंकि उसका जिकर संकल्पमें नहीं है।

समाधान–सिद्धान्तशिरोमणिमें लिखा है कि—

याताः षण्मनवो युगानि भमितान्यन्यद्युगांघ्रित्रयम् ।
नन्दाद्रीन्दुगुणास्तथा शकनृपस्यान्ते कलेर्वत्सरः ॥

अर्थ–छःमन्वन्तर बीतचुके और सातवां वर्त्त रहा है उसकी भी सत्ताईसवीं चतुर्युगी बीतिचुकी तथा अट्ठाईसवीं चतुर्युगी वर्त्तमान है उसके भी तीन युग बीत गये और चौथा अब कलियुग है उसके भी शाका शालिवाहनके आरंभतक ३१७९ वर्ष हो गए हैं इति । इसीके अनुसार हमने कलियुगके गत वर्ष जोड़े हैं ।

प्रश्न–अंग्रेज लोग तो सृष्टिको उत्पन्न हुए कुल पांचहजारही वर्ष बताते हैं इसका क्या कारण है ? ।

उत्तर–अंग्रेजोंमें सबका यह सिद्धान्त नहीं है जो लोग नूहके तूफानके बाद सृष्टिका आरम्भ मानते हैं वे ऐसा समझते होंगे प्रोफेसर निक्सली-साहिब बहादुर प्रसिद्ध ज्योलोजिस्टने अत्यन्त अनुसंधानके उपरान्त यह निश्चय किया है कि, जबसे दुनियामें वनस्पति ऊगना आरम्भ हुई है उससे आजतक १००००००००० एक अरब वर्ष व्यतीत हुए होंगे (देखो किताब Worldlife वर्ल्डलाइफ पृष्ठ १८०) प्रोफेसर रीड साहिब कहते हैं ५००००००००० पचास करोड़ वर्ष हुए होंगे तबसे योरोपमें बनस्पति ऊगना आरम्भ हुआ है, ऐतिहासिक आनरे बल इन-फिंसटन साहिब बहादुर भूतपूर्व गवरनर बंबई कहते हैं कि, जो समय ब्रह्माका एक दिन नियत किया गया है यह ज्योतिष विद्याके नियमपर स्थित हुआ है वे लिखते हैं कि, नोडिज और इम्पायजरकी कामिल गर्दिश जो हिन्दुओंके ज्योतिषानुसार चार अरब बत्तीस करोड़ वर्षमें पूरी होती

है एक दिन ब्रह्माका है नोडिज सूर्यके उस स्थानको कहते हैं कि, जहां किसी ग्रहकी गतिकी परिधिका कटाव होता है अर्थात् रास जनब, इभ्या-इजर सितारेके उन दो स्थानोंको कहते हैं कि, जो आदि कालमें अत्यन्त निकट और महादूर समझे आते थे और अब सूर्यके अतिनिकट और अतिदूर समझे जाते हैं याने शीर्षतले और पदतले (तारीख हिन्दुस्तान पृष्ठ २५६ बाब तीसरा सन् १८६६ ई० छपा हुआ अलीगढमें देखिये) चीनी सम्वत् जो चीनके प्रथम बादशाहसे चला है इसवक्त ९६००-२४०४ नौकरोड़ साठ लाख दो हजार चारसौ चार है और खताई सम्वत् वर्त्तमान ८८८४०२७७ है तथा पारसी सम्वत् इसवक्त १८९-८७० एक लाख नवासी हजार आठसौ सत्तर है जब मनुष्यके चलाये सम्वतोंकोही करोंड़ों वर्ष हो गये फिर सृष्टिकी उत्पत्तिकी क्या बात पूछते हैं जरा गौर करके समझियेगा और पुरातन आर्योंके सिद्धान्तपर आस्था रखियेगा जो अविचल सत्य है ।

प्रश्न—आपने जो सृष्टिको उत्पन्न हुए इतने वर्ष बतलाये इसका क्या सुबूत है ?

उत्तर—शास्त्रीय प्रमाण ऊपर लिखे गये हैं परतु आप तो जेन्टलमेन हैं ऐसी बातोंको क्यों मानने लगे प्रत्यक्ष प्रमाण इन वर्षोंका यही है कि इन वर्षोंका अहर्गण बनाकर सिद्धान्तानुसारग्रह बनाइयेगा संपूर्ण स्पष्ट ग्रह तिथि वार नक्षत्रादि सहित सब निकल आवेंगे । श्रीकृष्णका जन्म सन् १९६१ चैत्र सुदी १ से ५१२९ वरस पूर्व भादों वदी ८ बुधवा रको हुआ है उस दिनका गणित कीजियेगा बराबर रोहिणी नक्षत्र और संपूर्ण जन्मग्रह श्रीकृष्णचन्द्रके निकल आवेंगे फिर और प्रमाण आपको क्या चाहिये । हिन्दू देवताओंकी ईश्वरता आप उन्हींको ग्रहोंसेहि

विचार कर सकते हैं जो ज्योतिषमतानुसार स्पष्ट किये गये हैं संपूर्ण ग्रह उच्चके किसीके नहीं होते हजरत ईसा मसीह व अन्य पैगम्बरोंकी कुण्डलियोंके साथ श्रीरामकृष्णके जन्मग्रहींका मुकाबला कीजिये तब उन्हींका तारतम्य आपको मालूम होगा ? ।

प्रश्न-क्या प्रमाण है कि, रामकृष्णके वस्तुतः ग्रह यही हैं जो आजकाल प्रचलित है ? ।

उत्तर-आप गणित करके देख लीजिये और इतना तो विनागणितके मालूम हो सकता है कि, श्रीरामका जन्म चैत्र सुदी ९ मध्याह्नमें हुआ है उस दिन सदा कर्कका चन्द्र होता है और मध्या ह्नको कर्क लग्न आतीही है सूर्य्य मेषके आही जाते हैं और शुक्र मीनके प्रायः रहते ही हैं तो अब कर्कस्थ चन्द्र मूर्तिवर्त्ती और उच्चका सूर्य दशम तथा उच्चका शुक्र भाग्यघरमें हुआ या नहीं ज्योतिषमतानुसार ये क्या कम योग हैं इसीतरह श्रीकृष्णका जन्म भादों वदी ८ को निशीथ समय पर हुआ है। अब देखिये भादोंमें सदा सूर्य सिंहके रहते हैं भादों वदी ८ को चन्द्रमा सदा वृषराशिस्थ होता है और आधी रातको उनदिनोंमें प्रायः वृषलग्न आती ही है शुक्र प्रायः तुलाके होते ही हैं। अब ऊंचका चन्द्रमा लग्नवर्ती, स्वक्षेत्री सूर्य्य चौथे घरमें आदि क्या अल्प स्वल्प योग हैं उतने ग्रह तो सदा भादों और चैत्रमें आते ही हैं, रहे गुरु शनि मंगल सो आप गणित कर लीजिये !

प्रश्न-आर्य्यसमाजके संस्थापक स्वामी दयानन्दसरस्वतीने भाष्यभूमिकादि ग्रंथोंमें जो सृष्टिके उत्पत्तिके वर्ष लिखे हैं उनमें और आपके वर्षोंमें १२०९६२०० एक करोड़ वीस लाख छानवे हजार दो सौ वर्षोंका अन्तर है इसका क्या कारण है ?

उत्तर—स्वामीजी गणितकरनेमें भूल गये हैं उन्होंने प्रत्येक मन्वन्तरके आद्यन्तमें जो कृतयुत प्राण संधिके वर्ष आते हैं वह शामिल नहीं किये हैं यही उन्हीं की भूल है और वही गलत संवत् आर्यसमाजमें अभीतक चल रहा है इस विषयमें सबकी आँखें बन्द हैं दयानन्दतिमिरभास्करके कर्त्ताने भी इस भूलको नहीं पकड़ा है ।

यदि सज्जनोंने वर्त्तमान ग्रंथको पसंद किया है तो फिर और भी उत्तमोत्तम ग्रंथ प्रकाशित किये जावेंगे—यहां तक फलित ज्योतिष जो मेरा परीक्षित है लिखा गया, अब मैं अपनी लेखनीको विश्राम देता हूँ ।

वैक्रमभूषड्गोऽब्जेऽब्दे रविवारे सुठालियाग्रामे ।
ज्येष्ठे शुक्ले षष्ठ्यां ज्योतिः कल्पद्रुमो वरीवर्ति ॥ १ ॥

अर्थ—संवत् १९६१ विक्रमी ज्येष्ठ सुदी ६ रविवारको यह ज्योतिषकल्पद्रुम नामक ग्रंथ पूर्ण हुआ ॥ १ ॥ इति ।

इति श्रीपवाँरकुलकमलमार्त्तण्डश्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते ज्योतिषकल्पद्रुमग्रंथे स्वानुभूतज्योतिषवर्गे

सिद्धांतप्रकरणं समाप्तम्

पुस्तक मिलनेका ठिकाना -

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण--बम्बई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
बम्बई.